पाठ २

वर्णविभाग (Orthography)।

वर्णविभाग (Orthography) में अक्षरों के आकार, उच्चारण और उनसे नियमानुसार शब्द बनाने का वर्णन है।

वर्ण या अक्षर (Letter) उस छोटी से छोटी आवाज़ को कहते हैं जिसके टुकड़े न हो सकें। जैसे अ, इ, क, इत्यादि।

लिखने की भाषा में अक्षर उन सङ्केतों को कहते हैं जो बुद्धिमानों ने उपर्युक्त वर्णों के लिए नियत कर लिये हैं।

वर्णों के समुदाय को वर्णमाला (Alphabet) कहते हैं। हिन्दी-भाषा की वर्णमाला में ४६ मुख्य अक्षर हैं। इन के दो भेद हैं। स्वर (Vowel) और व्यञ्जन (Consonants)। स्वर (Vowel) वह अक्षर है जिसका उच्चारण विना अन्य अक्षर की सहायता के हो सके जैसे अ, आ, इ, ऊ। व्यञ्जन (Consonants) उन अक्षरों का नाम है जो विना स्वरों की सहायता के नहीं बोले जा सकते, जैसे क्, ख् ग् इत्यादि।

स्वर १३ हैं।

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः, ऋ *।

इनके † दो भेद हैं।

(१) ह्रस्व (Short) जिनके उच्चारण में सबसे कम काल लगता है। ये चार हैं अ, इ, उ, ऋ।

---

* हिन्दी भाषा में 'ऋ' वर्ण केवल ऋषि, ऋतु, ऋण आदि संस्कृत शब्दों में आता है। अन्य स्थलों पर इसका प्रयोग नहीं होता।

† संस्कृत-व्याकरण के आचार्यों ने तीन भेद किये हैं। तीसरा भेद प्लुत है जिसका प्रयोग हिन्दी-भाषा में नहीं मिलता; इसलिए वह छोड़ दिया गया।

(२) दीर्घ (Long) जिनके उच्चारण में ह्रस्वों की अपेक्षा दुगना समय लगे। ये सात हैं आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

अं (अनुस्वार) और अः (विसर्ग) ह्रस्व और दीर्घ के पश्चात् बोले जाते हैं, ये अकेले प्रयोग में नहीं आते। जैसे—कं कां गः गाः।

स्वर जब व्यञ्जनों से मिलते हैं तब उनका रूप पलट जाता है। इनको हिन्दी में मात्रा कहते हैं।

प्रत्येक स्वर के नीचे उसकी मात्र लिखी जाती है।

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः ऋ

ा ि ी ु ू े ै ो ौ ं ः ृ

'अ' की कोई मात्रा नहीं है। जिस व्यञ्जन में कोई मात्रा न हो उसमें 'अ' की मात्रा समझनी चाहिए जैसे क, ख। जब व्यञ्जनों को बिना स्वर के दिखलाना हो तो उसके नीचे ् का चिह्न लगा देते हैं जैसे क् ज् इत्यादि।

'इ' की मात्रा व्यञ्जन के पहले लगाते हैं जैसे कि

आ, ई, ओ, औ, अः की मात्राएं ,, पीछे ,, ,, का, की, को, कौ, कः

उ, ऊ, ऋ ,, ,, ,, नीचे ,, ,, कु, कू, कृ।

ए, ऐ, अं ,, ,, ,, ऊपर ,, ,, के, कै, कं

* मुख्य व्यञ्जन ३३ हैं।

---

* इनके अतिरिक्त तीन और व्यञ्जन वर्णमाला में गिने जाते हैं क्ष, त्र, ज्ञ परन्तु क्ष, क् और ष् से; त्र, त् और र् से; ज्ञ, ज और ञ् से मिल कर बनता है। ज्ञ का उच्चारण कोई गकार के साथ और कोई जकार के साथ करते हैं परन्तु जकार अधिक शुद्ध है।

हिन्दी-व्याकरण ।

(वर्त्तमान अङ्गरेज़ी-व्याकरण के ढँग पर)

जिसे

बाबू गङ्गाप्रसाद बी. ए. एस. सी.

थर्ड मास्टर ज़िला स्कूल बिजनौर

ने बनाया ।

Indian Press Series

HINDI-VYAKARANA

OR

HINDI GRAMMATICAL PRIMER

(On the lines of Modern English Grammars)

BY

GANGA PRASAD, B.A., S.C.

3rd Master, District School, Bijnor

Allahabad

THE INDIAN PRESS

1911

क ख ग घ ङ	इनको कवर्ग कहते हैं	यह सब मिल कर स्पर्श कहलाते हैं।
च छ ज झ ञ	,, चवर्ग ,,	
ट ठ ड ढ ण	,, टवर्ग ,,	
त थ द ध न	,, तवर्ग ,,	
प फ ब भ म	,, पवर्ग ,,	

य र ल व अन्तस्थ (Semi-vowels) कहलाते हैं।

श ष स ह ऊष्म (Sibilants) कहलाते हैं।

जब दो या अधिक व्यञ्जनों के बीच में कोई स्वर न हो और उनको साथ लिखना हो तो उन्हें जोड़ देते हैं इस मेल को संयोग कहते हैं जैसे क्य, त्य, क्र, क्त्य, च्छ, स्थ्य इत्यादि।

स्थान । मुख के जिस भाग से जो अक्षर बोला जाता है उसे उस अक्षर का स्थान कहते हैं। प्रत्येक अक्षर के स्थान नीचे लिखे जाते हैं।

स्थान		अक्षर	
कण्ठ	से	अ आ क ख ग घ ङ ह विसर्ग	बोले जाते हैं
तालु	,,	इ ई च छ ज झ ञ य श	,,
मूर्द्धा	,,	ऋ ट ठ ड ढ ण र ष	,,
दन्त	,,	त थ द ध न ल स	,,
ओष्ठ	,,	उ ऊ प फ ब भ म	,,
कण्ठ और तालु	,,	ए ऐ	,,
कण्ठ ,, ओष्ठ	,,	ओ औ	,,
दन्त ,, ओष्ठ	,,	व्	,,
नासिका	,,	ङ ञ ण न म	,,
नासिका	,,	अनुस्वार	,,

प्रश्न

१ वर्ण किसे कहते हैं ? २ वर्णमाला किसे कहते हैं ? ३ हिन्दीभाषा की वर्णमाला में कितने अक्षर हैं ? ४ स्वर किनको कहते हैं ? ५ व्यञ्जन किनको कहते हैं ? ६ दीर्घ स्वर कौन कौन से हैं ? ७ इ, ऊ, ए, औ, ॠ, आ इनमें कौन दीर्घ और कौन ह्रस्व हैं ? ८ मात्रा किसे कहते हैं ? ९ ओ, ई, इ, ॠ की मात्रायें लिखो ? १० ज, ट, न, ल, फ, न, स में सब स्वरों की मात्राएँ जोड़ कर दिखाओ ? ११ ऊष्म कौन कौन से हैं ? १२ कवर्ग और पवर्ग के कौन कौन से अक्षर हैं ? १३ स्थान किसे कहते हैं ? १४ नीचे लिखे अक्षरों के स्थान बताओ। अ स श ल फ ट ङ र च य क ज व म त औ ऊ ह घ न ध ढ। १५ नीचे लिखे अक्षरों को संयुक्त करो थ् य, त् र, र् क, श् ल् य, स् थ् य, ढ् ध् म् प, य् ल् व, ।

पाठ ३

शब्दविभाग (Etymology)

शब्दविभाग व्याकरण के उस भाग का नाम है जिसमें शब्दों के भेद, रूप, उनके बनाने की विधि तथा उनके प्रयोग में लाने के नियमों का वर्णन हो।

एक वन में सहस्रों वृक्ष होते हैं जिनका गिनना या याद रखना बड़ा ही कठिन काम है परन्तु यदि उनकी कोटियाँ बना ली जायँ और प्रत्येक कोटि में कुछ वृक्ष रख लिये जायँ तो उनका स्मरण सहज हो जाता है जैसे सौ वृक्ष आम के, दो सौ गूलर के, पाँच सौ नीम के, पचास पीपल के। इसी प्रकार भाषा शब्दों का वन है। इसमें हज़ारों शब्द हैं। अगर इन शब्दों को हम याद रखना या गिनना चाहें तो हमको चाहिए कि वृक्षों के समान इन शब्दों की भी कोटियाँ बना लें।

This little book is intended to be used in our Vernacular and Anglo-Vernacular Schools. It differs, however, in several respects from the text-books on the subject at present in use.

My object in writing this book has been to deal with the subject, as far as possible, from the English point of view and to establish a sort of relation between English and Hindi Grammar. The writers of existing Grammars have one and all treated the subject from the Sanskrit point of view and have introduced so many Sanskrit elements that it has been almost impossible for the student to understand it thoroughly. Besides Sanskrit terms named after suffixes, &c., not used in Hindi language (*i.e.*, târatamya तारतम्य) sound not only awkward, but at the same time meaningless to an intelligent reader. The styles of writers of English and Hindi Grammars have, moreover, been so different that neither of these can afford any help to the student in the study of the other.

In the present work I have attempted to bring harmony between English and Hindi Grammar, so that the students of Anglo-Vernacular Schools, where a great stress is laid on English, may learn Hindi Grammar, too, on the same lines and the students who have passed the V. F. Examination may find it easy to learn English Grammar. English equivalents are given in brackets after each Hindi term.

इस तरह शब्द आठ* कोटियों में विभाजित हो सकते हैं अर्थात् शब्द आठ प्रकार के हैं।

संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, क्रिया, क्रियाविशेषण, सम्बन्धवाचक अव्यय, समुच्चयबोधक अव्यय, विस्मयादिबोधक अव्यय।

(१) संज्ञा शब्द (Nouns)

पुस्तक, फूल, लड़का, गोविन्द, सुख, चाँदी।

ऊपर लिखे शब्द किन्हीं वस्तुओं के नाम हैं। जिस वस्तु को हम पढ़ते हैं उसका नाम हमने पुस्तक रख लिया है। जिसको सूँघते हैं उसे फूल कहते हैं। इसी प्रकार लड़का, चाँदी आदि को समझना चाहिए। इस प्रकार के शब्दों को संज्ञा (Nouns) कहते हैं।

संज्ञा (Nouns) किसी वस्तु, स्थान, या भाव मनुष्य के नाम को कहते हैं। जैसे थाली, दिल्ली, कृष्ण, दुःख।

प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में जो संज्ञा शब्द हों उनको बताओ। राम घर को जाता है। लड़के खेलते हैं। घोड़े दौड़ते हैं। आम गिरता है। गोविन्द कुर्सी पर बैठा। पुस्तक लाओ। सूरज निकला। सोने की अँगूठी लाओ। वह ज्वर में पड़ा है। पाठशाला जाओ और गुरुजी को प्रणाम करो। दो मनुष्यों में युद्ध हुआ।

---

* संस्कृत भाषा में शब्दों के केवल तीन ही भेद हैं—संज्ञा, क्रिया, अव्यय। संज्ञा में विशेषण, सर्वनाम भी आ जाते हैं और अव्यय में क्रिया-विशेषण, सम्बन्ध-वाचक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक अव्यय, आ जाते हैं परन्तु अङ्गरेज़ी-पाठशालाओं के विद्यार्थियों को समझाने के लिए हिन्दी-भाषा के शब्दों के आठ भेद करने अधिक उपयोगी होंगे।

The special feature of the book is the inductive method of teaching followed all through. Examples are given first and rules are deduced from them. The whole subject has been treated strictly logically, and a great care is taken to choose examples from familiar objects.

Parsing and Analysis of which no traces are found in any old Grammar have been introduced here, and it is hoped that they will prove beneficial in fully mastering the language.

Questions have invariably been given in the end of each chapter to render it easy for the teacher to test the knowledge of his pupils; and in order to present the bird's-eye view of the whole subject a chart is given in the end of the book.

I shall be much obliged to those who will kindly communicate to me any suggestions or corrections that they may think necessary for the improvement of the work.

I am, in the end, much indebted to Pandit Ishwari Datt Shastri, Sanskrit teacher of this School, for his useful suggestions.

PANGA PRASAD.

PREFACE TO THE SECOND EDITION.

This time the book has undergone a thorough revision. Besides many alterations which seemed necessary to make the subject more intelligible and at some places more logical, a short chapter on prosody has also been appended to it in the end. A few definitions have been reworded and a care has been taken to make the matter up-to-date as far as possible.

GANGA PRASAD.

(२) विशेषण (Adjectives)

काला घोड़ा, अच्छा लड़का, बुरी किताब, चमकीला खिलौना। जब हम कहते हैं कि 'वह काला घोड़ा है' तो 'काला' शब्द से हम घोड़े के एक गुण को बताते हैं। इसी प्रकार 'अच्छा' लड़के के और 'बुरी' किताब के 'चमकीला' खिलौने के गुणों को बताता है। ऐसे शब्द **विशेषण** (Adjectives) कहलाते हैं।

विशेषण (Adjectives) उनको कहते हैं जो किसी संज्ञा शब्द या सर्वनाम के साथ मिल कर उन शब्दों के वाच्य वस्तुओं के गुणों को प्रकाशित करते हैं जैसे काला घोड़ा।

प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में विशेषण बताओ।

१ मोहन के पास एक बड़ा चाकू है। २ हरी घास पर मत चलो। ३ लाल स्याही से लिखो। ४ गंगा बड़ी नदी है। ५ वह बुरा लड़का है। ६ मैं चमकीला शीशा लूँगा। ७ मीठी नारङ्गी ला दो। ८ ठण्डा पानी कहाँ है। ९ वह गरम रोटी खाता है। १० दो छोटी बिल्लियाँ चार बड़े बड़े चूहों को पकड़ ले गईं।

(३) सर्वनाम (Pronouns)

राम घर में है उस को बुलाओ। मोहन अपनी पुस्तक पढ़ रहा है। कृष्ण ने अपने लड़के को मारा।

उपर्युक्त वाक्यों में शब्द 'उस' राम के लिए, शब्द 'अपनी' मोहन के लिए, शब्द 'अपने' कृष्ण के लिए आया है। यदि हम कहें कि 'राम घर में है राम को बुलाओ', 'मोहन मोहन की पुस्तक पढ़ रहा है', 'कृष्ण ने कृष्ण के लड़के को मारा', तो बहुत अशुद्ध मालूम होगा। इसलिए राम, मोहन, और कृष्ण को केवल एक बार कह कर

हिन्दी-व्याकरण

पाठ १

अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करने की दो ही विधि हैं, एक बोलना और दूसरी लिखना । जब हमको प्यास लगती है तब हम मुख द्वारा दूसरों से कहते हैं कि हमको प्यास लगी है, पानी दे दो यह है बोलना । जब हम घर से बाहर किसी शहर में हों और घर की ख़बर न मिली हो तब पत्र द्वारा घर से कुशल मँगाते हैं यह है लिखना । बोल कर या लिख कर विचार प्रकट करने को भाषा या बोली कहते हैं ।

भाषा शब्दों से मिल कर बनती है ।

शब्द दो प्रकार के होते हैं एक निरर्थक (Inarticulate) जैसे कुत्ते का भोंकना, घोड़े का हिनहिनाना । दूसरे सार्थक (Articulate) जैसे राम, घोड़ा आदि । सार्थक शब्दों का व्यवहार मनुष्य ही कर सकता है, पशु, पक्षी नहीं; इसलिए व्याकरण में केवल सार्थक शब्दों का वर्णन होता है ।

शब्द अक्षरों से मिल कर बनते हैं ।

दो या अधिक शब्दों को यदि इस प्रकार जोड़ दिया जाय कि पूरा पूरा आशय समझ में आ जाय तो इसको वाक्य (Sentence) कहते हैं ।

पश्चात् उनके स्थान पर उस, अपने, आदि शब्द रख देते हैं इन शब्दों को व्याकरण में सर्वनाम (Pronouns) कहते हैं।

सर्वनाम (Pronouns) वह शब्द हैं जो संज्ञा शब्दों के स्थान पर आते हैं।

प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनाम बताओ:—

राम कल घर को गया वहां जाकर उसने अपनी माता से कहा कि मुझे भूख लगी है, भोजन दे दो। उसने कहा कि हे बेटा, तुम्हारे पिता जी बाज़ार से नारङ्गी लाते होंगे, उनको खाकर अपनी भूख शांत कर लेना।

---

(४) क्रिया (Verb)

श्याम खाना खाता है। सीता अयोध्या में आई। तुम कहाँ जाते हो, ऊपर लिखे वाक्यों में 'खाता' है' 'आई' 'जाते हो' शब्दों से किसी काम का होना या करना पाया जाता है। ऐसे शब्दों को क्रिया (Verb) कहते हैं।

क्रिया (Verb) वह है जिससे किसी काम का होना या करना ज्ञात हो।

प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाएं बताओ:—

मैं कल घर को जाऊँगा। लड़कियां खेलती हैं। कुत्ता थाली को चाटता है। वृक्ष वायु में हिलते हैं। इनको मत मारो। राम ने लङ्का पर चढ़ाई की। ताल में कमल खिल रहा है।

व्याकरण उस विद्या का नाम है जिससे किसी भाषा का ठीक ठीक लिखना पढ़ना आजाय।

हिन्दी-व्याकरण से हिन्दी भाषा का ठीक ठीक बोलना और लिखना आता है।

हिन्दी-व्याकरण के चार विभाग हो सकते हैं। एक वर्णविभाग (Orthography) जिसमें अक्षरों के आकार और उच्चारण आदि का वर्णन है। दूसरा शब्दविभाग (Etymology) जिसमें शब्दों (words) के भेद, रूप आदि का वर्णन है।

तीसरा वाक्यविभाग (Syntax) जिसमें वाक्यों के बनाने का विधान है।

चौथा काव्यविभाग (Prosody) जिसमें दोहा, चौपाई आदि के बनाने की रीतियों का वर्णन है।

इस पुस्तक में विशेष कर केवल वर्णविभाग, शब्दविभाग और वाक्यविभाग का वर्णन होगा। साधारण विद्यार्थियों के लिए काव्यविभाग की आवश्यकता नहीं है। परन्तु इसका भी अन्त में थोड़ा सा विधान कर दिया गया है।

प्रश्न

१ भाषा किसे कहते हैं ? २ शब्द कै प्रकार के होते हैं ? ३ व्याकरण में किस प्रकार के शब्दों पर विचार होता है ? ४ वाक्य किसे कहते हैं ? ५ व्याकरण किसे कहते हैं ? ६ हिन्दी-व्याकरण के कितने विभाग हैं और उनमें किस किस का वर्णन है ?

(५) क्रियाविशेषण (Adverbs)

लड़का शीघ्र दौड़ता है। घोड़ा शनैः शनैः चलता है। राम झट भूमि पर गिर पड़ा। ऊपर के व्याक्यों में 'शीघ्र' दौड़ने का प्रकार 'शनैः शनैः' चलने का प्रकार और 'झट' गिरने का काल बताता है। ऐसे शब्दों को क्रियाविशेषण (Adverbs) कहते हैं।

क्रियाविशेषण (Adverbs) वह शब्द हैं जिनसे क्रिया में किसी प्रकार की विशेषता पाई जाय।

प्रश्न

नीचे के वाक्यो में क्रियाविशेषण बताओ:—

लड़का अच्छा पढ़ता है। वह खराब लिखता है। तुम वहां क्यों गये थे? हम सहज सहज बातें करते हैं! ज्यों ज्यों तुम बड़े होगे त्यों त्यों तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट होगी। कभी कभी यहां भी आया करो। परस्पर मित्रता से रहना चाहिए।

(६) सम्बन्धवाचक अव्यय (Postpositions)

पुस्तक मेज़ के नीचे पड़ी है उसके बिना मैं काम नहीं कर सकता। यहाँ 'नीचे' शब्द से पुस्तक के मेज़ के साथ सम्बन्ध और 'बिना' शब्द से 'उसके' का अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध ज्ञात होता है। ऐसे शब्द सम्बन्धवाचक अव्यय (Postpositions) कहाते हैं।

सम्बन्धवाचक अव्यय (Preposition) वह है जो किसी संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों से सम्बन्ध बताता है।

पाठ २

वर्णविभाग (Orthography) ।

वर्णविभाग (Orthography) में अक्षरों के आकार, उच्चारण और उनसे नियमानुसार शब्द बनाने का वर्णन है।

वर्ण या अक्षर (Letter) उस छोटी से छोटी आवाज़ को कहते हैं जिसके टुकड़े न हो सकें। जैसे अ, इ, क, इत्यादि।

लिखने की भाषा में अक्षर उन सङ्केतों को कहते हैं जो बुद्धिमानों ने उपर्युक्त वर्णों के लिए नियत कर लिये हैं।

वर्णों के समुदाय को **वर्णमाला** (Alphabet) कहते हैं। हिन्दी-भाषा की वर्णमाला में ४६ मुख्य अक्षर हैं। इन के दो भेद हैं। स्वर (Vowel) और व्यञ्जन (Consonants)। **स्वर** (Vowel) वह अक्षर है जिसका उच्चारण विना अन्य अक्षर की सहायता के हो सके जैसे अ, आ, इ, ऊ। **व्यञ्जन** (Consonants) उन अक्षरों का नाम है जो विना स्वरों की सहायता के नहीं बोले जा सकते, जैसे क्, ख् ग् इत्यादि।

स्वर १३ हैं।

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः, ऋ *।

इनके † दो भेद हैं।

(१) **ह्रस्व** (Short) जिनके उच्चारण में सबसे कम काल लगता है। ये चार हैं अ, इ, उ, ऋ।

---

* हिन्दी भाषा में 'ऋ' वर्ण केवल ऋषि, ऋतु, ऋण आदि संस्कृत शब्दों में आता है। अन्य स्थलों पर इसका प्रयोग नहीं होता।

† संस्कृत-व्याकरण के आचार्यों ने तीन भेद किये हैं। तीसरा भेद प्लुत है जिसका प्रयोग हिन्दी-भाषा में नहीं मिलता; इसलिए वह छोड़ दिया गया।

प्रश्न

नीचे के वाक्यों में सम्बन्धवाचक शब्द बताओ:—

मेरा घर कुएँ के पास है। कबूतर छत के ऊपर बैठा है। मन्दिर के भीतर वह कौन चारपाई पर सोता है। तुम्हारे बिना इस कार्य्य को कौन कर सकता है।

(७) समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunctions)

राम और लक्ष्मण अयोध्या से चले। मैं आया और उसने मुझे पत्र दिया। यह बकरी है या भेड़।

उपर्युक्त वाक्यों में 'और' 'और' 'या' शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं इसलिए इनको समुच्चबोधक अव्यय (Conjunctions) कहते हैं।

समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunctions) वह शब्द है जो दो शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ते हैं।

प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में समुच्चयबोधक अव्यय कौन कौन हैं ?

तुम गये परन्तु मैं आया। लड़का और लड़की इस घर में रहते हैं। यदि तुम वहां जाओ तो उनसे मेरा नमस्ते कहना। तुम बुरे आदमी हो तो भी मैं तुमसे स्नेह रखता हूँ। उनसे कहो कि तुमको ऐसी बात कहनी नहीं चाहिए।

(८) विस्मयादिबोधक अव्यय (Interjections)

ओहो तुम आगये। बाप रे बाप कैसी भई। हाय हाय मैं तो मर गया।

व्याकरण उस विद्या का नाम है जिससे किसी भाषा का ठीक ठीक लिखना पढ़ना आजाय।

हिन्दी-व्याकरण से हिन्दी भाषा का ठीक ठीक बोलना और लिखना आता है।

हिन्दी-व्याकरण के चार विभाग हो सकते हैं। एक **वर्णविभाग** (Orthography) जिसमें अक्षरों के आकार और उच्चारण आदि का वर्णन है। दूसरा **शब्दविभाग** (Etymology) जिसमें शब्दों (words) के भेद, रूप आदि का वर्णन है।

तीसरा **वाक्यविभाग** (Syntax) जिसमें वाक्यों के बनाने का विधान है।

चौथा **काव्यविभाग** (Prosody) जिसमें दोहा, चौपाई आदि के बनाने की रीतियों का वर्णन है।

इस पुस्तक में विशेष कर केवल वर्णविभाग, शब्दविभाग और वाक्यविभाग का वर्णन होगा। साधारण विद्यार्थियों के लिए काव्यविभाग की आवश्यकता नहीं है। परन्तु इसका भी अन्त में थोड़ा सा विधान कर दिया गया है।

प्रश्न

१ भाषा किसे कहते हैं? २ शब्द कै प्रकार के होते हैं? ३ व्याकरण में किस प्रकार के शब्दों पर विचार होता है? ४ वाक्य किसे कहते हैं? ५ व्याकरण किसे कहते हैं? ६ हिन्दी-व्याकरण के कितने विभाग हैं और उनमें किस किस का वर्णन है?

ऊपर के वाक्यों में 'ओ', 'हो', 'बाप रे बाप' 'हाय हाय' शब्द हर्ष, शोक आदि भावों के द्योतक हैं। इनका नाम विस्मयादिबोधक अव्यय है।

विस्मयादिबोधक अव्यय (Interjections) वह शब्द हैं जिनके सुनने से हमें कहने वाले के हर्ष, शोक आदि अंतःकरण के भावों का ज्ञान होता है।

प्रश्न

नीचे के वाक्यों में विस्मयादिबोधक शब्द बताओ:—

वाह वाह मैं तो वहां नहीं जाऊँगा। छी छी तुम तो बड़े बुरे आदमी हो। ओ हो आपको इतना घमंड है। धिक् धिक् ऐसे लड़कों के पास भी न बैठना चाहिए।

नीचे लिखे वाक्यों में कौन कौन शब्द किस किस प्रकार का है।

मुझे यहां आये दो मास व्यतीत हुए। लोग कहते हैं कि शहर में रोग फैला हुआ है। बड़े आदमी गर्मियों में पहाड़ों के ऊपर निवास करते हैं। भारतवर्ष प्राचीन काल में अपनी विद्या के लिए प्रसिद्ध था। हाय तुम तो कुछ भी नहीं समझते। कौन कहता है कि मैं बीमार हूँ। जो जैसा करेगा वह वैसा पायेगा। ओ हो आप यहां थे। वाह कैसा सुगन्धित वायु है।

पाठ ४

संज्ञा (Nouns)

संज्ञा वह शब्द है जो किसी वस्तु, स्थान, मनुष्य, भाव या गुण का नाम हो। जैसे वृक्ष, लाहौर, देवदत्त, सुख, भलाई।

हाथी, बालक, ऊँट, कुत्ता, फल।

उपर्युक्त शब्द किसी एक ही वस्तु के लिए नहीं आते किन्तु उस प्रकार की सब वस्तुओं को प्रकट करते हैं। हम सब हाथियों

को 'हाथी' शब्द से पुकार सकते हैं। 'बालक' शब्द प्रत्येक बालक के लिए प्रयोग में आता है। 'कुत्ता' इस जाति की हर एक व्यक्ति का नाम है। इन शब्दों को जातिवाचक कहते हैं।

जातिवाचक (Common Nouns) वह शब्द हैं जिनके अर्थ से जातिमात्र का बोध हो।

राम, कृष्ण, सोमदत्त, सीता, मुम्बई।

उपर्युक्त शब्दों से एक मनुष्य, या एक शहर से अधिक का बोध नहीं हो सकता। राम एक पुरुष विशेष का नाम है। मुम्बई नगर विशेष का। सब नगरों को मुम्बई नहीं कह सकते। सब पुरुषों को राम या सोमदत्त नहीं कह सकते। ऐसे शब्द व्यक्तिवाचक कहलाते हैं।

व्यक्तिवाचक शब्द (Proper Nouns) वे हैं जिनसे केवल एक व्यक्ति का बोध हो।

लड़कपन, गर्मी, बुढ़ापा, सजावट।

ऊपर के शब्द न तो किसी व्यक्तिविशेष का बोध कराते हैं और न किसी जाति का। वे तो केवल उन गुणों का बोध कराते हैं जो किसी व्यक्ति या जाति में पाये जायँ, या किसी काम का बोध कराते हैं। ऐसे शब्द भाववाचक कहलाते हैं।

*भाववाचक (Abstract Nouns) वह शब्द हैं जिनसे किसी

---

*इन तीन के अतिरिक्त अंगरेज़ी में दो और भी भेद हैं।

(१) समुदायवाचक (Collective Nouns) जो किसी समुदाय को बताते हैं जैसे झुण्ड, भीड़।

(२) द्रव्यवाचक (Material Nouns) जो किसी द्रव्य को बताते हैं जैसे सोना, चांदी, दूध।

परन्तु हिन्दीभाषा में यह दोनों जातिवाचक ही कहलाते हैं।

की घड़ी' में 'लक्ष्मण' भेदक और 'घड़ी' भेद्य है। सम्बन्ध के चिह्न भेद्य की अपेक्षा से आते हैं। भेद्य स्त्रीलिङ्ग हो तो 'की' और भेद्य एक-वचन पुंलिङ्ग हो तो 'का' और बहुवचन पुंलिङ्ग हो तो 'के' आता है। जैसे—'राम का घोड़ा' 'राम के घोड़े' और 'राम की घोड़ी'।

अधिकरण (Locative) उस स्थान को बताता है जहाँ क्रिया की जाय। उसके चिह्न 'में,' 'पर,' 'पास' हैं। जैसे 'कुए में' 'कुए पर' 'कुए के पास'।

सम्बोधन (Vocative case) वह कारक है जिससे किसी का पुकारना पाया जाय। उसके चिह्न हे, अरे, रे, हैं। जैसे 'हे राम,' 'रे गोविन्द,' 'अरे भाई'।

नाम वाचक शब्दों के लिङ्ग, वचन और कारक के अनुसार जो जो रूप होते हैं वह आगे लिखे जाते हैं।

अकारान्त पुंल्लिङ्ग मनुष्य शब्द।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मनुष्य, मनुष्य ने	मनुष्य, मनुष्यों ने
कर्म	मनुष्य को	मनुष्यों को
करण	मनुष्य से	मनुष्यों से
सम्प्रदान	मनुष्य को, के लिए	मनुष्यों को, के लिए
अपादान	मनुष्य से	मनुष्यों से
सम्बन्ध	मनुष्य का, के, की	मनुष्यों का, के, की
अधिकरण	मनुष्य में, पै, पर	मनुष्यों में, पै, पर
सम्बोधन	हे मनुष्य	हे मनुष्यो

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग गाय शब्द।

कर्त्ता	गाय, गाय ने	गायें, गायों ने
कर्म	गाय को	गायों को

के धर्म स्वभाव या गुण या किसी काम का बोध हो।

भाववाचक शब्द तीन प्रकार के शब्दों से बनते हैं।

(१) जातिवाचक शब्दों से जैसे लड़का से लड़कपन
मनुष्य से मनुष्यत्व

(२) गुणवाचक शब्दों से जैसे मीठा से मिठास
गर्म से गर्मी

(३) क्रिया से जैसे सजाना से सजावट
कूदना से कूद
लड़ना से लड़ाई

प्रश्न

नीचे लिखे शब्द किस प्रकार के हैं?

लोटा, आगरा, शीतल, भूसा, बाग, आम, गन्ना, खेल, सूर्य, लकड़ी, दूध, मिठास, बुड़ापा, सिलाई, ईंट, चैाकी, सड़क, माता, छत, घास, सोमदेव, नारंगी, श्रीकृष्ण।

पाठ ५

लिङ्ग (Gender)

संज्ञाशब्दों के रूप तीन बातों की अपेक्षा से बदल सकते हैं अर्थात् लिङ्ग, वचन ग्रैार कारक की अपेक्षा से। यहाँ हम हर एक का क्रमशः वर्णन करेंगे।

मनुष्य	स्त्री
राम	सीता
घोड़ा	घोड़ी

उपर्युक्त शब्दों में 'मनुष्य,' 'राम' ग्रैार 'घोड़ा' पुरुष या नर के वाचक हैं ग्रैार स्त्री, सीता, घोड़ी स्त्रीजाति का बोध कराते हैं।

करण	गाय से	गायों से
सम्प्रदान	गाय को, के लिए	गायों को, के लिए
अपादान	गाय से	गायों से
सम्बन्ध	गाय का, के, की	गायों का, के, की
अधिकरण	गाय पर, पै, में	गायों पर, पै, में
सम्बोधन	हे गाय	हे गायो

आकारान्त पुंल्लिङ्ग कुत्ता शब्द ।

कर्त्ता	कुत्ता, कुत्ते ने	कुत्ते, कुत्तों ने
कर्म	कुत्ते को	कुत्तों को
करण	कुत्ते से	कुत्तों से
सम्प्रदान	कुत्ते को, के लिए	कुत्तों को, के लिए
अपादान	कुत्ते से	कुत्तों से
सम्बन्ध	कुत्ते का, के, की	कुत्तों का, के, की
अधिकरण	कुत्तों पर, पै, में	कुत्तों पर, पै, में
सम्बोधन	हे कुत्ते	हे कुत्तो

आकारान्त पुंल्लिङ्ग चाचा शब्द ।

कर्त्ता	चाचा, चाचा ने	चाचा, चाचों ने, चाचाओं ने
कर्म	चाचा को	चाचा को, चाचाओं को
करण	चाचा से	चाचों से, चाचाओं से
सम्प्रदान	चाचा को, के लिए	चाचों को, के लिए चाचाओं के लिए
अपादान	चाचा से	चाचों से, चाचाओं से
सम्बन्ध	चाचा का, के, की	चाचों का, के, की चाचाओं का, के, की

संज्ञा के जिस रूप से यह बात ज्ञात हो कि अमुक शब्द स्त्रीजाति का बोधक है या पुरुषजाति का। उसको लिङ्ग (Gender) कहते हैं।

हिन्दीभाषा में दो लिङ्ग हैं। स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग।

(अ) प्राणिवाचक शब्दों का लिङ्ग जानना कुछ कठिन नहीं। जैसे लड़का, घोड़ा, कुत्ता, बैल पुंल्लिङ्ग हैं और लड़की, घोड़ी, कुतिया, गाय जो स्त्रीजाति के बोधक हैं स्त्रीलिङ्ग हैं।

(आ) अप्राणिवाचक शब्दों के लिङ्ग जानने में कठिनता होती है। उसकी रीतियाँ नीचे लिखी जाती हैं।

नीचे लिखे शब्द बहुधा पुंल्लिङ्ग होते हैं:—

(१) जिनके अन्त में आ हो जैसे घड़ा, जाड़ा, लोटा, कुर्ता।

(२) जिन भाववाचक शब्दों के अन्त में आव, पन, पा, त्व हो, जैसे चढ़ाव, लड़कपन, बुढ़ापा, मनुष्यत्व।

(३) सब पहाड़ों के नाम जैसे हिमालय, नीलगिरि।

(४) महीनों और दिनों के नाम, जैसे चैत्र, श्रावण, रविवार, शुक्र।

(५) ग्रहों के नाम जैसे सूर्य्य, चन्द्र।

(६) वर्णमाला के इ, ई, ऋ को छोड़ कर सब अक्षर।

नीचे लिखे शब्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग होते हैं:—

(१) जिनके अन्त में ई हो जैसे रोटी, टोपी, कुर्सी। परन्तु ऐसे कुछ शब्द पुंल्लिङ्ग भी होते हैं जैसे घी, दही, मोती, पानी, जी।

(२) संस्कृत के आकारान्त शब्द जो भाषा में बोले जाते हैं जैसे माला, लता।

(३) सब नदियों के नाम जैसे गङ्गा, गोमती, नर्मदा।

अधिकरण	चाचा पर, पै, में	चाचों पर, पै, में चाचाओं पर, पै, में
सम्बोधन	हे चाचा	हे चाचो, हे चाचाओ

भैया, दादा इत्यादि रिश्तेदारी के नामों के रूप चाचा शब्द के समान बनते हैं।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग माला शब्द।

कर्त्ता	माला, माला ने	माला, मालों ने, मालाओं ने
कर्म	माला को	मालों को, मालाओं को
करण	माला से	मालों से, मलाओं से
सम्प्रदान	माला को, के लिए;	मालों को, के लिए; मालाओं को, के लिए
अपादान	माला से	मालों से, मालाओं से
सम्बन्ध	माला का, के, की;	मालों का, के, की ; मालाओं का, के, की
अधिकरण	माला में, पर, पै	मालों में, पर, पै; मालाओं में, पर, पै
सम्बोधन	हे माला, हे माले,	हे मालो, हे मालाओ

इकारान्त पुंल्लिङ्ग मुनि शब्द।

कर्त्ता	मुनि, मुनि ने	मुनि, मुनियों ने
कर्म	मुनि को	मुनियों को
करण	मुनि से	मुनियों से
सम्प्रदान	मुनि को, के लिए	मुनियों को, के लिए
अपादान	मुनि से	मुनियों से
सम्बन्ध	मुनि का, के, की,	मुनियों का, के, की,
अधिकरण	मुनि में, पर, पै	मुनियों में, पर, पै
सम्बोधन	हे मुनि	हे मुनि, हे मुनियो

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं।

(४) भाववाचक शब्द जिनके अन्त में, आई, ता, न्त, ति, श, न, वट, हट हो जैसे चिकनाई, मित्रता, गढ़न्त, गति, कोशिश, सूजन, मिलावट, घबराहट।

(५) वर्णमाला के अक्षर इ ई, ऋ।

(६) अर्बी भाषा के शब्द जिनके अन्त में 'त' या 'ईर' हो जैसे कसरत, ग़फ़लत, तक़दीर, परन्तु शर्बत, हज़रत पुंलिङ्ग होते हैं।

अँगरेज़ी के शब्द जो भाषा में बोले जाते हैं स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग दोनों होते हैं। इनका कोई नियम नहीं जैसे कोट, बटन, आफ़िस पुंलिङ्ग हैं और बोतल, चिमनी, डेस्क आदि स्त्रीलिङ्ग हैं।

अब पुंलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने की कुछ रीतियाँ लिखी जाती हैं।

(१) शब्दों का बिल्कुल पलट जाना। जैसे—

पुरुष	स्त्री
राजा	रानी
नर	मादा
भाई	बहिन
बैल	गाय
पिता	माता
पुत्र	कन्या

(२) आकारान्त शब्दों के आ को ई, इया, या अ से बदल देते हैं। जैसे—

लड़का	लड़की	मुर्गा	मुर्गी
चकवा	चकवी	घोड़ा	घोड़ी
बरछा	बरछी	बछेड़ा	बछेड़ी
बेटा	बेटी	कुत्ता	कुतिया

ईकारान्त पुंल्लिङ्ग माली शब्द ।

कर्त्ता	माली, माली ने	माली, मालियों ने
कर्म	माली को	मालियों को
करण	माली से	मालियों से
सम्प्रदान	माली को, के, लिए	मालियों को, के लिए
अपादान	माली से	मालियों से
सम्बन्ध	माली का, के, की	मालियों का, के, की
अधिकरण	माली में, पर, पै	मालियों में, पर, पै
सम्बोधन	हे माली	हे माली, हे मालियो

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी 'माली' शब्द के समान होते हैं ।

ऊकारान्त पुंल्लिङ्ग गुरु शब्द ।

कर्त्ता	गुरु, गुरु ने	गुरु, गुरुओं ने
कर्म	गुरु को	गुरुओं को
करण	गुरु से	गुरुओं से
सम्प्रदान	गुरु को, के लिए	गुरुओं को, के लिए
अपादान	गुरु से	गुरुओं से
सम्बन्ध	गुरु का, के, की	गुरुओं का, के, की
अधिकरण	गुरु पर, पै, में	गुरुओं पर, पै, में
सम्बोधन	हे गुरु,	हे गुरु, हे गुरुओ

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग के रूप भी पुंलिङ्ग के समान होते हैं ।

ऊकारान्त पुंल्लिङ्ग डाकू शब्द ।

कर्त्ता	डाकू, डाकू ने	डाकू, डाकूओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को

चचा	चची	क्वाँरा	क्वाँरी
लोटा	लुटिया	भैंसा	भैंस
चूहा	चुहिया		

(३) व्यापारियों के अकारान्त, आकारान्त, और ईकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों के अ, आ, ई के स्थान में इन आता है। जैसे—

कसेरा	कसेरिन	चमार	चमारिन
जुलाहा	जुलाहिन	नाई	नाइन
कहार	कहारिन	धोबी	धोबिन
लोहार	लोहारिन	तेली	तेलिन

(४) पदवीवाचक शब्दों के अन्त में **आइन** लगा देते हैं। जैसे—

पण्डित	पण्डिताइन	ठाकुर	ठकुराइन
पाण्डे	पण्डाइन	बाबू	बबुआइन
दुबे	दुबाइन	ओझा	ओझाइन

(५) कुछ शब्दों के अन्त में अनियम् **नी** लगा देते हैं॥

ऊँट	ऊँटनी	हाथी	हथिनी
बाघ	बाघनी	सिंह	सिंहनी

प्रश्न

(१) निम्न लिखित शब्दों के लिङ्ग बताओ ?

तोता, मैना, किताब, खाट, मेज़, कावेरी, समानता, बचपन, कबूतर, सुनार, दूध, मई, ज्येष्ठ, राजा, टोपी, पाठशाला, कुर्सी, घटा, कमिश्नर, पाई, अल्प, बन्दर, नाग, कुत्ता।

(२) पुंल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के नियम लिखो और प्रत्येक के चार चार उदाहरण दो।

करण	डाकू से	डाकुओं से
सम्प्रदान	डाकू को, के लिए	डाकुओं को, के लिए
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
सम्बन्ध	डाकू का, के, की	डाकुओं का, के, की
अधिकरण	डाकू पर, पै, में	डाकुओं पर, पै, में
सम्बोधन	हे डाकू	हे डाकू, हे डाकुओ

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी पुंलिङ्ग के समान होते हैं।

एकारान्त पुंल्लिङ्ग दुबे शब्द ।

कर्त्ता	दुबे, दुबे ने	दुबे, दुबेओं ने
कर्म	दुबे को	दुबेओं को
करण	दुबे से	दुबेओं से
सम्प्रदान	दुबे को, के लिए	दुबेओं को, के लिए
अपादान	दुबे से	दुबेओं से
सम्बन्ध	दुबे का, के, की	दुबेओं का, के, की
अधिकरण	दुबे पर, पै, में	दुबेओं पर, पै, में
सम्बोधन	हे दुबे	हे दुबेओ

एकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी 'दुबे' के समान होते हैं।

ओकारान्त पुंल्लिङ्ग ऊधो शब्द ।

कर्त्ता	ऊधो, ऊधो ने	ऊधो, ऊधों ने
कर्म	ऊधो को	ऊधों को
करण	ऊधो से	ऊधों से
सम्प्रदान	ऊधो को, के लिए	ऊधों को, के लिए
अपादान	ऊधो से	ऊधों से
सम्बन्ध	ऊधो का, के, की	ऊधों का, के, की

(३) नीचे लिखे शब्दों के रूप स्त्रीलिङ्ग में क्या होंगे ?

नाई, भतीजा, रस्सा, मास्टर, आदमी, बैल, कुत्ता, मुर्ग़ा, मोर, गीदड़, भैंसा, लड़का, सुअर, हिरन, मेंढक, शेर, पिल्ला ।

पाठ ५

वचन (Number)

लड़का	लड़के
स्त्री	स्त्रियाँ
गाय	गायें
मेवा	मेवे

ऊपर के शब्दों में पहले समूह के शब्द एक के वाचक हैं और दूसरे एक से अधिक के। संज्ञा के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि वह वस्तु जिसका एक शब्द नाम है एक है वा अधिक, उसको **वचन** (Number) कहते हैं।

भाषा में दो वचन होते हैं। **एकवचन** (Singular) जो एक का द्योतक है और **बहुवचन** (Plural) जो एक से अधिक को जतलाता है।

प्रायः एकवचन और बहुवचनों के रूपों में कुछ भेद नहीं होता। वे केवल क्रिया या आशय से पहिचाने जाते हैं जैसे **मनुष्य** आता है और **मनुष्य** आते हैं। हमने **लड्डू** खाया और हमने **लड्डू** खाये।

कभी कभी बहुवचन के अर्थ प्रकाशित करने के लिए जाति, गण, लोग, जन, वर्ग लगा देते हैं जैसे बालकगण, मनुष्यजाति, ब्राह्मणलोग, बन्धुवर्ग, गुरुजन इत्यादि।

अधिकरण	ऊधो पर, पै, में	ऊधों पर, पै, में
सम्बोधन	हे ऊधो	हे ऊधो

ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी ऊधो के समान बनते हैं।

प्रश्न

१ कारक किसे कहते हैं? २ भाषा में कितने कारक हैं? ३ सब कारकों की परिभाषा चिह्नों सहित लिखो। ४ निम्न लिखित वाक्यों में संज्ञा शब्दों के कारक बतलाओ।

राम कल कलकत्ते गया था, वहां से वह तीन अनार लाया और अपने लड़कों के दिये। पाठशाला में जो लड़के पढ़ते हैं उनसे कह दो कि तुम शोर न मचाया करो। देवदत्त का पुत्र चाकू से क़लम बनाता था। इन वृक्षों पर बहुत से फल लगे हैं; इनको लकड़ी से तोड़ कर बालकों को दे दो। बेंच पर बैठ कर पाठ याद करो।

५—नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो:—

चार माली से मैं फूलों लाया। गायों आ रही हैं। इन पुस्तकें का क्या नाम है। खेतें पर जाकर अन्न ले आओ। चार मकाने से आठ मनुष्यों आये।

६—नीचे के शब्दों के रूप लिखो।

खाट, फूल, स्त्री, पति, चबूतरा, भादो, पांडे, बहू, शीशी, राहु।

पाठ ७

शब्दनिरुक्ति (Parsing)

किसी शब्द के प्रकार लिङ्ग, वचन, कारक, काल आदि अङ्गों को पृथक पृथक् बतलाने को शब्दनिरुक्ति (Parsing) कहते हैं।

संज्ञा-शब्दों की शब्दनिरुक्ति में लिङ्ग, वचन, कारक, और उनका वाक्यों के अन्य शब्दों से सम्बन्ध बतलाना होता है। जैसे 'सोमदेव ने भूमित्र को एक आम दिया' में—

एकवचन से बहुवचन बनाने के कुछ नियम नीचे लिखे जाते हैं* ।

(१) स्त्रीलिङ्ग अकारान्त शब्दों के अ का एं हो जाता है जैसे भैंस भैंसें, रात रातें, गाय गायें । पुंलिङ्ग अकारान्त शब्द वैसे ही रहते हैं जैसे बालक आया, बालक आये ।

(२) स्त्रीलिङ्ग आकारान्त शब्दों के अन्त में एं या यें लगा देते हैं जैसे लटिया लठियाएं, माला मालाएं ।

पुंलिङ्ग आकारान्त शब्दों के आ को ए हो जाता है जैसे घोड़ा घोड़े, कुत्ता कुत्ते ।

(३) स्त्रीलिङ्ग इकारान्त शब्दों में यां जोड़ देते हैं जैसे पांति पांतियां, गति गतियां ।

पुंलिङ्ग इकारान्त शब्द प्रायः वैसे ही रहते हैं । जैसे मुनि बोला और मुनि बोले ।

(४) स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त शब्दों के ई को इ करके यां जोड़ देते हैं जैसे लड़की, लड़कियां; थाली, थालियाँ ।

पुंलिङ्ग शब्द दोनों वचनों में एक से रहते हैं ।

(५) स्त्रीलिङ्ग उकारान्त शब्दों के अन्त में एं या यें लगा देते हैं जैसे वस्तु वस्तुएं ।

पुंलिङ्ग शब्दों में रूप भेद नहीं होता ।

(६) स्त्रीलिङ्ग ऊकारान्त शब्दों के ऊ को उ करके यें या एं लगा देते हैं जैसे बहू, बहुएं या बहुयें, झाड़ू, झाडुएं या झाडुयें । परन्तु पुंलिङ्ग शब्द दोनों वचनों में समान रहते हैं ।

---

* ये नियम केवल विभक्ति-रहित शब्दों के बहुवचन बनाने के हैं । विभक्तियों में बहुत सी तब्दीलियां हो जाती हैं जोकि विभक्तियों के साथ वर्णन की जायेंगी ।

सोमदेव, व्यक्तिवाचक, पुंल्लिङ्ग, एकवचन, कर्त्ताकारक, 'दिया' क्रिया का कर्त्ता है।

भूमित्र को व्यक्तिवाचक, पुंल्लिङ्ग, एकवचन, सम्प्रदानकारक, सकर्मक क्रिया 'दिया' का सम्प्रदान है।

आम जातिवाचक, पुंल्लिङ्ग, एकवचन, कर्मकारक, सकर्मक क्रिया 'दिया' का कर्म है।

प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाशब्दों की शब्दनिरुक्ति लिखो:—

राम की किताब आलमारी में है। दोनों लड़के खाट पर सो रहे हैं। दस ईंटें इस चबूतरे के ऊपर पड़ी हैं। सिपाहियों ने तलवार से शत्रु का सिर काट लिया। जब आदमी कुएं से निकला तो उसके कपड़े उतार लिये गये। रामायण को वाल्मीकि ने बनाया है।

पाठ ८

विशेषण* (Adjectives)

विशेषण (Adjectives) वह शब्द है जो किसी संज्ञा या सर्वनाम से मिल कर उनके वाच्यों के गुणों का बोध कराते हैं।

---

*विशेषण दो प्रकार से प्रयोग में आते हैं प्रथम विशेष्य द्वारा (Attributively) जैसे 'अच्छा लड़का'। ऐसी दशा में विशेषण विशेष्य के पहले रक्खा जाता है।

द्वितीय क्रिया द्वारा (Predicatively) जिसमें विशेषण क्रिया की सहायता से विशेष्य के गुण बताते हैं। जैसे 'वह लड़का अच्छा है,' ऐसी दशा में विशेषण विशेष्य के पश्चात् आते हैं और विधेय का एक भाग होते हैं।

(७) एकारान्त और ओकारान्त शब्दों के आगे प्रायः ओं लगा देते हैं।

जो अँगरेज़ी शब्द भाषा में बोले जाते हैं उनके बहुवचन भाषा के उन शब्दों के सदृश बनते हैं जो उनसे अधिक समानता रखते हैं जैसे कम्पनी, कम्पनियाँ, लम्प, लम्पें।

प्रश्न

१ वचन किसे कहते हैं ? २ ईकारान्त शब्दों के बहुवचन कैसे बनते हैं ? ३ ऊकारान्त शब्दों के बहुवचन बनाने की रीति लिखो ? ४ निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाओ। किताब, कागज़, पंख, कलम, दवात, चाकू, निब, कुर्सी, जूता, लाठी, तकिया, धोती, वकील, दरी, छाता, बेंच, ईंट, खाट, लालटेन, बांस, बालक, बालटी, गाड़ी, बछिया।

पाठ ६

कारक (Case)

राम ने रावण को लङ्का में मारा

ऊपर लिखे वाक्य को पढ़ो और बताओ कि संज्ञा शब्द कौन कौन हैं ? राम, रावण और लङ्का। इनका क्रिया के साथ क्या सम्बन्ध है ? राम मारने के काम का करने वाला है। रावण पर मारने का फल पड़ता है। लङ्का वह स्थान है जहाँ वह काम किया गया। जिससे संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया या वाक्य के अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध ज्ञात होता है उसे कारक (Case) कहते हैं।

हिन्दी भाषा में आठ कारक होते हैं। कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन।

उनको विशेषण इसलिए कहते हैं कि वे संज्ञा या सर्वनाम के अर्थों में कुछ विशेषता प्रकट करते हैं जैसे 'काला घोड़ा'।

जिसके वह गुण बताते हैं उसको विशेष्य कहते हैं। ऊपर के उदाहरण में काला विशेषण और घोड़ा विशेष्य है।

हिन्दी में विशेषण के रूपों में लिङ्ग और वचन के कारण विकार हो जाता है परन्तु कारक के कारण नहीं होता। जैसे काला घोड़ा, काले घोड़े, काली घोड़ी, काली घोड़ियाँ। परन्तु 'काले घोड़ों का' और 'काले घोड़ों से'। इनके नियम नीचे लिखे जाते हैं—

(१) अकारान्त और उकारान्त शब्दों में कुछ भेद नहीं होता। जैसे दुष्ट पुरुष, दुष्ट स्त्री, दुष्ट स्त्रियाँ, भीरु लड़का, भीरु लड़की या भीरु लड़कियाँ।

(२) अकारान्त शब्दों के आ को स्त्रीलिङ्ग के दोनों वचनों में ई और पुंलिङ्ग कर्त्ता के एकवचन को छोड़ शेष में ए हो जाता है। जैसे काला लड़का, काले लड़के, काले लड़के को, काले लड़कों से, काले लड़कों में, काली लड़की, काली लड़कियाँ।

विशेषण के बनाने की रीति—

संज्ञा के अन्त में वान, ई, मान, भर, भरा, रूपी, रहित, हीन, पूर्वक, युक्त, सम्बन्धी, री, वाला, हारा, या सा जोड़ देते हैं। जैसे धनवान, धनी, मतिमान, गिलासभर, विषभरा, सिंहरूपी, गुणरहित, गुणहीन, विधिपूर्वक, विषयुक्त, धनसम्बन्धी, सुनहरी, गाड़ीवाला, लकड़िहारा, सूर्य्य सा इत्यादि।

विशेषण चार प्रकार के होते हैं।

गुणबोधक (Adjectives of Quality) विशेषण से यह ज्ञात होता है कि अमुक वस्तु किस प्रकार की है जैसे चतुर मनुष्य।

जो चिह्न संज्ञा शब्दों में लग कर कारक को जतलाते हैं उनको विभक्ति (Case endings) कहते हैं जैसे ने, को, में।

क्रिया के करने वाले को **कर्त्ता** (Nominative) कहते हैं।

(१) अकर्मक क्रिया के कर्त्ता के अन्त में कोई चिह्न नहीं लगाते।

(२) सकर्मक क्रिया के कर्त्ता के अन्त में भूतकाल में 'ने' चिह्न लगता है जैसे बालक ने मिट्टी खाई, तुमने शोशा देखा।

(३) परन्तु अपूर्णभूत और हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के कर्त्ता के अन्त में 'ने' नहीं लगता जैसे राम शोशा देख रहा था।

(४) जो सकर्मक क्रिया 'लाना', 'भूलना', और 'बोलना' से बनती हैं या जिनके साथ 'जाना', 'चुकना'. 'लगना', 'सकना' लग जाते हैं उनके कर्त्ता के आगे कोई चिह्न नहीं लगता। जैसे राम आम लाया, मोहन कुछ न बोला, वह पाठ भूल गया, लक्ष्मण काम को करने लगा, गोविन्द इसको न लिख सका इत्यादि।

(५) जनना, समझना और बकना क्रियाओं के भूतकाल में कर्त्ता के आगे चिह्न 'ने' लगता भी है और नहीं भी लगता। जैसे 'उसने बच्चा जना या 'वह' बच्चा जनी।

(६) कर्मप्रधान क्रिया के कर्त्ता के आगे कोई चिह्न नहीं लगता। जैसे—वह लाया गया, वे मारे गये।

कर्म (Objective) उसे कहते हैं जिसमें क्रिया का फल रहे। जैसे उसने लड़के को मारा।

(१) कर्म का चिह्न 'को' है। यह कभी आता है कभी नहीं आता जैसे 'वह आम को खाता है' या 'वह आम खाता है'।

(२) प्राणिवाचक शब्दों में बहुधा 'को' लाते ही हैं जैसे— 'गोविन्द को मारो'।

(२) परिमाणबोधक (Adjectives of Quantity) जो यह बताते हैं कि अमुक वस्तु का क्या परिमाण है। जैसे थोड़ा भोजन।

(३) संख्याबोधक (Adjectives of Number) जिससे गिनती का बोध हो। जैसे चार मनुष्य।

(४) संकेतबोधक (Demonstrative Adjectives) जो किसी वस्तु का संकेत करें। जैसे वह पुस्तक, यह क़लम।

विशेषणतोलन (Degree of Comparison)

बहुत से गुणबोधक और कुछ परिमाण और संख्याबोधक शब्दों की तीन अवस्थायें होती हैं। (१) स्वरूप अवस्था (Positive Degree) जैसे अच्छा लड़का, (२) आधिक्यबोधक अवस्था (Comparative Degree) जिसमें दो वस्तुओं के बीच तुलना होती है। जैसे राम से अच्छा, कृष्ण से बुरा। कभी कभी स्वरूप अवस्था के पहले 'अधिक' या 'न्यून' लगा देते हैं। जैसे वह मोहन से अधिक चतुर है.' (३) आतिशय्य बोधक अवस्था (Superlative Degree) जिसमें बहुत से वस्तुओं में तुलना होती है जैसे 'सबसे अच्छा'। इस प्रकार के शब्द 'सबसे' लगा देने से बनते हैं।

संस्कृत में आधिक्यबोधक अवस्था में 'तर' और आतिशय्य बोधक अवस्था में 'तम' लगा देते हैं। जैसे प्रियतर, प्रियतम।

विशेषण के अर्थों में न्यूनता प्रकट करने के लिए 'सा' या 'सी' या 'कुछ' या 'थोड़ा सा' लगा देते हैं। जैसे काला सा, थोड़ा सा, काला, कुछ काला।

विशेषण के अर्थों में आधिक्य दिखलाने के लिए 'अति,' 'अत्यन्त.' 'अधिक,' 'बहुत,, 'बहुत ही,' लगा देते हैं जैसे 'अति-

(३) *कर्म्मप्रधान क्रियाओं का कर्म नहीं होता किन्तु इनका 'कर्म' कारक 'कर्तृ-कारक' हो जाता है जैसे 'रावण मारा गया'।

करण (Instrumental) वह है जिसके द्वारा कोई कार्य्य किया जाय। इसके चिह्न 'से' 'हेतु' 'द्वारा' 'कारण' हैं। जैसे उसने क़लम से लिखा, मेरे द्वारा राम ने उसे कहला भेजा।

सम्प्रदान (Dative or Indirect object) वह है जिसके लिए कोई कार्य्य किया जाय। इसके चिह्न 'को' 'के' 'लिए' 'अर्थ' और 'निमित्त' हैं जैसे 'मैंने राम को एक रुपया दिया'। 'उसने देवदत्त के लिए (के अर्थ या के निमित्त) चार आम दिये'।

अपादान† (Ablative) वह है जिससे किसी चीज़ का पृथकत्व प्रकट हो। उसका चिह्न 'से' है जैसे वृक्ष से आम गिरा।

सम्बन्ध (Possessive) वह कारक है जो सम्बन्ध या स्वत्व का प्रकाश करे। इसके चिह्न 'का' 'के' 'की' हैं।

जो वस्तु किसी वस्तु पर अपना स्वत्व प्रकट करे उसके वाचक को **भेदक** और जिस पर स्वत्व हो उसको **भेद** कहते हैं। जैसे लक्ष्मण

---

* संस्कृत में इसको कर्म ही कहते हैं परन्तु उसके रूप प्रथमा के अनुसार जाते हैं। जैसे 'स मात्रा प्राप्यते' वह माता से पाया जाता है, यहाँ 'सः' प्रथमा इसलिए 'वह' को भी कर्तृकारक कहना चाहिए।

† करण और अपादान के चिह्न समान हैं परन्तु वे आशय से पहिचाने जाते। जैसे 'वह क़लम से लिखता है' में 'क़लम से' करण है। 'वह छत से र पड़ा' में 'छत से' अपादान है।

भारी,' 'अत्यन्त,' 'कठिन,' 'अधिक लाभदायक,' 'बहुत बड़ा,' 'बहुत ही छोटा'।

संख्याबोधक (Adjectives of Number) विशेषण तीन प्रकार के होते हैं।

(१) निश्चय-बोधक (Definite) जैसे चार पुरुष, चौथा मनुष्य। इनसे निश्चित संख्या का बोध होता है।

(२) अनिश्चय-बोधक (Indefinite) जैसे कुछ आदमी, सब आम, थोड़े से घोड़े। इनसे अनिश्चित संख्या का बोध होता है।

(३) प्रत्येक-बोधक (Distributive) जिससे प्रत्येक वस्तु का बोध हो। जैसे हर एक मनुष्य जायगा। प्रत्येक विद्यार्थी को पारितोषिक दिया जायगा।

कुछ विशेषण संज्ञा की भाँति भी प्रयोग में आते हैं और तब उनके रूप संज्ञा शब्दों के समान बनते हैं। जैसे बुड्ढों का कहा मानो। बुरों से बचो।

विशेषणों की शब्दनिरुक्ति करने में उनके प्रकार और विशेष्य देने चाहिए।

प्रश्न

१ विशेषण किसे कहते हैं ? २ विशेषण कितने प्रकार के हैं ? ३ संख्याबोधक विशेषणों के प्रकार उदाहरण सहित लिखो। ४ विशेषणों के प्रयोग में लाने की विधि लिखो ? ५ नीचे के वाक्यों में विशेषणों की शब्द-निरुक्ति लिखो।

बुरे आदमी का कोई मनुष्य मान नहीं करता। सच्ची बात कहने से कभी डरना न चाहिए। आठ बुरे आदमियों ने दोनों ग्रामों को लूट लिया और वहाँ के दरिद्र आदमियों को मारा।

पाठ १

सर्वनाम (Pronouns)

जो शब्द संज्ञावाचक शब्दों के स्थान पर प्रयोग में आते हैं उनको सर्वनाम (Pronouns) कहते हैं। जैसे 'यदि देवदत्त परीक्षा में उत्तीर्ण होगा तो उसे पारितोषिक मिलेगा यहाँ उसे सर्वनाम है।

सर्वनाम शब्दों के लिङ्ग और वचन संज्ञा के लिङ्ग, वचन के समान होने चाहिए। कारक में आशय के अनुसार भेद हो जाता है।

सर्वनाम पाँच प्रकार के होते हैं (१) पुरुषवाचक (Personal), (२) निश्चयवाचक (Demonstrative), (३) अनिश्चयवाचक (Indefinite), (४) सम्बन्धवाचक (Relative), (५) प्रश्नवाचक (Interrogative)।

पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)

पुरुषवाचक सर्वनाम वह है जिनसे उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष का ज्ञान हो।

पुरुष तीन हैं, उत्तम पुरुष (First Person), मध्यम पुरुष (Second Person) और अन्य पुरुष (Third Person)।

बोलने वाला अपने लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग करता है उसे उत्तम पुरुष कहते हैं जैसे मैं, हम।

मध्यम पुरुष उस पुरुष का वाचक है जिससे बात की जाय। जैसे तू, तुम, आप।

अन्य पुरुष उस पुरुष का वाचक है जिसके सम्बन्ध में बोलते हैं। जैसे वह, वे।

क्रियायें भी अकर्मक हो जाती हैं जैसे 'वह देखता है, अर्थात् 'वह देख सकता है, जिसका अर्थ यह है कि 'वह अन्धा नहीं है, 'देखना' सकर्मक है परन्तु यहाँ किसी विशेष कर्म का सूचक न होने के कारण अकर्मक हो गया।

कभी अकर्मक क्रिया के व्यापार को एक प्रकार का कर्म मान कर क्रिया के साथ जोड़ देते हैं। ऐसी दशा में अकर्मक क्रिया भी सकर्मक हो जाती है। जैसे 'वह एक चाल चला,' 'तुम एक लड़ाई लड़े,' 'हम एक दौड़ दौड़े'। यहाँ 'चाल,' 'लड़ाई' और 'दौड़े' क्रियाओं के व्यापार के वाचक हैं।

कुछ ऐसी भी क्रियायें हैं जो अकर्मक और सकर्मक दोनों हैं। जैसे 'खुजलाना,' 'उसका शिर खुजलाता है' यहाँ 'खुजलाता है' अकर्मक क्रिया है। 'वह शिर को खुजलाता है' यहाँ 'खुजलाता है' सकर्मक क्रिया है।

कभी अकर्मक क्रिया से सकर्मक और सकर्मक से द्विकर्मक अथवा प्रेरणार्थक क्रिया बना लेते हैं। जैसे 'चलना' अकर्मक क्रिया है 'चलाना' सकर्मक हुई। 'चलवाना' द्विकर्मक हो गई। इनके बनाने की विधि नीचे लिखी जाती है।

(१) यदि अकर्मक धातु के अन्त में 'अ' हो तो 'अ' को 'आ' करके सामान्य रूप का चिह्न जोड़ देने से सकर्मक और 'वाना' जोड़ देने से द्विकर्मक क्रिया हो जाती है जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
उठना	उठाना	उठवाना
उगना	उगाना	उगवाना
चढ़ना	चढ़ाना	चढ़वाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
बजना	बजाना	बजवाना

उत्तम पुरुष 'मैं*' के रूप ।

कर्त्ता	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	मुझसे	हमसे
सम्प्रदान	मुझे, मुझको, मेरे लिए, अपने लिए	हमें, हमको, हमारे लिए, अपने लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
सम्बन्ध	मेरा, मेरी, मेरे, अपना, अपनी, अपने	हमारा, हमारे, हमारी अपना, अपनी, अपने
अधिकरण	मुझमें, मुझ पर	हममें, हम पर

मध्यम पुरुष 'तू' शब्द के रूप ।

कर्त्ता	तू, तूने, तैने	तुम, तुमने
कर्म	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
करण	तुझसे	तुमसे
सम्प्रदान	तुझे, तुझको, तेरे लिए, अपने लिए	तुम्हें, तुमको, तुम्हारे लिए, अपने लिए
अपादान	तुझसे	तुमसे
सम्बन्ध	तेरा, तेरी, तेरे अपना, नी, ने,	तुम्हारा, तुम्हारी तुम्हारे अपना, नी, ने,
अधिकरण	तुझमें, तुझ पर	तुम में, तुम पर

---

*सर्वनाम में केवल सात कारक होते हैं; सम्बोधन नहीं होता ।

दबना	दबाना	दबवाना
मिलना	मिलाना	मिलवाना
पकना	पकाना	पकवाना
लगना	लगाना	लगवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
चमकना	चमकाना	चमकवाना
लटकना	लटकाना	लटकवाना
पिघलना	पिघलाना	पिघलवाना
जलना	जलाना	जलवाना
फिरना	फिराना	फिरवाना
चलना	चलाना	चलवाना
खिलना	खिलाना	खिलवाना

(२) यदि अकर्मक क्रिया के धातु में दो अक्षर हों और उनके मध्य में ए, ऐ, ओ, औ को छोड़ के कोई और दीर्घ स्वर हो तो उस दीर्घ स्वर को ह्रस्व कर देते हैं। यदि 'ए' या 'ओ' हो तो 'ए' को 'इ' और 'ओ' को 'उ' कर देते हैं। जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
जागना	जगाना	जगवाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना
घूमना	घुमाना	घुमवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना

(३) यदि अकर्मक क्रिया के धातु में केवल एक अक्षर हो और उसके अन्त में दीर्घ स्वर या 'ओ' या 'ए' हो तो दीर्घ को ह्रस्व 'ओ' को 'उ,' 'ए' को 'इ' करके 'ल' जोड़ कर नियम (१) के अनुसार सकर्मक आदि बना लेते हैं।

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
जीना	जिलाना	जिलवाना

प्रायः 'तू' नहीं बोला जाता। 'तू' के स्थान पर 'तुम' शब्द बहु-वचन का एकवचन के लिए बोलते हैं। आदर के लिए 'तुम' के स्थान पर 'आप' बोलते हैं जिसके रूप नीचे लिखे हैं।

कर्त्ता	आप आपने
कर्म	आपको
करण	आपसे
सम्प्रदान	आपको, के लिए,
अपादान	आपसे
सम्बन्ध	आपका, के, की,
अधिकरण	आप पर, आपमें

अन्य पुरुष 'वह' शब्द के रूप।

कर्त्ता	वह, उसने	वे, उनने, उन्होंने
कर्म	उसे, उसको	उन्हें, उनको, उन्हों को
करण	उससे	उनसे, उन्हों से
सम्प्रदान	उसको, उसे, उसके लिए, अपने लिए	उनको, उन्हों को, उनके लिए, उन्हों के लिए, अपने लिए
अपादान	उससे	उनसे, उन्होंसे
सम्बन्ध	उसका, के, की अपना, ने, नी	उनका, के, की, उन्हों का, के, की, अपना, ने, नी
अधिकरण	उसमें, पर, पै	उन पर, पै में उन्हों पर, पै, में

ऊपर लिखे शब्दों के बहुवचन के पीछे 'लोग' लगाकर भी बोलते हैं। जैसे तुम लोग, आप लोग, हम लोग, वे लोग आदि।

रोना	रुलाना	रुलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना

(४) कुछ अनियम भी बनते हैं जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
पलना	पालना	पलवाना
फटना	फाड़ना	फड़वाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना
छूटना	छोड़ना	छुड़वाना
बिकना	बेचना	बिकवाना
लेटना	लिटाना	लिटवाना

'आना' 'जाना' 'सकना' 'होना' इत्यादि के सकर्मक आदि नहीं बनते।

(५) सकर्मक क्रिया से द्विकर्मक और त्रिकर्मक बनाने के भी वही नियम हैं जो ऊपर दिये जा चुके हैं। इनके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

सकर्मक	द्विकर्मक	त्रिकर्मक
पीना	पिलाना	पिलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
देखना	दिखाना	दिखवाना
लिखना	लिखाना	लिखवाना
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना

प्रश्न

१ क्रिया किसे कहते हैं। २ सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में क्या भेद है? उदाहरण देकर बताओ। ३ सकर्मक क्रिया कब अकर्मक हो जाती है। ४ अकर्मक कब सकर्मक हो जाती है। ५ द्विकर्मक और त्रिकर्मक क्रियाओं के

निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronouns)

निश्यवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronouns) वह हैं जो किसी वस्तु का निश्चय कराते हैं जैसे ये, वे, यह, वह, एक, दूसरा, दोनों।

'यह' और 'ये' निकटवर्ती वस्तु के लिए आते हैं।
'वह' और 'वे' दूरवर्ती वस्तु के लिए आते हैं।
'वह' के रूप पुरुषवाचक 'वह' के सदृश होते हैं।

'एक' के रूप अकारान्त पुंलिङ्ग संज्ञा के समान और 'दूसरा' के आकारान्त पुंलिङ्ग संज्ञा के समान होते हैं। 'एक' और 'दूसरा' केवल एकवचन में आते हैं।

'दोनों' के रूप बहुवचन 'आकारान्त' संज्ञा के तुल्य होते हैं और यह बहुवचन में आता है।

'यह' के रूप नीचे लिखे जाते हैं।

कर्त्ता	यह, इसने	ये, इनने, इन्होंने
कर्म	यह, इसको, इसे	ये, इनको, इन्हों को, इन्हें
करण	इससे	इनसे, इन्हों से
सम्प्रदान	इसको, के लिए	इनको, के लिए इन्हों को, के लिए
अपादान	इससे	इनसे, इन्हों से
सम्बन्ध	इसका, के, की	इनका, के, की
अधिकरण	इसमें, पर	इनमें, पर

अर्थ उदाहरण सहित लिखो । ६ अकर्मक से सकर्मक बनाने की विधि लिखो। ७ निम्न लिखित क्रियाओं में अकर्मक के सकर्मक और सकर्मक के द्विकर्मक बनाओ—

सोना, रोना, खाना, पाना, मिलना, टूटना, ढूँढ़ना, गिरना, देखना, करना, सीना, धोना, पालना, जागना, रोकना, ।

पाठ ११

क्रिया का रूपकरण (Inflections of Verbs)

क्रिया के रूपों में पाँच बातों की अपेक्षा-भेद हो सकता है अर्थात् वाच्य, काल, लिङ्ग, वचन और पुरुष की अपेक्षा से ।

वाच्य (Voice).

मैं किताब लिखता हूँ	किताब लिखी जाती है
वे आम खाते हैं	आम खाया जाता है
वाल्मीकि रामायण लिखता है	रामायण लिखी जाती है

ऊपर दो प्रकार के वाक्य लिखे गये हैं । दोनों वाक्यों में सकर्मक क्रियाएँ आई हुई हैं । पहले वाक्य-समूह में कर्त्ता एक काम को करता है जैसे 'मैं लिखता हूँ' । 'वे खाते हैं' इत्यादि ।

दूसरे वाक्यसमूह में पहले वाक्यसमूह के कर्म ही कर्त्तारूप हो गये हैं और वह प्रकट करते हैं कि वे स्वयं किसी कार्य्य को नहीं करते किन्तु इन पर किसी कार्य्य का फल गिरता है जैसे 'किताब लिखी जाती है' का यह अर्थ है कि 'लिखने' के कार्य्य का फल 'किताब' पर पड़ता है । पहले समूह में 'किताब' को कर्म विभक्ति रक्खा है । द्वितीय समूह में किताब को कर्त्ता विभक्ति में रख दिया यद्यपि अर्थ कर्म के ही हैं ।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronouns).

अनिश्चयवाचक (Indefinite Pronouns) वह शब्द हैं जिनसे किसी निश्चित पदार्थ का ज्ञान नहीं हो सकता। ये तीन हैं 'सब' 'कुछ' और 'कोई'। 'कुछ' शब्द के रूप सदा एक से रहते हैं।

'सब'* के रूप।

कर्त्ता	सब, सबने, सभों ने
कर्म	सबको, सभों को
करण	सबसे, सभों से
सम्प्रदान	सबको, सभों को, सब के लिए, सभों के लिए
अपादान	सब से, सभों से
सम्बन्ध	सब का, के, की, सभों का, के, की
अधिकरण	सब पर, पै, में, सभों पर, पै, में

'कोई' शब्द के रूप।

कर्त्ता	कोई, किसी ने	कोई, किन्हीं ने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से	किन्हीं से
सम्प्रदान	किसी को, के लिए	किन्हीं को, के लिए
अपादान	किसी से	किन्हीं से
सम्बन्ध	किसी का, के, की	किन्हीं का, के, की
अधिकरण	किसी पर, पै, में	किन्हीं पर, पै, में

---

* 'सब' का एकवचन नहीं होता।

ऊपर के वाक्यों को देखने से ज्ञात होगा कि क्रिया के दो भेद हो गये। क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कर्त्ता विभक्ति में रक्खा हुआ शब्द क्रिया का करने वाला है या उस पर क्रिया का फल गिरता है उस रूप को **वाच्य** (Voice) कहते हैं।

हिन्दी भाषा में वाच्य तीन होते हैं। कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

कर्तृवाच्य (Active Voice) वह है जिससे ज्ञात हो कि कर्तृवाच्य विभक्ति में रक्खा हुआ शब्द क्रिया के करने वाले का वाचक है। 'जैसे देवदत्त ने दूध पिया' यहाँ देवदत्त जो कि कर्तृ-वाच्य विभक्ति में है क्रिया के करने वाले का वाचक है।

कर्मवाच्य (Passive Voice) वह है जिससे ज्ञात होता है कि कर्तृवाच्य विभक्ति में रक्खा हुआ शब्द कर्म का अर्थ देता है जैसे 'वस्त्र सिया जाता है' में 'वस्त्र' कर्तृवाच्य विभक्ति में है परन्तु कर्म का बोधक है। कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रिया में होते हैं।

भाववाच्य (Impersonal) वह है जिसमें अकर्मक क्रिया के कर्मवाच्य क्रिया के समान रूप हो कर कर्त्ता को 'करण विभक्ति' में रख देते हैं जैसे 'मुझ से जाया नहीं जाता' 'उनसे सोया नहीं जाता'।

भाववाच्य प्रायः निषेध में ही आते हैं।

भाववाच्य और कर्मवाच्य के बनाने की यह रीति है कि मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल के रूप में ले आओ। उसके पीछे उसमें 'जाना' क्रिया के काल, पुरुष, वचन, लिङ्ग के अनुसार रूप जोड़ दो। यदि मुख्य क्रिया सकर्मक है तो उस प्रकार बनी हुई क्रिया कर्मवाच्य हो गई और यदि अकर्मक हुई तो भाववाच्य होगी। जो शब्द कर्तृवाच्य में कर्म विभक्ति में हो वह कर्मवाच्य

सम्बन्धवाचक सर्वनाम (Relative Pronouns)

सम्बन्धवाचक सर्वनाम (Relative Pronouns) वह हैं जो कहे हुए संज्ञा शब्दों से सम्बन्ध रखते हैं। वे 'जो' 'जौन' और उनके परस्पर सम्बन्धी 'सो' और 'तौन' हैं।

जो (जौन) शब्द के रूप।

कर्त्ता	जो, (जौन), जिसने	जो, (जौन), जिन्होंने, जिनने
कर्म	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
करण	जिस से	जिनसे
सम्प्रदान	जिसे, जिसको, के लिए	जिन्हें, जिनको, के लिए
अपादान	जिससे	जिनसे
सम्बन्ध	जिसका, के, की	जिनका, के, की
अधिकरण	जिसमें, पर, पै	जिनमें, पर, पै

सो (तौन) शब्द के रूप।

कर्त्ता	सो, (तौन), तिसने	सो, (तौन), तिनने, तिन्होंने
कर्म	तिसे, तिसको	तिन्हें, तिनको
करण	तिससे	तिनसे
सम्प्रदान	तिसको, के लिए	तिनको, के लिए
अपादान	तिससे	तिनसे
सम्बन्ध	तिसका, के, की	तिनका, के, की
अधिकरण	तिसमें, पर, पै	तिनमें, पर, पै

प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronouns).

प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronouns) वह हैं जिनसे प्रश्न का बोध होता है। वे 'कौन' और 'क्या' हैं।

में कर्तृवाच्य *विभक्ति में हो जाता है और जो शब्द कर्तृवाच्य में कर्त्ता विभक्ति में हो वह कर्मवाच्य और भाववाच्य में करण विभक्ति में हो जाता है। जैसे 'व्यास जी वेद को पढ़ते हैं' का कर्मवाच्य बनाना है यहाँ 'व्यासजी' कर्तृवाच्य विभक्ति में है उसको करण विभक्ति में पलटा तो 'व्यास जी से' हो गया 'वेद को' कर्म विभक्ति में है उसको कर्तृवाच्य विभक्ति में पलटा तो केवल 'वेद' रह गया। मुख्य क्रिया पढ़ना है इसका सामान्य भूतकाल 'पढ़ा' हुआ। 'पढ़ते हैं' वर्तमान काल में है। इसलिए 'जाना' क्रिया का वर्तमान 'जाता है' जोड़ दिया। तो पूरा वाक्य 'व्यासजी से वेद पढ़ा जाता है' हो गया।

इसी प्रकार राम जाता है' का भाववाच्य "राम से जाया जाता है" हो गया।

प्रश्न

नीचे के वाक्यों को कर्मवाच्य और भाववाच्य क्रिया द्वारा प्रकट करो। गाय दूध देती है। बालक संध्या करता है। अच्छे पुरुष सत्य बोलते हैं। विद्यार्थी पुस्तक को पढ़ता है। मैं नहीं सोता। देवदत्त कलकत्ते जाता है। मोहन वृक्ष को काटता है। सोमदेव नहीं गाता। क्या तुम पत्र लिख दोगे। हमने कोई अपराध नहीं किया। यह लकड़ी उस बालक ने तोड़ी थी। यह खेत विश्वामित्र ने बोया होगा।

---

* यहाँ यह नहीं समझना चाहिए कि कर्म कर्त्ता हो गया और कर्त्ता करण हो गया। अर्थ वही रहा। केवल विभक्ति बदल गई। अध्यापक को उचित है कि विद्यार्थी को यह बात भली प्रकार समझा दें। 'कर्त्ता' और कर्तृविभक्ति में भेद है; कर्तृविभक्ति केवल शब्दों से सम्बन्ध रखती है और कर्त्ता के चिह्न को जोड़ देने से बन जाती है। परन्तु कर्त्ता किसी वास्तविक पदार्थ को कहते हैं जो वस्तुतः किसी कार्य्य को करे।

'कौन' प्राणिवाचक और अप्राणिवाचक दोनों के लिए और 'क्या' केवल अप्राणिवाचक के लिए आता है।

'कौन' शब्द के रूप ।

कर्त्ता	कौन, किसने	कौन, किनने, किन्होंने
कर्म	किसको, किसे	किनको, किन्हें
करण	किससे	किनसे
सम्प्रदान	किसको, के लिए, किसे	किनको, किनके लिए, किन्हें
अपादान	किससे	किनसे
सम्बन्ध	किसका, के, की	किनका, के, की
अधिकरण	किसमें, पर, पै	किनमें, पर, पै

'क्या' शब्द के रूप ।

कर्त्ता	क्या
कर्म	क्या
करण	काहे से
सम्प्रदान	काहे को, के लिए
अपादान	काहे से
सम्बन्ध	काहे का, के, की
अधिकरण	काहे में, पर

इन प्रसिद्ध सर्वनामों के अतिरिक्त एक और सर्वनाम है जिसको परस्परबोधक (Reciprocal Pronoun) कहते हैं उसमें दो शब्द हैं 'आपस' और 'एक दूसरा'।

"आपस" के रूप केवल सम्बन्ध और अधिकरण में होते हैं जैसे 'आपस का' और 'आपस में'।

२ नीचे के वाक्यों को कर्तृवाच्य क्रिया द्वारा प्रकाशित करो। क्या तुमसे इतना भी नहीं पढ़ा जाता। रावण राम से मारा गया। क़लम बालक से बनाई गई। उनसे वस्त्र पहिने जाते हैं। मुझसे यहां सोया न जायगा। सत्यप्रकाश से यह पुस्तक पढ़ी जायगी। रामप्रसाद से दवात फैलाई जायगी।

पाठ १२

काल (Tense).

वह घर गया　　वह घर जाता है　　वह घर जायगा
मैंने आम खाया　　मैं आम खाता हूँ　　मैं आम खाऊँगा
सीता ने पत्र पढ़ा　सीता पत्र पढ़ती है　सीता पत्र पढ़ेगी

ऊपर लिखे तीन वाक्य-समूहों में पहले समूह की क्रियाओं से ज्ञात होता है कि काम को किये हुए कुछ समय बीत गया। दूसरे से यह ज्ञात होता है कि काम अभी हो रहा है। तीसरे से यह प्रकाशित होता है कि काम भविष्यत् काल में होगा।

क्रिया के जिस रूप से काम के होने का समय पाया जाय उसे काल (Tense) कहते हैं।

काल तीन हैं। भूत (Past Tense), वर्त्तमान (Present Tense) और भविष्यत् (Future Tense)।

भूतकाल (Past Tense)

भूतकाल छः प्रकार का होता है। सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, अपूर्णभूत, सन्दिग्धभूत, हेतुहेतुमद्भूत।

वह गया। लड़के उठे। लड़कियों ने गाया।

उपर्युक्त वाक्यों के भूतकालिक क्रिया तो हैं परन्तु उनसे यह बोध नहीं होता कि काम को हुए कितनी देर हुई। इसको सामान्यभूत (Past Indefinite) कहते हैं।

'एक दूसरा' के रूप।

कर्त्ता	एक दूसरे ने
कर्म	एक दूसरे को
करण	एक दूसरे से
सम्प्रदान	एक दूसरे को, के लिए
अपादान	एक दूसरे से
सम्बन्ध	एक दूसरे का, के, की
अधिकरण	एक दूसरे में, पर, पै

प्रश्न

१ सर्वनाम किसे कहते हैं ? २ सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं ? ३ पुरुषवाचक सर्वनामों के रूप लिखो। ४ अनिश्चयवाचक सर्वनाम कौन कौन से हैं ? ५ प्रश्नवाचक सर्वनाम और परस्परबोधक सर्वनाम की परिभाषा लिखो। ६ कौन, कोई, वह, जो के रूप लिखो।

सर्वनाम शब्दों की शब्दनिरुक्ति

(Parsing of Pronouns).

सर्वनाम शब्दों की शब्दनिरुक्ति करने में उनका प्रकार, पुरुष, लिङ्ग, वचन, कारक और उनका अन्य शब्दों से सम्बन्ध बताना चाहिए जैसे 'वह अपने घर को जाता है' में—

वह—पुरुषवाचक सर्वनाम—अन्य पुरुष, एकवचन, पुंलिङ्ग, कर्त्ता कारक, क्रिया, 'जाता है,' का कर्त्ता है।

अपने—पुरुषवाचक सर्वनाम—अन्य पुरुष, एकवचन, पुंलिङ्ग, सम्बन्ध कारक, 'घर' संज्ञा का भेदक है।

सामान्यभूत कालिक क्रिया के बनाने की रीति यह है कि यदि धातु के अन्त में 'अ' हो तो उसके स्थान में 'आ' कर दो। जैसे 'पढ़ना' से 'पढ़ा', 'लिखना' से 'लिखा', 'ढूँढ़ना' से 'ढूँढ़ा'। यदि धातु के अन्त में 'आ' या 'ओ' हो तो उसमें 'या' जोड़ दो। जैसे 'खाना' से 'खाया', 'रोना' से 'रोया'। यदि धातु के अन्त में 'ई' या 'ए' हो तो इनके स्थान में 'इया' जोड़ दो जैसे 'पीना' से 'पिया'। 'देना' से 'दिया'। यदि धातु के अन्त में 'ऊ' हो तो 'ऊ' को 'उ' करके 'आ' जोड़ दो जैसे 'छूना' से 'छुआ'।

कुछ अनियम भी बनते हैं जैसे—
जाना से गया
होना से हुआ या 'था'
करना से किया

उसने खाना खाया है। वह आ गया है। मैंने पानी पिया है। ऊपर के वाक्यों की क्रियाओं से ज्ञात होता है कि काम भूतकाल में आरम्भ हो कर अभी समाप्त हुआ है। ऐसी क्रिया को आसन्नभूत (Present Perfect) कहते हैं।

इसके बनाने की यह रीति है कि सामान्यभूत में उत्तम पुरुष के एकवचन में 'हूँ' बहुवचन में 'हैं' मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के एकवचन में 'है' और बहुवचन में 'हैं' लगा देते हैं। जैसे मैं आया हूँ। तू आया है। वह आया है। हम आये हैं। तुम आये हो। वे आये हैं। यदि कर्त्ता के साथ उसका चिह्न 'ने' आये तो केवल 'है' ही लगता है जैसे—

उसने किया है। हमने किया है। मैंने किया है, इत्यादि।

प्रश्न

नीचे के वाक्यों में जो जो सर्वनाम हैं उनकी शब्दनिरुक्ति लिखो।

क्या तुमने अपना पाठ याद कर लिया। आप किसके लड़के को पढ़ाते हैं। उनसे कौन कहता है कि वह सब काम हमारे ऊपर छोड़ दें। क्या तू नहीं जानता कि यह काम तुझ से ही कराया जायगा। जो जैसा करते हैं सो तैसा पाते हैं।

पाठ १०

क्रिया (Verb)

क्रिया (Verb) वह है जिससे किसी काम का करना या होना पाया जाय जैसे वह गाता है।

वाक्य में क्रिया का होना अत्यावश्यक है। बिना क्रिया के कोई वाक्य नहीं हो सकता।

जिस शब्द के अन्त में 'ना' हो और उससे व्यापार तो जाय परन्तु काल का बोध न होता हो उसे क्रिया का (Infinitive) कहते हैं। जैसे 'आना' 'जाना' 'पीना' इ... यदि व्यापार न पाया जाय तो वह क्रिया नहीं है ... इत्यादि। 'ना' को सामान्यरूप का चिह्न (Sign c... कहते हैं। सामान्यरूप से ही अन्य रूप बनते हैं।

'ना' को छोड़ जो क्रिया शेष रह ... कहते हैं जैसे 'आ' 'जा' 'पी'।

पूर्णभूत (Past Perfect).

उसने पानी पिया था।

राम ने भोजन किया था।

तू ने पत्र लिखा था।

इन वाक्यों से प्रकट होता है कि काम को हुए बहुत समय व्यतीत हो गया। जिससे भूतकाल में दूरी पाई जाय उसे पूर्णभूत (Past Perfect) कहते हैं। इसके बनाने की यह रीति है कि सामान्यभूत में नीचे लिखे शब्द लगा देते हैं।

	एकवचन		बहुवचन	
	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
उत्तम पुरुष	था	थी	थे	थीं
मध्यम ,,	था	थी	थे	थीं
अन्य ,,	था	थी	थे	थीं

जैसे मैं आया था, आई थी	हम आये थे आई थीं
तू आया था, आई थी	तुम आये थे, आई थीं
वह आया था, आई थी	वे आये थे, आई थीं

अपूर्णभूत (Past Imperfect).

वे खाना खाते थे। तुम जाते थे। हम दौड़ते थे।

ऊपर क्रियाओं से प्रकट होता है कि यद्यपि कार्य्य भूतकाल में हुआ परन्तु समाप्त नहीं हुआ। 'खाते थे' का अर्थ यह है कि खाना समाप्त नहीं हुआ। ऐसी क्रिया को अपूर्णभूत (Past Imperfect) कहते हैं।

क्रिया के भेद (Kinds of Verbs).

वह सोता है	वह पुस्तक को पढ़ता है
हम आते हैं	हम चित्र को देखते हैं
तुम रोते हो	तुम क़लम को लेते हो

ऊपर दो प्रकार के वाक्य दिये हुए हैं। बाईं ओर के वाक्यों में केवल क्रिया और कर्त्ता हैं, परन्तु दाईं ओर के वाक्यों में कर्त्ता, क्रिया और कर्म तीन चीज़ें हैं। बाईं ओर के वाकयों में क्रिया के साथ कर्म नहीं ला सकते। हम नहीं कह सकते कि 'किसको सोता है' या 'किसको आता है' परन्तु हम कह सकते हैं कि 'वह किसको पढ़ता है' 'किसको देखता है' इत्यादि। जब तक कर्म न लगाया जाय तब तक दाईं ओर की क्रियाओं का व्यापार पूरा नहीं होता। यदि कहा जाय कि 'वह देखता है' या 'वह लेता है' और इन क्रियाओं का कर्म न बतलाया जाय तो सुननेवाले के मन को निश्चय नहीं होता। वह पूछता है कि "वह किसको देखता है" अथवा "किसको लेता है"।

अब दो प्रकार की क्रियायें ऊपर बताई गई हैं। एक वह जिन का फल केवल कर्त्ता ही तक रहता है उससे आगे नहीं जाता। ऐसी क्रियाओं को **अकर्मक क्रिया** (Intransitive Verbs) कहते हैं। जैसे उठना, बैठना, चलना, फिरना इत्यादि।

जिनका फल कर्त्ता से चल कर कर्म पर पड़ता है उनको **सकर्मक क्रिया** (Transitive Verbs) कहते हैं। जैसे खाना, लाना इत्यादि।

यदि सकर्मक क्रियायें सामान्य व्यापार की बोधक हों और उनसे किसी विशेष कर्म का आश्रय न पाया जाय तो ऐसी सकर्मक

इसके बनाने की यह रीति है कि धातु में 'ता था', 'ती थी', 'ते थे', 'ती थी', या 'रहा था', 'रही थी', 'रहे थे', 'रही थी' लगा देते हैं। जैसे वह सोता था या सो रहा था। वे सोते थे या सो रहे थे। हम सोती थीं या सो रही थीं इत्यादि।

सन्दिग्धभूत (Doubtful Past).

उसने पत्र लिखा होगा। हमने पुस्तक पढ़ी होगी

यहाँ 'लिखा होगा' और 'पढ़ी होगी' से भूतकाल तो पाया जाता है परन्तु क्रिया के होने में सन्देह है। इसको सन्दिग्धभूत (Doubtful Past) कहते हैं।

इसके बनाने की यह रीति है कि सामान्यभूत के आगे 'होगा' 'होगी', 'होंगे', 'होंगी' लगा देते हैं।

हेतुहेतुमद्भूत (Conditional Past)

वे आते या आये होते तो मुझे पढ़ाते। वर्षा होती तो अन्न होता।

ऊपर के वाक्यों से प्रकट होता है कि कार्य्य भूतकाल में होने वाला तो था परन्तु किसी कारण से हुआ नहीं। ऐसी क्रिया को हेतुहेतुमद्भूत (Conditional Past) कहते हैं।

इसके बनाने की यह रीति है कि धातु में ता, ती, ते, तीं लगा देते हैं।

मैं आता—आती। हम आते या आतीं।

वर्त्तमानकाल (Present Tense).

वर्त्तमानकालिक क्रिया के दो भेद हैं, सामान्य वर्त्तमान, सन्दिग्ध वर्त्तमान।

वह जाता है	वह जाता होगा
तुम खाते हो	तुम खाते होगे
राम रहता है	राम रहता होगा

ऊपर के दोनों वाक्यसमूहों से वर्त्तमान काल का बोध होता है परन्तु पहले समूह में सामान्यता पाई जाती है और दूसरे समूह का क्रियाओं के होने में सन्देह है।

सामान्य वर्त्तमानकालिक (Indefinite Present Tense) वह क्रिया है जिससे काम का वर्त्तमान में होना पाया जाय। इसके बनाने की रीति यह है कि हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे 'हूँ' 'है' या 'हैं' लगा देते हैं जैसे 'वह जाता है' 'वे जाते हैं'।

सन्दिग्ध वर्त्तमानकालिक (Doubtful Present Tense) वह क्रिया है जिसके होने में सन्देह हो। सम्भव है कि काम हो, सम्भव है कि न हो।

इसके बनाने की रीति यह है कि हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे 'होगा' 'होगी' 'होंगे' 'होंगी' लगा देते हैं। जैसे वह जाता होगा। हम जाते होंगे। वह जाती होगी। वे जाती होंगी।

भविष्यत्काल (Future Tense).

यह दो प्रकार का होता है, एक सामान्यभविष्यत् दूसरा संभाव्यभविष्यत्।

मैं करूँ	मैं करूँगा
तू लड़े	तू लड़ेगा
वह खावे	वह खायगा या खावेगा

ऊपर की क्रियाओं से प्रकट होता है कि कार्य्य आरम्भ नहीं हुआ। आनेवाले समय में होगा। परन्तु पहले वाक्यसमूह से यह

सामान्यवर्त्तमान

मुझसे, तुमसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आया जाता है

सन्दिग्धवर्त्तमान

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आया जाता होगा

सम्भाव्यभविष्यत्

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आया जावे

सामान्यभविष्यत्

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आया जावेगा

आज्ञा

तुझसे, या तुमसे, आया जाय

पूर्वकालिक

आया जाकर

पाठ १६

क्रियाओं की शब्दनिरुक्ति

क्रियाओं की शब्दनिरुक्ति करने में (१) प्रकार, (२) वाच्य, (३) काल, (४) पुरुष, (५) लिङ्ग, (६) वचन, (७) *कर्त्ता, का देना आवश्यक है। "मैं पानी पीता हूँ" में—

---

* कर्मवाच्य के 'कर्ता' बताने में वह शब्द बताना चाहिए जो 'कर्ता' विभक्ति में है।

ज्ञात होता है कि कार्य्य करने की इच्छा मात्र है, हो या न हो। इसको संभाव्यभविष्यत् (Conditional Future) कहते हैं। दूसरे वाक्यसमूह से कार्य्य की सामान्यता पाई जाती है। इसको सामान्यभविष्यत् (Indefinite Future Tense) कहते हैं।

संभाव्यभविष्यत् के बनाने की रीति यह है कि धातु के अन्त में बहुवचन में 'तुम' के साथ 'ओ' अन्यथा 'ए' या 'ये' और एकवचन में 'मैं' के साथ 'ऊँ' अन्यथा 'ए' या 'ये' लगा देते हैं जैसे-

मैं खाऊँ	हम खायें	मैं बैठूँ	हम बैठें
तू खाये	तुम खाओ	तू बैठे	तुम बैठो
वह खाये	वे खायें	वह बैठे	वह बैठें

संभाव्यभविष्यत् के आगे 'गा,' 'गी,' 'गे,' 'गी' लगा देने से सामान्यभविष्यत् बन जाता है।

मैं खाऊँगा	हम खायेंगे
तू खायेगा	तुम खाओगे
वह खायेगा	वे खायेंगे

आज्ञा (Imperative).

ऊपर की क्रियाओं के अतिरिक्त एक और क्रिया है जिसमें किसी प्रकार का हुक्म, या बोलनेवाले की इच्छा पाई जाती है। इसको आज्ञा (Imperative) कहते हैं। यह केवल मध्यम पुरुष में आती है।

एकवचन का रूप धातु-रूप के समान होता है। जैसे बैठ, जा, आ। एकवचन में 'ओ' देने से बहुवचन हो जाता है जैसे बैठो, जाओ, आओ।

आदर के लिए 'इये' या 'इए' लगा देते हैं। जैसे बैठिए, जाइए।

पीता हूँ सकर्मक, कर्तृवाच्य, सामान्यवर्त्तमान, उत्तम पुरुष, पुंल्लिङ्ग, एकवचन, (मैं) इसका कर्त्ता है।

प्रश्न

नीचे लिखे वाक्यों में क्रियाओं की शब्दनिरुक्ति करो:—

तुमसे यह दुःख देखा न जायगा। बालक खेल रहा है। कौए कांव कांव करते हैं। पानी तालाब में भरा है। उसने कलम देखी होगी। आज एक सिपाही बरखास्त कर दिया गया। तुम वहां जाओ और वह यहां आवे। राम ने कई घोड़े खरीदे। सीतलदीन से कहो कि अपना काम समय पर किया करे। आप जानें आपका काम जानें।

पाठ १७

क्रियाविशेषण (Adverbs).

जो शब्द किसी क्रिया के व्यापार में कुछ विशेषता प्रकाशित करे उसे क्रियाविशेषण (Adverb) कहते हैं। यह कई प्रकार का है। कुछ प्रसिद्ध क्रियाविशेषण नीचे लिखे जाते हैं।

(१) रीतिवाचक (Adverbs of Manner) जिससे क्रिया की रीति ज्ञात हो। जैसे ज्यों, त्यों, यों, क्यों, ऐसे, वैसे. जैसे, सचमुच, झूटमूट, ठीक, यथार्थ, वृथा, तथापि, इत्यादि।

(२) कालवाचक (Adverbs of Time) जिससे क्रिया का काल अर्थात् जिससे समय ज्ञात हो जैसे जब, अब, कब, पहले, पीछे, कबतक, सदा, कभी, शीघ्र, देर से, आज, कल, प्रति दिन, तड़के, प्रायः, बहुधा, तुरन्त, बारबार इत्यादि।

यदि कार्य्य दूरदेश या दूरकाल में होना हो तो 'इयो' या 'इश्रो' लगा देते हैं जैसे 'बैठियो' 'जाइयो'।

पूर्वकालिकक्रिया (Perfect Participle).

इनके अतिरिक्त एक श्रोर क्रिया है जिससे एक काम का हो चुकना पाया जाय। इसको पूर्वकालिक क्रिया (Perfect Participle) कहते हैं।

यह अकेली प्रयोग में नहीं आती, दूसरी क्रियाश्रों के साथ आती है। धातु के अन्त में 'कर' या 'करके' लगा देने से यह बन जाती है। जैसे वह पढ़ कर चला गया, वह काम करके जायगा, इत्यादि।

प्रश्न

१ काल किसे कहते हैं। २ काल के कितने भेद हैं, परिभाषासहित लिखो। ३ भूत क्रिया कितने प्रकार की है। ४ सामान्यभूत, आसन्नभूत श्रोर अपूर्णभूत क्रिया किसे कहते हैं। उनके बनाने की रीति उदाहरणसहित लिखो। ५ वर्तमान श्रोर भविष्यत् काल के भेद लिखो। ६ आज्ञा किसे कहते हैं। ७ पूर्वकालिक क्रिया किसे कहते हैं श्रोर वह कैसे बनती है। ८ नीचे के वाक्यों में क्रियाश्रों के भेद बताश्रोः—

तुम कल कहां गये थे। मैं अभी आता हूँ। तीन स्त्रियां कुएँ पर पानी भर रही हैं। शराब बड़ी बुरी चीज़ है इसे कभी मत पीना। गाय का दूध मीठा होता है। बालक चिल्ला रहा है। कैान कहता है कि मैं कल जाऊँगा। शायद वह वहां जावे। उसने किताब पढ़ली होगी। वे पत्र लिखते होंगे। वे मेरे पास आते तो इतना दुःख न पाते। चाहे काम करो चाहे बैठे रहो, मैं तुमसे कुछ न कहूँगा। अपने माता-पिता की सेवा किया करो। गुरुजी की सेवा करना चाहिए। वह बुरा लड़का है क्योंकि वह सीगरेट

---

(३) स्थानवाचक (Adverbs of Place) जिससे क्रिया के व्यापार का स्थान पाया जाय जैसे, यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, ऊपर, नीचे, भीतर, बाहर, पास, दूर, समीप इत्यादि।

(४) परिमाणवाचक (Adverbs of Quantity) जिससे परिमाण का बोध हो जैसे इतना, उतना, जितना, कितना, अति, कुछ, थोड़ा सा इत्यादि।

(५) स्वीकार और निषेधवाचक (Adverbs of Belief and Disbelief) जैसे अवश्य, तो, निस्सन्देह, नहीं, मत इत्यादि।

(६) हेतुवाचक (Adverbs of Cause) जैसे इसलिए, इस कारण, अतएव इत्यादि।

(७) प्रश्नवाचक (Interrogative Adverbs) जैसे क्यों, कहाँ, कब इत्यादि।

क्रियाविशेषण की शब्दनिरुक्ति करने में इसका प्रकार और उस क्रिया को बताना चाहिए जिसका यह विशेषण है। जैसे 'वह झट चला गया' में 'झट' क्रियाविशेषण कालवाचक, 'चला गया' का विशेषण।

प्रश्न

१ क्रियाविशेषण की परिभाषा लिखो। २ इनके प्रकार उदाहरण सहित लिखो। ३ नीचे लिखे वाक्यों में जो जो क्रियाविशेषण हों उनकी शब्दनिरुक्ति करो:—

तुम यहां कब आओगे। मैं इस काम को क्यों न करूँ। थोड़ी देर ठहर कर फिर आना। वे यहां बहुत आते हैं। वह बड़ी चतुराई से कार्य करता है। वैसा अच्छा लिखता है। जिसके यहां जाओ उसी के यहां भोजन करना। तुम सत्वर घर जाओ।

पाठ १३

क्रिया के लिङ्ग, वचन, पुरुष

(Gender, Number, Person).

संज्ञा की भाँति क्रिया में भी लिङ्ग, वचन और पुरुष होते हैं। लिङ्ग दो हैं। स्त्रीलिङ्ग, पुंलिङ्ग। जैसे 'आती है', 'आता है।' वचन दो हैं एकवचन, बहुवचन जैसे 'आता है', 'आते हैं'। पुरुष तीन हैं, उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, अन्यपुरुष जैसे मैं आता हूँ', तू आता है,' 'वह आता है'।

पाठ १४

संयुक्तक्रिया (Compound Verbs).

संयुक्तक्रिया (Compound Verbs) उनको कहते हैं जो कई भिन्नार्थक क्रियाओं से बन कर मुख्य क्रिया के अर्थों में कुछ विशेषता कर दें। पहली क्रिया को मुख्य क्रिया (Principal Verb) कहते हैं। अन्य क्रियाओं को सहायक क्रिया कहते हैं (Auxiliary)। 'देख चुका' में 'देख' मुख्य क्रिया है 'चुका' सहायक क्रिया। सहायक क्रियायें प्रायः मुख्य क्रिया के धातु में लगती हैं।

पाठ १५

क्रियाओं के रूप (Conjugation of Verbs).

अब यहाँ क्रियाओं के रूप सब लिङ्ग, वचन आदि में लिखे जाते हैं।

पाठ १८

सम्बन्धवाचक* अव्यय (Prepositions).

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम से मिल कर उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से बताते हैं उनको सम्बन्धवाचक अव्यय (Post-position) कहते हैं जैसे बिना, समेत, आगे, पीछे, बाहर, भीतर इत्यादि।

इन शब्दों की शब्दनिरुक्ति करने में उस संज्ञा या सर्वनाम को भी बताना उचित है जिसके वह साथ रहता है जैसे 'मैं राम से पहले घर आया' में "पहले" सम्बन्धवाचक, राम का सम्बन्धवाचक है।

प्रश्न

नीचे के वाक्यों में जो जो सम्बन्धवाचक शब्द हैं उनकी शब्दनिरुक्ति लिखो:—

मैं तुम्हारे सम्मुख कुछ नहीं कह सकता। जब राम उसके पास गया तो वह कुर्सी के ऊपर बैठा था। गङ्गा बनारस के भीतर हो कर गई है। आपके बिना मुझको कौन बचावेगा।

पाठ १९

समुच्चयबोधक अव्यय (Conjunctions).

जो शब्द दो पदों, वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ते हैं वे 'समुच्चयबोधक (Conjunctions) कहलाते हैं जैसे राम और लक्ष्मण वन को गये।

---

* बहुत से शब्द क्रियाविशेषण और सम्बन्धवाचक दोनों हैं। वे आशय से पहिचाने जाते हैं जैसे 'मैं **पीछे** आया' में **पीछे** क्रियाविशेषण है। परन्तु 'वह उसके **पीछे** आ रहा है' में **पीछे** सम्बन्धवाचक शब्द है।

सकर्मक क्रिया 'देखना'।

कर्तृवाच्य।

सामान्यभूत

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैंने देखा	हमने देखा
मध्यमपुरुष	तूने देखा	तुमने देखा
अन्यपुरुष	उसने देखा	उन्होंने देखा

आसन्नभूत

उ०	मैंने देखा है	हमने देखा है
म०	तूने देखा है	तुमने देखा है
अ०	उसने देखा है	उन्होंने देखा है

पूर्णभूत

उ०	मैंने देखा था	हमने देखा था
म०	तूने देखा था	तुमने देखा था
अ०	उसने देखा था	उन्होंने देखा था

अपूर्णभूत

०	मैं देखती थी—मैं देखता था मैं देख रही थी—मैं देख रहा था	हम देखती थीं—हम देखते थे हम देख रही थीं—हम देख रहे थे
०	तू देखती थी—तू देखता था तू देख रही थी—तू देख रहा था	तुम देखती थीं—तुम देखते थे तुम देख रही थीं—तुम देख रहे थे
०	वह देखती थी—वह देखता था वह देख रही थी—वह देख रहा था	वे देखती थीं—वे देखते थे वे देख रही थीं—वे देख रहे थे

यह शब्द केवल समान शब्दों को जोड़ते हैं। संज्ञा को संज्ञा या सर्वनाम से, विशेषण को विशेषण से, क्रिया को क्रिया से, वाक्य को वाक्य से।

'राम और सीता आता है' अशुद्ध है क्योंकि 'राम' संज्ञा है और 'आता है' क्रिया है। इसलिए ये शब्द 'और' से नहीं जुड़ सकते 'राम और लक्ष्मण' शुद्ध है क्योंकि 'राम' और लक्ष्मण दोनों संज्ञा शब्द हैं।

ऐसे शब्दों की शब्दनिरुक्ति करने में उन शब्दों को भी बताना चाहिए जिनको वे जोड़ते हैं जैसे 'राम और लक्ष्मण आये' में और समुच्चयवाचक, राम और लक्ष्मण को जोड़ता है।

पाठ २०

विस्मयादिबोधक अव्यय (Interjections).

विस्मयादिबोधक वह शब्द हैं जिनसे विस्मय आदि भावों का बोध हो। ये कई प्रकार के हैं।

(१) हर्षबोधक—जैसे धन्य धन्य
(२) क्लेशबोधक—जैसे हाय हाय
(३) घृणाबोधक—जैसे धिक् धिक् छी छी
(४) आश्चर्यबोधक—जैसे ओ हो

प्रश्न

निम्न लिखित वाक्यों में प्रत्येक की शब्दनिरुक्ति लिखो:—

मोहन घर ही जाता था। मुझे संसार में दुःख ही भोगना पड़ा। [illegible] जिसके लिए मैंने जान। सदाचारी रहना मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य

सन्दिग्ध भूत

	एकवचन	वहुवचन
उ०	मैंने देखा होगा	हमने देखा होगा
म०	तूने देखा होगा	तुमने देखा होगा
अ०	उसने देखा होगा	उन्होंने देखा होगा

हेतुहेतुमद्भूत

उ०	मैं देखती, देखता	हम देखतीं, देखते
म०	तू देखती, देखता	तुम देखतीं, देखते
अ०	वह देखती, देखता	वे देखतीं देखते

सामान्य वर्त्तमान

उ०	मैं देखती हूँ, देखता हूँ	हम देखती हैं, देखते हैं
म०	तू देखती है, देखता है	तुम देखती हो, देखते हो
अ०	वह देखती है, देखता है	वे देखती हैं, देखते हैं

सन्दिग्ध वर्त्तमान

उ० मैं देखती हूँगी, देखता हूँगा—हम देखती होंगी, देखते होंगे
म० तू देखती होगी, देखता होगा—तुम देखती होंगी, देखते होंगे
अ० वह देखती होगी, देखता होगा—वे देखती होंगी, देखते होंगे

सम्भाव्य भविष्यत्

उ०	मैं देखूँ	हम देखें
म०	तू देखे	तुम देखो
अ०	वह देखे	वे देखें

है। चन्द्रावती फूलों से खेल रही है। धिक् धिक् ऐसा काम करते हो। मेरे पास एक भी पैसा नहीं है। बच्चों को बुरे कर्म करने पर ताड़ना चाहिए। पराधीन सपने सुख नाहीं। सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप। खेती करना अत्युत्तम कार्य्य है। पशुओं को कभी न सताओ। तमाकू पीने से बुद्धि मलिन हो जाती है। हवन करने से वायु शुद्ध होता है। कोशिश करने से यदि धन प्राप्त न हो तो अपना अपमान कभी न करो। ईश्वर बड़ा दयालु है उसके ऊपर भरोसा करो। क्या जिस ने तुम्हें बनाया है वह तुम्हारा पालन न करेगा।

पाठ २१

वाक्यविभाग (Syntax).

वाक्यविभाग (Syntax) में शब्दों को जोड़ कर वाक्य बनाने का विधान है।

वाक्यविभाग-सम्बन्धी—नियम दो प्रकार के हैं:—

(१) मेल (Concord) जिसमें यह वर्णन किया जाता है कि कौन शब्द लिङ्ग, पुरुष, वचन आदि में किसके समान होता है।

हिन्दी में क्रिया का कर्त्ता के साथ, क्रिया का कर्म के साथ, संज्ञा का सर्वनाम के साथ, विशेषण का विशेष्य के साथ अन्वय होता है।

(२) क्रम (Order) जिसमें एक शब्द का वाक्य में स्थान नियत किया जाता है। यह दो प्रकार का होता है एक साधारण (Grammatical) जिसमें शब्दों के साधारणतया रखने के नियम दिये हुए हैं।

सामान्यभविष्यत्

उ०	मैं देखूँगी, गा	हम देखेंगी, गे
म०	तू देखेगी, गा	तुम देखोगी, गे
अ०	वह देखेगी, गा	वे देखेंगी, गे

आज्ञा

म०	तू देख	तुम देखो

पूर्वकालिक

देख कर, देख के

कर्मवाच्य

सामान्यभूत

	एकवचन		बहुवचन	
	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखी गई,	देखा गया	हम देखी गईं,	देखे गये
म०	तू देखी गई,	देखा गया	तुम देखी गईं,	देखे गये
अ०	वह देखी गई,	देखा गया	वे देखी गईं,	देखे गये

आसन्नभूत

उ०	मैं देखी गई हूँ, देखा गया हूँ	हम देखी गईं हैं, देखे गये हैं
म०	तू देखी गई है, देखा गया है	तुम देखी गई हो, देखे गये हो
अ०	वह देखी गई है, देखा गया है	वे देखी गई हैं, देखे गये हैं

दूसरा असाधारण (Rhetorical) जिसमें साधारण क्रम को पलट कर वाक्यार्थ में कुछ विशेषता कर देते हैं। छन्द बनाने में प्रायः यही क्रम आता है।

कर्त्ता, क्रिया तथा कर्म और क्रिया का अन्वय।

मैं पुस्तक को पढ़ता हूँ।
मैं आता हूँ।
वे आते हैं।
तू आता है।
मोहन मारा जाता है।

नियम १, जब कर्तृकारक का चिह्न 'ने' उसके साथ नहीं होता तो क्रिया का लिङ्ग, पुरुष और वचन कर्त्ता के लिङ्ग, पुरुष और वचन के अनुसार होता है। परन्तु आदर के लिए क्रिया बहुवचन में लाते हैं जैसे गुरु जी आये।

उन्होंने किताब पढ़ी।
मैंने पत्र लिखा।
उसने मैं मारी हूँ।

नियम २, जब कर्तृकारक के उसका चिह्न 'ने' लाते हैं और कर्म के साथ उसका चिह्न 'को' नहीं होता तो क्रिया का लिङ्ग, वचन और पुरुष कर्म के लिङ्ग, वचन और पुरुष के समान होता है।

मैंने किताब को पढ़ा
उसने मुझको मारा।

नियम ३, जब कर्तृकारक का चिह्न 'ने' और कर्म का चिह्न 'को' उपस्थित हों तो क्रिया एकवचन, पुंल्लिङ्ग, अन्य पुरुष में होती है।

मैं काम करता था।
वे पुस्तक पढ़ते हैं।
राम पत्र लिखेगा।

पूर्णभूत

उ० मैं देखी गई थी, देखा गया था हम देखी गईं थीं, देखे गये थे
म० तू देखी गई थी, देखा गया था तुम देखी गईं थीं, देखे गये थे
अ० वह देखी गई थी, देखा गया था वे देखी गईं थीं, देखे गये थे

अपूर्णभूत

उ० मैं देखी जाती थी, देखा जाता था हम देखी गई थीं, देखे जाते थे
म० तू देखी जाती थी, देखा जाता था तुम देखी जाती थीं, देखे गये थे
अ० वह देखी जाती थी, देखा जाता था वे देखी जाती थीं, देखे जाते थे

सन्दिग्धभूत

उ० मैं देखी गई हूँगी, देखा गया हूँगा हम देखी गई होंगी, देखे गये होंगे
म० तू देखी गई होगी, देखा गया होगा तुमदेखी गई होंगी, देखेगयेहोंगे
अ० वह देखी गई होगी, देखा गया होगा वे देखी गई होंगी, देखे गये होंगे

हेतुहेतुमद्भूत

	एकवचन स्त्री० पुं०	बहुवचन स्त्री० पुं०
उ०	मैं देखी जाती, देखी गई होती देखा जाता, या देखा गया होता	हम देखी जातीं, देखे जाते
म०	तू देखी जाती, देखा जाता	तुम देखी जातीं, देखे जाते
अ०	वह देखी जाती, देखा जाता	वे देखी जातीं, देखे जाते

सामान्य वर्त्तमान

उ० मैं देखी जाती हूँ, देखा जाता हूँ हम देखी जाती हैं, देखे जाते हैं
म० तू देखी जाती है, देखा जाता है तुम देखी जाती हो, देखे जाते हो
अ० वह देखी जाती है, देखा जाता है वे देखी जाती हैं, देखे जाते हैं

नियम ४, अपूर्णभूत, हेतुहेतुमद्भूत, वर्त्तमान, भविष्यत् कालों में क्रिया का लिङ्ग, वचन आदि कर्तृकारक के ही अधीन होता है।

राम पढ़ता था

राम और लक्ष्मण पढ़ते थे

नियम ५, जब कर्तृकारक एक से अधिक एकवचन शब्द 'और' से जुड़े हों तो क्रिया बहुवचन में आती है।

न राम पढ़ता है न लक्ष्मण

न मोहन सोता है न सोहन

मोहन या सोहन आता है

नियम ६, परन्तु जब एक से अधिक कर्तृकारक एकवचन शब्द 'न' से या 'या' से जुड़े हों तो क्रिया एकवचन में होती है।

राम आयेगा और खाना खायेगा

मोहन न पढ़ता है न लिखता है।

नियम ७, जब एक कर्त्ता की एक से अधिक क्रियायें हों तो कर्त्ता को एकबार ही लाते हैं।

हम तुम और मोहन चलेंगे।

मोहन और तुम चलोगे

हम और मोहन चलेंगे

नियम ८, यदि तीनों पुरुष के कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष में होगी। यदि मध्यम और अन्य हों तो मध्यम में, यदि उत्तम और अन्य हों तो उत्तम में।

भेद्य, भेदक का मेल

उसका घोड़ा, उसकी घोड़ी, उसके घोड़े, उसकी घोड़ियाँ।

नियम ९, भेदक का चिह्न उसी लिङ्ग, वचन में होता है जो भेद्य का लिङ्ग और वचन है।

सन्दिग्ध वर्त्तमान

उ०	मैं देखी जाती हूँगी देखा जाता हूँगा	हम देखी जाती होंगी हम देखे जाते होंगे
म०	तू देखी जाती होगी, देखा जाता होगा	तुम देखी जाती होगी तुम देखे जाते होगे
अ०	वह देखी जाती होगी देखा जाता होगा	वे देखी जाती होंगी वे देखे जाते होंगे

सम्भाव्य भविष्यत्

उ०	मैं देखी जाऊँ, देखा जाऊँ	हम देखी जायँ, देखे जायँ
म०	तू देखी जाय, देखा जाय	तुम देखी जाओ; देखे जाओ
अ०	वह देखी जाय, देखा जाय	वे देखी जायँ, देखे जायँ

सामान्य भविष्यत्

	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखी जाऊँगी,	देखा जाऊँगा	हम देखी जायँगी,	देखे जायँगे
म०	तू देखी जायगी,	देखा जायगा	तुम देखी जाओगी,	देखे जाओगे
अ०	वह देखी जायगी,	देखा जायगा	वे देखी जायँगी,	देखे जायँगे

आज्ञा

म० तू देखी जा; तू देखा जा   तुम देखी जाओ, देखे जाओ

पूर्वकालिक

देखा जाकर,   देखा जाके

संज्ञा सर्वनाम का मेल

जिसको तुमने बुलाया वही आई, जिसको तुमने बुलाया वही आया, जिनको तुमने बुलाया वही आई, जिनको तुमने बुलाया वही आये।

नियम १०, सर्वनाम लिङ्ग, वचन उस संज्ञा के लिङ्ग वचन के तुल्य होते हैं जिसकी जगह पर वह आते हैं।

विशेष्य विशेषण का मेल

छोटा बालक, छोटे बालक, छोटी बालिका, छोटी बालिकाएँ।

नियम ११, विशेषण का लिङ्ग, वचन विशेष्य के लिङ्ग, वचन के अनुसार होता है।

छोटे लड़के लड़कियाँ, बहुत सी लड़कियाँ लड़के।

नियम १२, यदि विशेषण एक और विशेष्य कई हों तो विशेषण का लिङ्ग, वचन, समीपवर्ती विशेष्य के समान होता है।

क्रमसम्बन्धी नियम

वाक्य में दो भाग होते हैं।

(१) उद्देश्य (Subject) जिसके विषय में कुछ कहा जाय (२) विधेय (Predicate) जो कुछ उद्देश्य के विषय में कहा जाय। मोहन घर को जाता है, में 'मोहन' उद्देश्य और 'घर, को जाता है विधेय है।

नियम १३, उद्देश्य सदा विधेय से पहले आते हैं।

नियम १४, क्रिया सदा वाक्य के अन्त में आती है।

नियम १५, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, क्रिया-विशेषण मायः उद्देश्य और क्रिया के मध्य में आते हैं।

भाववाच्य

'आना' क्रिया

सामान्यभूत

उ०	मुझसे आया गया	हमसे आया गया
म०	तुझसे ,, ,,	तुमसे ,, ,,
अ०	उससे ,, ,,	उनसे ,, ,,

आसन्नभूत

मुझ से, तुझ से, उस से } आया गया है

हम से, तुम से, उन से } आया गया है

पूर्णभूत

मुझ से, तुझ से, उस से } आया गया था

हम से, तुम से, उन से } आया गया था

अपूर्णभूत

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आया जाता था

सन्दिग्धभूत

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया गया होगा

हेतुहेतुमद्भूत

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे, आया जाता

प्रश्न

निम्नलिखित वाक्यों का विग्रह करो:—

१—जब तक वे यहां न आवें मैं तो न जाऊँगा।

२—किसने कहा कि कलक्टर साहब आ रहे हैं।

३—जो बात कही जाय उसको मानो।

४—जब जब मेंह बरसता है तब तब मेंढक बोलते हैं।

५—मैं नहीं समझता कि तुम क्या कहते हो।

६—नगरवासियों से कह दो कि कल गङ्गा तट पर मेला होगा।

७—जो भले हैं वे दीनों पर दया करते हैं।

८—ज्योंही राजा दशरथ ने कहा राम वन को चल दिया।

९—यदि पाठ याद न होगा तो दण्ड मिलेगा।

१०—जो जागे सो पावे।

११—जाके हृदय सांच है वाके हृदय आप।

यह बात सिद्ध है कि पांच सहस्र वर्षों से पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई मत न था।

जिससे उत्पन्न होता है वह कारण और जो उत्पन्न होता है वह कार्य्य कहलाता है।

ईश्वर ही जगत् को रचता, पालता और विनाश करता है। सूर्य्य, चन्द्र और तारागण ईश्वर की महती शक्ति का प्रतिपादन करते हैं।

तुम जानो तुम्हारा काम जाने मैं कुछ नहीं जानता। जो लोग विद्याध्ययन में लगे रहते हैं वे सर्वदा आनन्दयुक्त रहते और ईश्वर को प्राप्त करते हैं।

नियम ४, अपूर्णभूत, हेतुहेतुमद्भूत, वर्त्तमान, भविष्यत् कालों में क्रिया का लिङ्ग, वचन आदि कर्तृकारक के ही अधीन होता है।

राम पढ़ता था

राम और लक्ष्मण पढ़ते थे

नियम ५, जब कर्तृकारक एक से अधिक एकवचन शब्द 'और' से जुड़े हों तो क्रिया बहुवचन में आती है।

न राम पढ़ता है न लक्ष्मण

न मोहन सोता है न सोहन

मोहन या सोहन आता है

नियम ६, परन्तु जब एक से अधिक कर्तृकारक एकवचन शब्द 'न' से या 'या' से जुड़े हों तो क्रिया एकवचन में होती है।

राम आयेगा और खाना खायेगा

मोहन न पढ़ता है न लिखता है।

नियम ७, जब एक कर्त्ता की एक से अधिक क्रियायें हों तो कर्त्ता को एकबार ही लाते हैं।

हम तुम और मोहन चलेंगे।

मोहन और तुम चलोगे

हम और मोहन चलेंगे

नियम ८, यदि तीनों पुरुष के कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष में होगी। यदि मध्यम और अन्य हों तो मध्यम में, यदि उत्तम और अन्य हों तो उत्तम में।

भेद्य, भेदक का मेल

उसका घोड़ा, उसकी घोड़ी, उसके घोड़े, उसकी घोड़ियाँ।
नियम ९, भेदक का चिह्न उसी लिङ्ग, वचन में होता है जो भेद्य का लिङ्ग और वचन है।

२५ पाठ

शब्दरचना (Word Building).

अब कुछ शब्द बनाने के कुछ नियम दिये जाते हैं।

(१) कृदन्त

कृदन्त वे संज्ञा शब्द हैं जो धातु के अन्त में किसी अक्षर के जोड़ने से बनते हैं

कृदन्त पाँच प्रकार के हैं।

(अ) कर्तृवाचक, जिससे कर्त्तापन का बोध हो। क्रिया के चिह्न 'ना' को 'ने' करके आगे 'वाला' या 'हारा' लगा दो। या 'ना' का लोप करके उसके आगे 'क', 'इया' या 'वैया' लगा दो तो कर्तृवाचक शब्द बन जायँगे।

जैसे करनेहारा, गानेवाला, खिवैया, पूजक आदि।

(आ) कर्मवाचक, जिनसे कर्मपन पाया जाय—और यह सकर्म्मक क्रिया के सामान्यभूत क्रिया के आगे 'हुआ' या 'हुई' लगा देने से बनते हैं।

(इ) करणवाचक, जिनसे करणत्व पाया जाय। यह 'ना' को 'नी' कर देने से बनती है। जैसे 'कतरनी'।

(ई) भाववाचक, जिससे भाव पाया जाय। क्रिया के चिह्न 'ना' को दूर कर दो या 'ना' को 'न' कर दो या 'न' दूर करके आई, लाई, हट आदि लगा दो।

जैसे लेनदेन, मारपीट, बुआई, सिलाई, बिलबिलाहट।

संज्ञा सर्वनाम का मेल

जिसको तुमने बुलाया वही आई, जिसको तुमने बुलाया वही आया, जिनको तुमने बुलाया वही आईं, जिनको तुमने बुलाया वही आये।

नियम १०, सर्वनाम लिङ्ग, वचन उस संज्ञा के लिङ्ग वचन के तुल्य होते हैं जिसकी जगह पर वह आते हैं।

विशेष्य विशेषण का मेल

छोटा बालक, छोटे बालक, छोटी बालिका, छोटी बालिकाएँ।
नियम ११, विशेषण का लिङ्ग, वचन विशेष्य के लिङ्ग, वचन के अनुसार होता है।

छोटे लड़के लड़कियाँ, बहुत सी लड़कियाँ लड़के।

नियम १२, यदि विशेषण एक और विशेष्य कई हों तो विशेषण का लिङ्ग, वचन, समीपवर्ती विशेष्य के समान होता है।

क्रमसम्बन्धी नियम

वाक्य में दो भाग होते हैं।

(१) उद्देश्य (Subject) जिसके विषय में कुछ कहा जाय (२) विधेय (Predicate) जो कुछ उद्देश्य के विषय में कहा जाय। मोहन घर को जाता है, में 'मोहन' उद्देश्य और 'घर, को जाता है विधेय है।

नियम १३, उद्देश्य सदा विधेय से पहले आते हैं।

नियम १४, क्रिया सदा वाक्य के अन्त में आती है।

नियम १५, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, क्रिया-विशेषण प्रायः उद्देश्य और क्रिया के मध्य में आते हैं।

(ड) क्रियाद्योतक, हेतुहेतुमद्भूत जैसा रूप इसका भी बनता है कभी 'हुआ' और जोड़ देते हैं।

जैसे करता हुआ, मारता मारता इत्यादि।

(२) तद्धित

संज्ञाओं से बने हुए शब्द तद्धित कहलाते हैं। यह भी पाँच प्रकार के हैं।

(१) अपत्यवाचक। जिससे सन्तानत्व पाया जाय। इसके बनाने की रीति यह है कि कहीं शब्द के पहले अक्षर की वृद्धि कर देते हैं अर्थात् 'अ' का 'आ', 'इ' का 'ऐ', 'उ' का 'औ', 'ऋ' का 'आर', कर देते हैं। जैसे 'संसार' से 'सांसारिक' 'शिव' से 'शैव' 'ऊर्मिला' से 'औार्मिलेय' कभी अंत में ई या इक से लगा देते हैं। जैसे 'रामानन्द' से 'रामानन्दी' इत्यादि।

(२) कर्तृवाचक। यह 'वाला' या 'हारा' लगाने से बनता है। जैसे मिट्टीवाला, लकड़हारा।

(३) भाववाचक। जो ता, त्व, आई आदि लगाने से बनता है जैसे मूर्खता, मनुष्यत्व, चतुराई।

(४) गुणवाचक। जो मान, वान, दाई, दायक लगाने से बनता है। जैसे बुद्धिमान्, बलवान्, दुखदाई, लाभदायक।

(५) ऊनवाचक जिससे लघुत्व पाया जाय। यह शब्द 'आ' 'ई' 'इया' लगा देने से बनते हैं। जैसे खटिया आदि।

(३) समास

जहाँ विभक्तियों का लोप होकर कई पदों का एक जाता है उसे समास कहते हैं। समास छः प्रकार के हैं।

नियम १६, संज्ञा के विशेषण, और भेदक को (यदि वह संज्ञा भेद्य हो) संज्ञा से पूर्व रखते हैं। जैसे काला घोड़ा, उसका घोड़ा।

नियम १७, जब भेद्य-घर आदि स्थानवाचक शब्द हों तो प्रायः भेद्य का लोप भी हो जाता है। जैसे 'हम राम के गये' अर्थात् 'हम राम के घर गये'।

नियम १८, कभी कभी प्रश्न करने में या जहाँ वक्ता अपने सम्मुख पुरुष की बात का निषेध करे तो क्रिया का लोप कर देते हैं जैसे 'तुमको उससे कुछ सम्बन्ध नहीं' 'जब किया नहीं तो डर कैसा'।

नियम १९, पूर्वकालिक क्रिया को उस क्रिया के निकट रखते हैं जिससे वाक्य समाप्त होता है। जैसे 'वह रोटी खाकर चला गया'।

नियम २०, विशेषण को "विशेष्य" के समीप रखना चाहिए।

पाठ २२

वाक्यविग्रह (Analysis).

वाक्य के उन मुख्य मुख्य भागों को पृथक् पृथक् कर देना जिनसे मिलकर वह बना है **वाक्यविग्रह** (Analysis) कहलाता है।

वाक्य (Sentence) शब्दों का वह समूह है जिससे कहने वाले का कुछ आशय ज्ञात हो।

वाक्य के दो भाग होते हैं **उद्देश्य** और **विधेय**। **उद्देश्य** (Subject) वह है जिसके विषय में कुछ कहा जाय। **विधेय** (Predicate) वह है जो कुछ उद्देश्य के विषय में कहा जाय।

(१) कर्मधारय, जिसमें विशेषण का विशेष्य के साथ संयोग हो। जैसे महाराज, परमात्मा।

(२) तत्पुरुष वह है जिसमें पूर्वपद कारक को छोड़ किसी दूसरे कारक का हो और दूसरे पद का अर्थ प्रधान हो जैसे नरेश।

(३) बहुव्रीहि वह है जो कई पदों से मिल के अपने अर्थ को छोड़ कर किसी और साङ्केतिक अर्थ का प्रकाश करे। जैसे चतुर्भुज, मृगलोचन।

(४) द्वन्द्व वह है जिसमें कई पदों के बीच 'और' का लोप करके एक पद बना लिया जाय। जैसे फल फूल, राजा रानी।

(५) अव्ययीभाव वह है जिसमें अव्यय के साथ कोई शब्द मिल कर क्रियाविशेषण हो जाय। जैसे यथाशक्ति।

(६) द्विगु जिसमें पूर्व पद संख्या-वाचक हो। जैसे त्रिभुवन। प्रायः ये समास संस्कृत के हैं। भाषा में इनका प्रयोग नहीं होता किन्तु संस्कृत के शब्द ही भाषा में आते हैं। इन समासों के बनाने में सन्धियों के ज्ञान की आवश्यकता होती है इसलिए आगे कुछ सन्धियों के नियम दिये जाते हैं

पाठ २६

सन्धिविषय

(१) दो ह्रस्व या दीर्घ समान स्वरों के मिलने से दीर्घ स्वर हो जाते हैं। जैसे राम + अनुज = रामानुज, कवि + इन्द्र = कवीन्द्र।

(२) अकार, या आकार से इ या ई मिले तो ए हो जाता है, उ या ऊ मिले तो 'ओ' हो जाता है। जैसे महा + इन्द्र = महेन्द्र, महा + उत्सव = महोत्सव।

वाक्य दो प्रकार के होते हैं अमिश्रितवाक्य (Simple Sentence) और मिश्रितवाक्य (Complex Sentence).

अमिश्रित वाक्य (Simple Sentence).

अमिश्रित वाक्य में केवल एक उद्देश और एक विधेय होता है जैसे लड़की गाती है।

उद्देश के दो भाग होते हैं। एक कर्तृकारक, दूसरा उसका विशेषण। विशेषण होना कोई आवश्यक बात नहीं है। हो या न हो। 'अच्छी लड़की गाती है' में 'अच्छी' विशेषण है परन्तु 'लड़की गाती है' में विशेषण नहीं।

कर्तृकारक में नीचे लिखे शब्द हो सकते हैं।

(१) संज्ञा जैसे 'राम आया'।
(२) सर्वनाम, जैसे 'मैं आया'।
(३) विशेषण जैसे 'दुखियारे आ रहे हैं'।
(४) क्रिया का सामान्य रूप जैसे 'सत्यदेव का बोलना अच्छा है'।
(५) पद जैसे 'घर में बैठना अच्छा नहीं'।

कर्तृविशेषण (Adjunct to Subject) में निम्न लिखित शब्द आ सकते हैं।

(१) विशेषण जैसे 'बुरा लड़का आया'।
(२) भेदक जैसे 'उसका लड़का आया'।

(३) अकार या आकार से 'ए' या ऐ मिले तो 'ऐ' और 'ओ' या औ मिले तो 'औ' हो जाता है। जैसे तथा + एव = तथैव, वन + ओषधि = वनौषधि।

(४) इ, ई, उ, ऊ, ऋ, से परे इनसे भिन्न कोई स्वर हो तो इ, ई का य, उ, ऊ, का व, ऋ, का र हो जाता है। जैसे इति + आदि = इत्यादि। प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर।

(५) ए, ऐ, ओ, औ से परे भिन्न स्वर हो तो ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव्, औ का आव् हो जाता है जैसे गै + अक = गायक।

(६) सकार या कवर्गीय अक्षर से परे श या चवर्गीय अक्षर हो तो उनको मिल कर श् या चवर्गीय अक्षर हो जाता है। जैसे सत् + चित् = सच्चित्।

(७) त् और श मिल कर च्छ हो जाता है जैसे तत् + शिव = तच्छिव।

(८) किसी अक्षर के पीछे यदि कोई अनुनासिक शब्द हो तो उस अक्षर का भी सवर्गीय अनुनासिक हो जाता है। जैसे तत् + मात्रम् = तन्मात्रम्।

(९) यदि विसर्ग के पहिले इ, उ हो और पीछे क, ख, प और फ हों तो विसर्ग का 'ष' हो जाता है जैसे निः + कपट = निष्कपट।

(१०) विसर्ग से पहिले 'अ' और पीछे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर हो तो विसर्ग का 'ओ' हो जाता है। जैसे यशः + दा = यशोदा।

(११) यदि विसर्ग से पहिले 'अ' और 'आ' को छोड़ कर कोई अन्य स्वर हो और पीछे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर हो तो विसर्ग का र् हो जाता है। जैसे निः + गुण = निर्गुण।

इनके अतिरिक्त और भी नियम हैं जो इस छोटी सी पुस्तक में दिये नहीं जा सकते।

(३) पद जैसे 'सब मनुष्यों के घर की बात कही जा रही है'।

विधेय के कई भाग होते हैं परन्तु विधेय में क्रिया का होना अत्यावश्यक है, चाहे प्रकट हो चाहे लुप्त। यदि क्रिया सकर्मक हो तो उसका कर्म अवश्य होता है।

निम्न लिखित शब्द कर्म (Object) हो सकते हैं।

(१) संज्ञा जैसे 'उसने मोहन को मारा'।

(२) सर्वनाम जैसे 'उसने तुमको मारा'।

(३) विशेषण जैसे 'उसने बुरों को मारा'।

(४) क्रिया का सामान्यरूप जैसे 'वह सोना नहीं चाहता'।

(५) पद जैसे 'इसने मेज़ के ऊपर की पुस्तक उठा ली'।

क्रियाविशेषण (Adverbial Adjunct) निम्न लिखित शब्द हो सकते हैं।

(१) क्रियाविशेषण जैसे 'वह झट चला गया'।

(२) करण, अपादान, सम्प्रदान, अधिकरण, कारक जैसे उसने मेज़ पर मेरे लिए हाथ से पुस्तक लेकर सन्दूक़ में रख दी।

यदि क्रिया से उसका आशय पूरा न हो तो उसके साथ सहायक (complement) शब्द भी आते हैं जैसे 'वह मनुष्य है' में 'मनुष्य' सहायक शब्द है।

कुछ वाक्यों का विग्रह नीचे लिखा जाता है।

१ देवदत्त ने कल मोहन को छड़ी से मारा।

२ उसका पिता बड़ा आदमी है।

३ कारण कवन नाथ मोहि मारा।

पाठ २७

काव्य-विभाग (Prosody).

काव्य-विभाग (Prosody) व्याकरण का वह भाग है जिस में काव्य के नियम दिये गये हों।

काव्य अर्थात् दोहा चौपाई आदि छन्दों में मात्राओं की संख्या नियत होती है अर्थात् लिखनेवाले को अपना आशय नियत मात्राओं में ही पूरा करना पड़ता है उससे अधिक या न्यून मात्राएँ नहीं हो सकतीं। उदाहरण के लिए तुलसीदासजी की चौपाई लीजिए 'यहाँ हरी निशिचर वैदेही'। यहाँ कवि को अपना आशय १६ मात्राओं में ही वर्णन करना आवश्यक था इसलिए कई शब्द जो गद्य लिखने में आने चाहिए थे काट छाँट दिये गये। गद्य में यह आशय इस प्रकार लिखा जाता 'यहाँ निशिचर ने वैदेही को हर लिया' यहाँ २२ मात्राएँ हो गईं। गद्य में परिमाण नियत न होने के कारण इससे भी अधिक वा न्यून मात्राएं हो सकती हैं परन्तु काव्य में परिमाण नियत होने के कारण शब्दों को कम या ज्यादा करना पड़ता है। यहाँ यह नहीं समझना चाहिए कि हर एक छन्द में १६ मात्रायें ही होती हैं। क्योंकि भिन्न भिन्न छन्दों का परिमाण भिन्न भिन्न है। परन्तु उस नियत परिमाण में न्यूनता या अधिकता नहीं हो सकती।

काव्य में शब्दों का क्रम भी गद्य के अनुसार नहीं होता।

काव्य के क्रम-सम्बन्धी नियम कवियों की इच्छा और बुद्धि के अनुसार भिन्न भिन्न होते हैं। जिस प्रकार छन्द रोचक या मधुर हो उसी क्रम से शब्दों को रख सकते हैं।

उद्देश्य		विधेय			
कर्तृ कारक	कर्तृ विशेषण	क्रिया	कर्म	सहायक शब्द	क्रिया-विशेषण
१ देवदत्त ने	...	मारा	मोहन को	...	छड़ी से
२ पिता	उसका	है	...	बड़ा आदमी	...
३ नाथ	...	मारा	मोहि	...	कवन कारण

प्रश्न

नीचे के वाक्यों का विग्रह करो:—

१ तुम क्या लिख रहे हो। २ मैं कई दिन से बीमार था। ३ मैं बाज़ार से एक पुस्तक ख़रीदना चाहता हूँ। ४ दुःख में केवल ईश्वर ही सहायता करता है। ५ ऋषि लोग वेदमन्त्रों का उच्चारण कर रहे हैं। ६ भारतवर्ष में आज कल अकाल पड़ रहा है। ७ धर्मात्मा लोगों को कभी दुःख नहीं होता। ८ सत्य के पालन में सदा तत्पर रहो। ९ मनुस्मृति में प्रत्येक मनुष्य के कर्त्तव्य का विधान है।

---

२३ पाठ

मिश्रित वाक्य (Complex Sentence).

मिश्रित वाक्य वह है जो कई वाक्यों से मिल कर बना हो। मिश्रित वाक्यों में दो प्रकार के वाक्य होते हैं:—

(१) प्रधान वाक्य (Principal Clause) वह है जिसका आशय स्वयं ही पूरा हो जाय।

पाठ २८

छन्दों का परिमाण और भेद

छन्दों का परिमाण "गणों" से जाना जाता है। गण तीन वर्णों (अक्षरों) के समूह का नाम है। काव्य में वर्णों के दो भेद हैं—

(१) गुरु जिसमें दो मात्राएँ हों इसका चिह्न ऽ है।

(२) लघु जिसमें एक मात्रा हो इसका चिह्न । है।

इस प्रकार हर एक गण में कम से कम तीन और अधिक से अधिक छः मात्राएँ होती हैं।

दीर्घ अक्षरों की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं।

नीचे लिखे वर्ण गुरु कहलाते हैं—

(१) सब दीर्घ स्वर अर्थात् आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(२) वे व्यञ्जन जिनमें किसी दीर्घ स्वर की मात्रा हो, जैसे का, गी।

(३) अनुस्वारान्त और विसर्गान्त ह्रस्व स्वर, जैसे—कं, स्वः।

(४) संयोग के पहले आनेवाले ह्रस्व स्वर, जैसे— पक्का का प

(५) कभी कभी वे ह्रस्व जो पद के अन्त में हों।

नीचे लिखे वर्ण लघु होते हैं—

(१) ह्रस्व स्वर अर्थात् अ, इ, उ, ऋ।

(२) ह्रस्व स्वरान्त व्यञ्जन जैसे कि, रु, पु।

(३) पाद के आदि में जो संयोग हो उसका पहला दीर्घ भी कभी कभी लघु होता है।

(४) कवि लोग जिस दीर्घ को लघु पढ़ें वह लघु होगा।

गणों की गिनती कभी मात्रा और कभी वर्णों की अ[illegible] की जाती है।

अधीन वाक्य (Subordinate Clause) वह है जो किसी अन्य वाक्य से मिल कर ही पूरा आशय दे सके।

'वह आदमी जिससे तुम कल बातें कर रहे थे आज मर गया' इस वाक्य में 'वह आदमी आज मर गया' स्वतन्त्र वाक्य और "जिससे तुम कल बातें कर रहे थे" आश्रित वाक्य है।

अधीन वाक्य तीन प्रकार के हैं।

(१) संज्ञावाक्य (Noun Clause) जो संज्ञा की भाँति किसी क्रिया का कर्त्ता, कर्म, आदि हो। जैसे 'मैं कहता हूँ कि तुम बुरे आदमी हो' में ' तुम बुरे आदमी हो' 'कहता हूँ' क्रिया का कर्म है। इसको संज्ञावाक्य कहेंगे।

(२) विशेषण वाक्य (Abjectival Clause) वह है जो किसी संज्ञा में विशेषता करे। जैसे 'वह किताब जो कल तुमने ख़रीदी थी खो गई' में 'जो कल तुमने ख़रीदी थी' 'किताब' का विशेषण होने से विशेषण वाक्य है।

(३) क्रियाविशेषण वाक्य (Adverbial Clause) वह है जो क्रिया के अर्थों में कुछ विशेषता करे या उसके व्यापार का समय, स्थान आदि बताये, जैसे 'मैं वहीं गया था जहाँ तुम गये थे' में 'जहाँ तुम गये थे' स्थानबोधक होने से क्रियाविशेषण वाक्य है।

मिश्रित वाक्यों के विग्रह करने में प्रधान वाक्यों को बता के फिर उनके, अधीन वाक्यों को क्रमशः बताना चाहिए और हर वाक्य का विग्रह कर देना चाहिए।

(१) 'जो मकान तुमने मुझे दिया था उसमें आज कल डिप्टी साहिब रहते हैं', यह मिश्रित वाक्य है।

(२) मैं आया और किताब पढ़ी—मिश्रित वाक्य।

(३) जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ। हैं बौरी ढूँढन गई रही किनारे बैठ—मिश्रित वाक्य।

(४) यहाँ हरी निशिचर वैदेही। खोजत विप्र फिरें हम तेही। मिश्रित वाक्य

वर्णों की अपेक्षा गण ८ हैं—

(१) भगण	ऽ । ।	अर्थात्	पहिला गुरु और शेष लघु
(२) जगण	। ऽ ।	,,	बीच का गुरु ,, ,, ,,
(३) सगण	। । ऽ	,,	अन्त का गुरु ,, ,, ,,
(४) यगण	। ऽ ऽ	,,	पहला लघु और शेष गुरु
(५) रगण	ऽ । ऽ	,,	बीच का लघु ,, ,, ,,
(६) तगण	ऽ ऽ ।	,,	अन्त का लघु ,, ,, ,,
(७) मगण	ऽ ऽ ऽ	,,	तीनों गुरु
(८) नगण	। । ।	,,	तीनों लघु

मात्रा की अपेक्षा गण ५ हैं,—

(१) टगण	अर्थात्	छः	मात्राओं	वाला	ऽ ऽ ऽ
(२) ठ ,,	,,	पाँच	,,	,,	ऽ ऽ ।
(३) ड ,,	,,	चार	,,	,,	ऽ ऽ
(४) ढ ,,	,,	तीन	,,	,,	ऽ ।
(५) ण ,,	,,	दो	,,	,,	ऽ

हिन्दी भाषा के छन्द बहुत प्रकार के होते हैं परन्तु यहाँ हम ५ मुख्य मुख्य छन्दों का वर्णन करते हैं जो प्रायः सरल पुस्तकों में मिलते हैं।

(१) **चौपाई** जिसके हर एक चरण में सोलह मात्राएँ हों जैसे—

यदपि नाथ अवगुन बहु मोरे। सेवक प्रभुहि परै जनु भोरे॥
नाथ जीव तव माया मोहू। सो निस्तरै तुम्हारे छोहू॥

(२) **दोहा** जिसके चारों पादों में क्रमशः १३, ११, १३, ११ मात्राएँ हों। जैसे—

यही आस अटक्यो रहे, अलि गुलाब के मूल।
अथिहैं बहुरि वसन्त ऋतु, जिन डारनु वै फूल॥

वाक्य	प्रकार	संयोजक शब्द	उद्देश्य		विधेय			
			कर्ता	कर्तृविशेषण	क्रिया	कर्म	सहायक	क्रियाविशेषण
(१) (अ) उस में आजकल डिप्टी साहिब रहते हैं	प्रधान वाक्य	...	डिप्टी साहिब	...	रहते हैं	...	...	(१) उसमें (२) आजकल
(ब) जो मकान तुमने मुझे दिया था	विशेषण वाक्य (अ) वाक्य के अधीन	...	तुमने	...	दिया था	जोमकान	...	मुझे

(३) सोरठा जिसके चारों पादों में क्रमशः ११, १३, ११, १३ मात्राएं हों जैसे—

नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भूत सब।
देखत अति विपरीत, बोलहिं वचन विचित्र विधि॥

(४) कुंडालिया जिसके पहले दोहा हो फिर आठ चरण क्रमशः ११, १३; ११, १३, ११, १३, ११, १३ मात्राओं के हों। इस तरह कुंडलिया में कुल १४४ मात्राएं और १२ चरण होते हैं। चौथा और पाँचवाँ चरण एक ही होता है। जैसे—

टूटे नख रद केहरी वह बल गयो थकाय,
आह जरा अब आइके यह दुख दयो बढ़ाय,
यह दुख दयो बढ़ाय चहूं दिश जंबुक गाजें,
शशक लोमरी आदि स्वतंत्र करें सब राजें,
बरने दीनदयाल हरिन विहरें सुख लूटे,
पंगु भये मृगराज आज नख रद के टूटे॥

(५) छन्द जिसके हरएक चरण में २८ मात्राएं हों, जैसे

प्रभु सकल कलिमल हरण संशय शोक मोह नशावनी,
कहि दास तेरे भजन बिन पावे न गति अनपावनी।
अस जानि जिय कोऊ चतुर जग मोह माया त्यागहीं,
भवसिन्धु तरि क्षणमाहिं ते रघुबीर पद अनुरागहीं॥

किसी किसी छन्द में ३२ या न्यूनाधिक मात्रायें भी होती हैं। वर्णों के हिसाब से भी छन्दों की बहुत सी क़िस्में हैं परन्तु उन का यहां विधान नहीं किया गया।

इति

वाक्य	प्रकार	संयोजक	उद्देश्य		विधेय			
		शब्द	कर्त्ता	कर्तृ विशेषण	क्रिया	कर्म	सहायक	क्रिया विशेषण
(२) (अ) मैं आया	प्रधान वाक्य	...	मैं	...	आया	...	...	...
(आ) और (मैंने) किताब पढ़ी	प्रधान वाक्य	और	मैं ने	...	पढ़ी	किताब	...	...
(३) (अ) तिनपाइयाँ	प्रधान वाक्य	...	तिन	...	पाइयाँ	...	...	...
(आ) जिन खोजा गहरे पानी पैठ	विशेषण वाक्य (अ) के अधीन	...	जिन	..	खोजा	...	...	गहरे पानी पैठ
(इ) मैं बौरी ढूँढन गई	प्रधान वाक्य	...	मैं	बौरी	गई	...	...	ढूँढने
(ई) (मैं) रही किनारे पैठ	प्रधान वाक्य	...	मैं	...	बैठ रही	...	...	किनारे
(४) (अ) यहाँ हरी निशिचर वैदेही	प्रधान वाक्य	...	निशिचर	...	हरी	वैदेही	...	यहाँ
(आ) खोजत विप्र फिरें हम तेही	प्रधान वाक्य	...	हम	...	खोजत फिरें	तेही	...	...

रेखाक्षर।

१. नीचे लिखे हुए व्यंजनों के बनाने में सहज रेखाओं का आश्रय लिया गया है जैसा कि नीचे लिखी शकलों से विदित होता है ॥
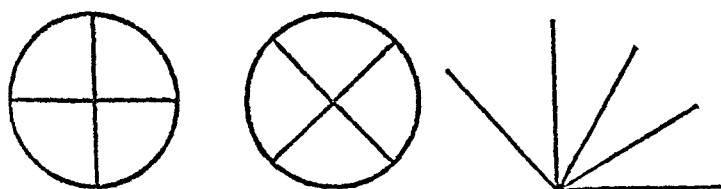
पहिला अभ्यास।

क —, ख ⌒, ग —, घ ⌒, ङ ⌣, ह ⌒,
च /, छ /, ज /, झ /, ञ ⌣, श), य ⌒,
ट /, ठ (, ड /, ढ (, ण ⌣, ष), र \,
त |, थ (, द |, ध (, न ⌣, स), ल \,
प \, फ \, ब \, भ \, म ⌣.

२. ऊपर लिखे हुए व्यंजनों को संस्कृत के पाँच वर्गों के अनुसार चुना गया है, और उसी तरह क्रम से रेखाओं का चुनाव भी किया गया है जैसा कि ऊपर की दी शकलों से विदित होगा ॥

३. रेखाएं दो प्रकार की होती हैं, एक पतली और दूसरी मोटी। वर्ग के पहिले और दूसरे अक्षर सब पतली रेखाओं से

बने हैं। उन्हीं रेखाओं को जब मोटा कर दिया जाता है तो क्रम से उसी वर्ग के तीसरे और चौथे अक्षर बन जाते हैं॥

४. टवर्ग के सिवाय सब अक्षर ऊपर से नीचे को लिखे जाते हैं पर टवर्ग के अक्षर नीचे से ऊपर की तरफ लिखे जाते हैं॥

दूसरा अभ्यास।

क, ग

ख, घ

च, ज

छ, झ

ट, ड

ठ, ढ

त, द

थ, ध

प, ब

फ, भ

न, म

र, ल

स, श

य

ह

ऊपर लिखे अक्षरों को लिखते और साथ साथ उच्चारण करते जाना चाहिए॥

HINDI SHORTHAND

BY

SRIS CHANDRA BASU

SUB-JUDGE, ALLAHABAD

AND

NIKKA MISRA.

PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA,
BENARES.

रेखाक्षर

अर्थात्

हिन्दी की संक्षेप-लेख प्रणाली

जिसे

वसु सब-जज इलाहाबाद

और

मिश्र ने बनाया

तथा

[illegible]णी सभा ने प्रकाशित किया ।

तीसरा अभ्यास ।

नीचे लिखे व्यंजनों को नागरी अक्षरों में लिखो ॥
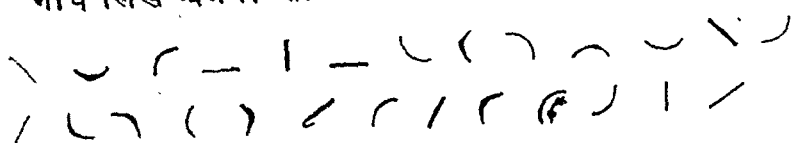
चौथा अभ्यास ।

नीचे लिखे व्यंजनों को रेखाक्षरों में लिखो ।

च, थ, क, ज, न, फ, व, द, ल, स, ह, ष, छ, ठ,
ड, ढ, ध, म, झ, ख, ग, त, प, भ, घ, य, र, ण, ट ॥

व्यंजनों को जोड़ना ।

५. व्यंजनों को जोड़ते समय उनको साथ साथ विना कलम उठाए लिखना चाहिए, यानी पहिले व्यंजन का अंतिम भाग दूसरे व्यंजन के पहिले भाग से और इसी तरह यदि तीन या उससे ज़्यादा व्यंजन हों तो दूसरे का अंतिम भाग तीसरे के पहिले भाग से जुड़ा रहना चाहिए ॥

६. नीचे के चौथे अभ्यास में १ से ४ तक के जोड़े हुए व्यंजन लकीर पर रहते हैं । ५ और ६ वाली पंक्तियां तथा ऐसे ही जुड़ाव के दूसरे व्यंजन, जिन में दो उतरते हुए व्यंजन आपस में मिलते हैं, इस प्रकार लिखे जाते हैं कि पहिला लकीर पर और दूसरा उसके नीचे रहता है । जब एक सोए हुए व्यंजन के साथ दूसरा उतरता हुआ व्यंजन जुड़ता है तब

सोया हुआ व्यंजन लकीर से ऊपर लिखा जाता है और उतरता हुआ व्यंजन लकीर पर रहता है जैसे कथ ॥

पाँचवां अभ्यास ।

नीचे लिखे तथा ऐसे ही दूसरे अभ्यासों में रेखाक्षरों को नागरी अक्षरों के साथ लिखते जाओ और उनका उच्चारण भी करते जाओ ॥

(१) पक, तक, तख, भड, गठ, ठठ ॥

(२) पख, दग, पभ, टब, यट, यगय, पकड़, पढ़ ॥

(३) ठबठ, फख, ठघ, ठत, धठत, पठ ॥

(४) खघ, कक, नघ, मख, मन, खम, घन, नख ॥

(५) पच, तस, भभ, जव, दद, छप, चल, भल, सस ॥

(६) तत, वध, पर, भच, कप, कत, गद, खत, खतम ॥

HINDI SHORTHAND

BY

SRIS CHANDRA BASU

SUB-JUDGE, ALLAHABAD

AND

NIKKA MISRA.

PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA,
BENARES.

रेखाक्षर

अर्थात्

हिन्दी की संक्षेप-लेख प्रणाली

जिसे

श्रीशचन्द्र वसु सब-जज इलाहाबाद

और

निक्का मिश्र ने बनाया

तथा

काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने प्रकाशित किया ।

छठां अभ्यास।

(१) पट, पथ, फल, पह, फन, ठल, गज ॥

(२) चप, छक, छम, वल, सम, भप, सक ॥

(३) नफ, नथ, नश, लक, लम, मस, पस ॥

(४) घस, धस, नस, फम, कम, मद, लस ॥

(५) पप, छछ, मम, नन, वव, शश, चच ॥

(६) गण, पङ, सड़, चढ़, गड़, हय, हप, रर ॥

सातवां अभ्यास।

नीचे लिखे व्यंजनों में च, ज और ट, ड का अधिक ध्यान रखना चाहिये ॥

(१) पच, पट, पर, टच, तच, तल, हच ॥

(२)

(३)

(४)

आठवां अभ्यास।

नीचे लिखे व्यंजनों के जोड़ने में ट, ड और च, ज का अधिक ध्यान रखना चाहिए ॥

(१) गट, जग, गज, जट, जज, रप, जव ॥

(२) घर, घज, लट, टल, चल, जल, लज, दर ॥

(३) रह, टह, यट, यज, दच, टव, जव ॥

(४) तसर, तरच, टकच, टचट, टट, रट, पट ॥

नवां अभ्यास ।

(१) कबर, खबर, कब, जप, सबर, कथन, वतन, हम ॥

(२) टनग, रनग, सनग, लबद, कमल, कलम, सनध ॥

(३) हवन, चमन, भसम, कनद, पनथ, कनथ, सनत, सनद ॥

दसवां अभ्यास ।

(१) फसल, कतल, वहस, दखल, वचन, गंद, वंद ॥

(२) वदन, छंद, लंपट, छलवल, खलवल, तखत, सखत ॥

(३) मनमथ, धनपत, हलफ, हलक, दमक, सवक ॥

(४) मदक, पलक, सदन, करम, करन, पदम, वंधम ॥

HINDI SHORTHAND

BY

SRIS CHANDRA BASU

SUB-JUDGE, ALLAHABAD

AND

NIKKA MISRA.

PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA,
BENARES.

रेखाक्षर

अर्थात्

हिन्दी की संक्षेप-लेख प्रणाली

जिसे

श्रीशचन्द्र वसु सब-जज इलाहाबाद

और

निक्का मिश्र ने बनाया

तथा

काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने प्रकाशित किया ।

स्वर				द्विस्वर			
अ।	·	आ।	·	आइ।	˅	ओए।	¬
इ।	-	ई।	-	आए।	<	ओआ।	┌
उ।	।	ऊ।	।	आओ।	^	आइए।	⋉
ऋ।	ˀ			इआ।	ᵕ		
ए।	‹	ऐ।	‹	इए।	^		
ओ।	›	औ।	›	इओ।	┘		
अं।	०	अः।	ः	ओइ।	└		

७. व्यंजनों के बाईं तरफ लगे हुए स्वर, पहिले — और दाहिनी तरफ लगे हुए स्वर व्यंजन के बाद बोले जाते हैं, जैसे / आज, / जा, / जो, -| ईद, / जौ ॥

८. सोए व्यंजनों में ऊपर वाले स्वर पहिले और नीचे के स्वर पीछे बोले जाते हैं, जैसे ‿ मा, ‿ आम, — आग, — गा ॥

ग्यारहवां अभ्यास।

(१) \ पे, \ वी, / चि, / जी, (थे, ⟍ ले, \ वे,) से, / जौ ॥

(२) \ आव,) आश,) ओस,) इस, \ बु, ⌒ घी, | तू ॥

(३) ⌒ ये, \ वो, ⌒ हो, ⌒ हा, \ ओफ, | ऊत, ⟍ ली, ⌒ ठो, ⌒ टा ॥

(४) — गौ, (सै,) सइ,) सं, \ वं, ⟍ और, ⌒ गौर, \ बू ॥

बारहवां अभ्यास ।

(१) घु, लु, लि, पु, चै, वी, शो, शु ॥

(२) पू, जू, चू, वा, वृट, पृट, तू, मी ॥

(३) अव, अत, आत, एक, एच, ऊद, और, उद ॥

(४) इस, उस, ऊच, आल, ऐश, आश, आज, ईश्व ॥

तेरहवां अभ्यास ।

(१)

(२)

(३)

(४)

चौदहवां अभ्यास ।

(१) पाई, भाई, दाई, खाओ, जाओ, नाई, आइस, जीओ ॥

(२) गाए, जाए, वाए, हाए, खाए, भईया, गईआ, गवैआ ॥

(३) पहिए, सहिए, जाइए, गाईए, कोई, बोई, कहिए ॥

(४) पोए, वोए, धोए, चोए, रोए, रोआ, सोआ, खोआ ॥

FOREWORD

At the request of the energetic Vice-President of the Nagari Pracharini Sabha, Babu Syam Sunder Das, this first book of Hindi Shorthand is placed before the public. It is based on Pitman's system of Shorthand, with such modifications as are suited to the Devanagari characters. Several attempts have been made before to introduce Shorthand in India for some of the vernacular languages. But all these attempts have hitherto been more or less failures, owing to there being no demand for it. The conditions of India are not the same as in Europe or America, where public speaking, whether from the pulpit, bar, or parliament, or public platform, has to be reported. Another reason why the former attempts failed might be in the complicated systems which they introduced. In the present work the system has been extremely simplified. With the help of five straight lines and eight curves this method is now put before the public. Another novel feature of this attempt is that vowels are not represented by positions, but by distinct marks, as experience has taught us that positions are seldom regarded in actual reporting. Hindi, like Sanskrit, has many conjunct consonants. We have

पन्द्रहवां अभ्यास ।

(१) लाई, ताई, भलाई, बुराई, नाओ, आईना, मिताई ॥
(२) लाए, धाए, गाए, मईआ, चलवैआ, नचवैआ, बीआ ॥
(३) कहिए, भइए, चाहिए, देखिए, हरिए, लोई, खोई ॥
(४) सोए, टोए, दोए, फोए, धोआ, चोआ, कोआ ॥

सोलहवां अभ्यास ।

(१) वाढ़, पीठ, ताल, वैल, वैर, वैद, कूद ॥
(२) खाक, नोख, घान, कैद, कैथ, कौम, कौल ॥
(३) पंछो, तीता, गीत, गंदा, वादो, अकेला, वार ॥
(४) झार, कुल, वीर, धौल, चोल, ठोल, इतना ॥

सत्रहवां अभ्यास ।

(१) दिन, गिल, हिल, नील, धूप, सूप, खाल ॥
(२) पार, गार, धाड़, धोल, धोर, पीर, नीर ॥
(३) फांग, चोर, खाद, लाभ, बांध, सूख, धाम ॥
(४) पीप, सीप, शाह, शौक, कान्ना, गाला, गीला ॥

made one simple rule for all these conjunct consonants, which, in my opinion, will be found convenient. It took Sir Isaac Pitman sixty years to perfect his system with the help of those who have been using his method. We cannot expect that our system can become perfect till it is widely practised and its shortcomings made manifest. However, we put this forward as a tentative measure, the details of which will be filled in as experience grows, the main outlines remaining the same. Great credit is due to the Nagari Pracharini Sabha for undertaking this work. Nor would this have been an accomplished fact but for the interest taken and time devoted by my young friend Pandit Nikka Misra in writing out this book.

SRIS CHANDRA BASU.

ALLAHABAD.
November 4, 1907.

९. बहुत बार आनेवाले शब्दों के लिये एक विशेष निशान अथवा उनके पहिले का एक या दो व्यंजन मुकर्रर कर लिया जाता है जो कि "शब्द चिन्ह" कहलाता है ॥

का, को, की, के . . . . .
कि . . . . . .
ने . . . . . .
वह . . . . . .
मैं या में . . . . .
इस . . . . . .
उस . . . . . .
से . . . . . .
और . . . . .
है या हैं . . . . .

१०. "शब्द चिन्ह" के लिखने में स्थान का ध्यान विशेष रखना चाहिए अर्थात जो लकीर के ऊपर हो उसको वहीं, जो लकीर पर है उसको उसी जगह, और जो लकीर के नीचे है उसे नीचे लिखना चाहिए। इसमें कोई उलट फेर न होना चाहिए ॥

अठारहवां अभ्यास।

(१) ॥ मैंने उससे कहा ॥
(२) उसने देखा ॥
(३) राम और वह गया ॥

(४) इसने और उसने वह काम किया जो मैं करता ॥

(५) वह आया है ॥

उन्नीसवां अभ्यास।

(१) मैंने वह देखा ॥

(२) वह और राम उस मंदिर में हैं ॥

(३) राम और गोपाल जी कि यहां थे देखो कहां हैं ॥

(४) वह घर में है ॥

(५) तुम और वह कहां गये हो ॥

(६) उसने मेरा कहना नहीं माना है ॥

"स" वृत्त।

११. "स" जब अकेला आता है तो पूरा लिखा जाता है पर जब वह कभी दूसरे व्यंजनों के साथ शब्द के पहिले, बीच में, या अन्त में आता है तो प्रायः एक छोटा सा वृत्त उसके लिये लिखा जाता है, जैसे पास ॥

१२. "स" जब किसी खड़े रेखाचर के साथ आता है तो उसका फेर बाईं तरफ होता है, जैसे सोच, वास ॥

१३. "स" वृत्त जब किसी ऐसे दो व्यंजनों के बीच में आता है जो आपस में कोन बनाते हों तो वह कोन के बाहर की तरफ निकलता हुआ लिखा जाता है, जैसे विसकी, वसन ॥

(४)

ईश्वर सृष्टि में स्वतन्त्र है या परतन्त्र। यदि स्वतन्त्र है तो सृष्टि का ज्ञान उसे पहले से नहीं होगा क्योंकि यह निश्चय नहीं है कि सृष्टि होगी या नहीं॥

(५)

यदि पहिले से ज्ञान है तो उसी के अनुसार सृष्टि होगी तो ईश्वर परतन्त्र हुआ॥

पैंतीसवां अभ्यास।

(१) सख्त, रक्वा, अभ्यास, विल्ली, युक्त, वस्त्र, शक्कर, पत्तल॥

(२) अतिरिक्त, पात्र, भ्रमण, प्रोह, राष्ट्र, सम्बन्ध, कल्याण, राज्य, तत्त्व, ग्राह्य॥

(३) स्वतंत्रता किस को प्रिय नहीं है। सिद्धान्तों का प्रचार करना कोई कठिन काम नहीं है। प्रकृति के दृश्य अत्यन्त मनोहर होते हैं। संस्कृत साहित्य अत्युत्तम और प्रशंसनीय है। हिंदुस्तान के मनुष्य अत्यन्त स्वार्थ तत्पर हैं। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक रेल द्वारा भ्रमण करने में अनेक तीर्थ स्थान दृष्टि गोचर होते हैं

१४. "स" वृत्त जब किसी वक्र रेखा में जोड़ा जाता है तो उसके अंदर की तरफ लिखा जाता है, जैसे (साथ,) सास॥

१५. "स" वृत्त जब दो वक्र रेखाओं के बीच में आता है तो प्रायः पहिली वक्र रेखा के अंदर की तरफ लिखा जाता है, जैसे मौसिम, नसीम॥

१६. "स" वृत्त जब शुरू में लगता है तो हमेशा शुरू में (स्वर और व्यंजन दोनों के) बोला जाता है, जैसे सोच, सवा। यहां स पहिले बोला गया है और फिर क्रम से स्वर या व्यंजनों का उच्चारण हुआ है॥

१७. जब "स" वृत्त व्यंजन के अन्त में लगता है तो सब के पीछे बोला जाता है, जैसे पचास, मास॥

१८. किसी शब्द में जब अन्त के "स" के पीछे कोई स्वर आता है तो "स" पूरा लिखा जाता है, जैसे किसी, वासी, पासी॥

बीसवां अभ्यास।

शब्दाक्षर ॥ उसको, आप, क्या, सब, जब, तब॥

(१) दास, बास, पास, बीस, खास, घास, किस॥

(२) सब, सूद, सूल, साल, सूली, सोर, सूट॥

तेंतीसवां अभ्यास।

(१) शिखर, सिपर, सरस, कलस, शर्म, सकल, सदर॥

(२) स्वांस, बांस, फांस, तांस, मांस, विवस, सरवस, पावस॥

(३) बांस बहुत काम का पेड़ है। विवस होने पर मांस खाना चाहिए। पावस में पहाड़ के शिषर पर बड़ा आनन्द आता है। सरस जल से कलस भरो॥

---

२६. संयुक्त व्यंजनों के लिखने में जहां तक हो सके स्वर रहित व्यंजन को आधा रखना चाहिए॥

२७. संयुक्त अक्षरों के लिखने में इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि रेखाक्षरों में युक्ताक्षर वे ही हैं जो बोलने में ही युक्त हों जैसे लम्बा॥

चौंतीसवां अभ्यास।

(१) मुल्क, हिम्मत, गुप्त, पत्थर, शब्द, पत्तियां, क्या॥

(२) शक्ल, पुस्तक, हिन्दी, आत्मा, व्यसन, स्लेटो, समस्त॥

(३) प्रलयाग्नि, स्पष्ट, प्रत्ययों, वाह्य, शक्ति, वस्तु, सिद्ध॥

(३) सीख, सोख, सान, साम, समा, सेक, सभा ॥

(४) मासिक, कासम, खुसक, फासला, मैजिसृरेट, उसताद ॥

इक्कीसवां अभ्यास ।

(१) कोस, वीस, धौंस, खास, तीस, मूस, कासिद, लास ॥

(२) साल, सुध, सीधा, साथी, सरल, सपथ, सूजन, सुस्त ॥

(३) स्कूल, किस्ती, भिस्ती, कुस्ती, गश्त, वस्ती, नाश्ता, वस्ता ॥

(४) कसाई, सोना, सोची, हौसला, दसमी, हसली, हस्ती, सवाल ॥

बाईसवां अभ्यास ।

(१) पोशाक, विसकी, वासुकी, आसमान, रसिक, चुस्त ॥

(२)

(३)

(४) उसको आपने क्या

(५) [चीज़ दी ॥

(६)

---

(४)

ईश्वर सृष्टि में स्वतन्त्र है या परतन्त्र। यदि स्वतन्त्र है तो सृष्टि का ज्ञान उसे पहले से नहीं होगा क्योंकि यह निश्चय नहीं है कि सृष्टि होगी या नहीं॥

(५)

यदि पहिले से ज्ञान है तो उसी के अनुसार सृष्टि होगी तो ईश्वर परतन्त्र हुआ॥

पैंतीसवां अभ्यास।

(१) सख्त, रक्वा, अभ्यास, विल्ली, युक्त, वस्त्र, शक्कर, पत्तल॥

(२) अतिरिक्त, पात्र, भ्रमण, मोह, राष्ट्र, सम्बन्ध, कल्याण; राज्य, तत्त्व, ग्राह्य॥

(३) स्वतंत्रता किस को प्रिय नहीं है। सिद्धान्तों का प्रचार करना कोई कठिन काम नहीं है। प्रकृति के दृश्य अत्यन्त मनोहर होते हैं। संस्कृत साहित्य अत्युत्तम और मनीय है। हिंदुस्तान के मनुष्य अत्यन्त स्वार्थ पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक भ्रमण करने में अनेक तीर्थ स्थान दृष्टि

तेईसवां अभ्यास।

(१) फसली, पसली, चसक, जोसन, सहन, सहज, आसन॥

(२) वासन, दासी, सत्संग, गृहस्थ, गोश्त, पोस्त, पिस्ता॥

(३) सब चीज़ लाओ। क्या सब चीज़ उसके पास थी। जब हम सब देखेंगे तब आपका कहना सुनेंगे। जब तब उसको देखने से क्या होता है। आप सब यहां बैठो। इस मौसिम में उसको कहां देखा॥

---

१९. य, र, ल, व॥ ये चार अन्तःस्थ वर्ण हैं। व्यंजन अक्षरों के साथ "अंकुश" लगा कर इन्हें लिखते हैं॥

शुरू में लगनेवाले अंकुश।

२०. खड़े व्यंजनों के बाईं तरफ़, सोए हुए व्यंजनो के नीचे और वक्र रेखा वाले व्यंजनों के अंदर की तरफ शुरू में एक "अंकुश" लगाने से इन व्यंजनों के अन्त में "र" जुड़ता है जैसे — क्र, । द्र, (थ्र॥

२१. खड़े व्यंजनों के दहिनी तरफ और सोए व्यंजनों के ऊपर की तरफ शुरू में एक "अंकुश" लगाने से इन व्यंजनों के अन्त में "य" जुड़ता है जैसे ╲ व्य, — क्य॥

२२. पूर्ण चिन्ह के लिये × ऐसा चिन्ह लिखा जाता है॥

और व्यय भी पूरा पड़ता है। पृथ्वी पर मनुष्य स्वतंत्रता का प्रेमी प्रकृति नियम के अनुसार होता है॥

२८. र, स, श, ल, ख, घ, ठ, ढ़, के शुरू में एक ऐसा चिन्ह (ʼ) यानी ह के नीचे का छोटा हिस्सा लगा देने से उनके शुरू में ह लग जाता है जैसे हाल, हार॥

२९. किसी शब्द में उसके स्वर के पहिले एक नुक्ता देने से उस स्वर के पहिले ह बोला जाता है जैसे हानि, हांफना, बृहद॥
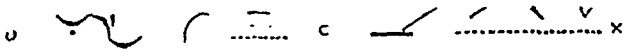
छत्तीसवां अभ्यास।

शब्दाक्षर॥ तो, मुझ या मुझे, परमात्मा, ऊआ ऊई, आई॥

(१) हार, हरकत, हठ, हटना, हल, हिलना, हरा॥

(२) हानि, मुसाहब, हाफना, बृहद, होनी, मज़हब, परहथ्यू॥

(३) मैं तो ईश्वर, परमात्मा, या खुदा, जो कुछ कहो, उसके भरोसे पर हूं॥

(४) बस जाना और आना यही तो काम है॥

चौबीसवां अभ्यास।

शब्दाक्षर॥ नहीं, मेरा, बहुत, लिये, हम, हमारा, हमारे, था, इत्यादि॥

(१) पात्र, घर, मित्र, वक्र, विद्रोह, विप्र, दरिद्री॥

(२) कबर, सबर, बरताव, परंतु, खबर, खंजर, वानर॥

(३) काफर, झरना, उभरना, भरना, डरना, निडर, कोठरी॥

(४)

हमारे खरगोस सुफेद हैं पर उनपर काले दाग हैं॥

(५)

आइए! हम नहीं जानते थे कि आप इस लिये आए हैं॥

पचीसवां अभ्यास।

(१) स्र, म्र, ष्ट्र, प्र, ह्र, स्त्र, श्र॥

(२) चम्र, मास्टर, नम्र, शास्त्र, ह्रास, नाम्र, फर्क॥

(३) मिस्टर, नश्तर, कसर, असर, समर, चर्म, वर्म, गर्म॥

(४) हमारे घर न आइए। मेरे लिये तो बहुत कुछ हैं। हम आप के साथ गये थे॥

(५) मुझे मालुम हुआ कि तुम गए और वह आई ॥

सैंतीसवां अभ्यास।

(१) हार, हरना, महल, टहलना, चहकना, समूह, हवा ॥

(२) हमारा, हवन, होनी, हफ्नी, हंसना, महाराज, सम्हलना, सलाहकार, मनोहरता ॥

(३) सुहृद और सहोदर में अन्तर है। हमजोलियों की सहायता से बहुत कुछ हाल हमको मालूम हो सकता है। हरी राम का सहोदर भाई हीरा लाल से हल जुताने की सलाह लेने और हरी घास करवाने हर दिन हाथी पर चढ़ कर आया करता था ॥

अड़तीसवां अभ्यास।

३०. द्विस्वर जब अलग बोले जाते हैं तो उनके प्रत्येक चिन्ह बतौर शब्दाक्षर के समझे जाते हैं ॥

आप	इस; इत्यादि . .
और	इसको . . .
आई	ईश्वर . . .
आइए . . .	उस . . . .

छब्बीसवां अभ्यास।

(१) काव्य, क्य, प्य, व्य, त्य, द्य, च्य ॥

(२) वाक्य, सत्य, महोदय, त्याज्य, पूज्य, वृत्य, यज्ञ ॥

(३) कैवल्य, गम्य, सभ्य, असभ्य, धैर्य, व्यक्ति, विज्य ॥

(४) आपने बहुत सत्य कहा था ॥

(५) विद्या देना बहुत पुण्य की बात है ॥

सत्ताईसवां अभ्यास।

(१) प्य, ह्य, न्य, च्य, स्य, त्य, ध्य, व्य ॥

(२) प्याल, व्यास, सह्य, न्याय, सत्य, पुण्य, गम्य, क्या ॥

(३) भूखप्यास इत्यादि सब को सहनी पड़ती है ॥ क्या आप मेरे काव्य को पढ़ेंगे। हम पुण्य का काम कहां करते ह ॥

अन्त में लगने वाले अंकुश।
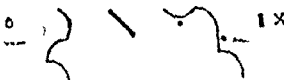
२३. खड़े व्यंजनों के बाईं तरफ, सोए हुए व्यंजनों के नीचे की तरफ, और वक्र रेखावाले व्यंजनों के अन्दर की

उसको
का; की, को या के
क्या
कोई; कि
खुदा
गा
जीव
जब
तुम
तुम्हारा
तब; तो
था या थी
ने
नहीं
पर
परमात्मा
बहुत
भाई या भाइयों
मेरा या मेरे
मैं या में
यह
यहां
लिये
वह
से
सब
है या हैं
हम
हमारा
हुआ या हुई
हूं
लेकिन
मुझ या मुझे

उन्तालीसवां अभ्यास।

किसी शब्द या अक्षर के अंत के सिरे पर एक बिंदु लगा देने से उसके पीछे "वाले या वाला" बोला जाता है। जैसे आनेवाला। जानेवाले॥

तरफ अन्त में एक छोटा "अंकुश" लगाने से इन व्यंजनों के अन्त "न" या "ल" लगता है जैसे वल या बन, फल या फन ॥

२४. खड़े व्यंजनों के दहिनी तरफ, सोए हुए व्यंजनों के ऊपर की तरफ, अन्त में एक छोटा सा "अंकुश" लगाने से इन व्यंजनों के अन्त में "व" लगता है जैसे पव, काव ॥

अठाईसवां अभ्यास ।

शब्दाक्षर ॥ जो /, भाई या भाईयो, कोई —, यह, यहां, लेकिन, हूं, पर ॥

(१) निर्बल, सबल, केवल, चांवल, चपल, सफल, कतल ॥

(२) निम्न, मग्न, प्रसन्न, स्वप्न, कथन, वदन, चंदन ॥

(३)

असल बात यह है कि यहां कोई भी नहीं आया था ॥

(४)

दोनो भाई मिल कर खेलो लेकिन लड़ना मत ॥

---

(१) सोनेवाले, खोनेवाले, देखनेवाला ॥

(२)

इस सहरवाले बहुत मालदार हैं ॥

(3)

चालीसवां अभ्यास ।

अयोध्या के राजा दसरथ थे। इनके चार लड़के थे जिनमें रामचन्द्र सब से बड़े थे। ये बड़े अच्छे स्वभाव के थे। अपने मां बाप का कहना मानते और अपने भाइयों को बड़ा प्यार करते थे। इनके पिता ने एक दिन अपनी रानी कैकेयी के धोखे में पड़ कर इन्हें चौदह बरस के लिये बनवास दिया। रामचन्द्र अपने छोटे भाई लक्ष्मण और अपनी स्त्री सीता के साथ बन में चले गए और चौदह बरस तक इधर उधर घूमते रहे। इस बीच में इन्होंने बड़े बड़े राक्षसों को मारा। इन राक्षसों का राजा रावण था। इसने अच्छे लोगों साधु सन्तों और ऋषियों को बड़ा दुःख दे रक्खा था। रामचन्द्र ने इसे लड़ाई में मारा और सब लोगों के दुःख को दूर किया। इसी तरह १४ बरस तक इन्होंने बड़े बड़े काम किए। अन्त में वे अपने घर लौट आए और अपने पिता की राजगद्दी के मालिक हुए ॥

उन्तीसवां अभ्यास।

(१) कल, वल, छल, जल, नल, दल, चल, पल ॥

(२) वन, ठन, तन, टन, हन, सन, जन, चुन ॥

(३) समान, सबल, सकल, चमन, जश्न, हरावल, बंदर, सुंदर ॥

(४) जो भाई छल करता है उसे कोई नहीं मानता ॥ वन ठन कर न रहना चाहिये । मैं सकल जन का भला चाहता हूं ॥

तीसवां अभ्यास।

(१) द्व, ह्व, ख्व, चू, ज्वर, स्वर, तत्व, अमरत्व ॥

(२) अदब, दानव, लकव, कुतब, वाजव, ज़जव, गजव ॥

(३) मैं यहां पर हूं ॥

(४) इसमें कुछ तत्व नहीं है ॥

इकतीसवां अभ्यास।

(१) सव, द्व, तव, आव, लव, पव, तव ॥

(२) स्वत्व, पार्थिव, सात्विक, स्वतंत्र, सदैव ॥

उसको . . .		भाई या भाइयों .	
का; की, को या के		मेरा या मेरे . .	
क्या		मैं या में . . .	
कोई; कि . .		यह	
खुदा		यहां	
गा		लिये	
जीव		वह	
जब		से	
तुम		सब	
तुम्हारा		है या हैं	
तब; तो		हम	
था या थी . .		हमारा	
ने		हुआ या हुई .	
नहीं		हूं	
पर		लेकिन	
परमात्मा		मुझ या मुझे . .	
बहुत			

उन्तालीसवां अभ्यास।

किसी शब्द या अक्षर के अंत के सिरे पर एक बिंदु लगा देने से उसके पीछे "वाले या वाला" बोला जाता है। जैसे आनेवाला। जानेवाले॥

(३) कोई तो अदब का काम करो। धर्म का तत्व जानना कठिन है। इस विश्व में सब नाशत्व को प्राप्त होगा। अमरत्व को कौन नहीं चाहता।

"स" लगाने की रीति।

२५. जिन व्यंजनों में "अंकुश" लगते हैं उनमें "स" वृत्त अंकुश के अंदर लगता है जिसमें विना अंकुशवाले व्यंजनों से फर्क रहे, जैसे ⌐ सबर, ⌐ सव्य, ⌐ शिखर, ⌐ वंश ॥

बत्तीसवां अभ्यास।

शब्दाक्षर ॥ तुम, तुम्हारा, खुदा,) ईश्वर ॥

(१) सब्र, पेशतर, विसतर, मिसत्री, सकरी, सद्र, सरल ॥

(२) कंस, वंस, विधंस, सदृश, सतर, स्त्री, खत्री ॥

(३) यह तुम्हारा घर है ॥

(४) तुम अपने देश को सेवा करो ॥

(१) सोनेवाले, खोनेवाले, देखनेवाला ॥

(२) । ×

इस सहरवाले वज्जत मालदार हैं ॥

(३) × ×

चालीसवां अभ्यास।

अयोध्या के राजा दसरथ थे। इनके चार लड़के थे जिनमें रामचन्द्र सब से बड़े थे। ये बड़े अच्छे स्वभाव के थे। अपने मां बाप का कहना मानते और अपने भाइयों को बड़ा प्यार करते थे। इनके पिता ने एक दिन अपनी रानी कैकेयी के धोखे में पड़ कर इन्हें चौदह बरस के लिये बनवास दिया। रामचन्द्र अपने छोटे भाई लछ्मण और अपनी स्त्री सीता के साथ बन में चले गए और चौदह बरस तक इधर उधर घूमते रहे। इस बीच में इन्होंने बड़े बड़े राक्षसों को मारा। इन राक्षसों का राजा रावण था। इसने अच्छे लोगों साधु सन्तों और ऋषियों को बड़ा दुःख दे रक्खा था। रामचन्द्र ने इसे लड़ाई में मारा और सब लोगों के दुःख को दूर किया। इसी तरह १४ बरस तक इन्होंने बड़े बड़े काम किए। अन्त में वे अपने घर लौट आए और अपने पिता की राजगद्दी के मालिक ज्ञए॥

एकतालीसवां अभ्यास।

ब्यालीसवां अभ्यास।

हाथी चौपायों में सब से बड़ा जानवर है। यह सात से दस फुट तक ऊंचा होता है और काले और कहीं कहीं सफेद रंग का भी होता है। इसकी गर्दन मोटी और सूंड़ लम्बी और टांगें मोटी होती हैं। सूंड़ से यह हाथ और नाक का काम लेता है। छोटी से छोटी चीज़ को यह अपनी सूंड़ से उठा सकता है। इसके दो तरह के दांत होते हैं एक खाने के और दूसरे दिखाने के। खाने के दांत मुंह के अन्दर होते हैं और दिखाने के दांत सूंड़ के बगल से कभी कभी नौ दस फुट तक बाहर निकले रहते हैं। इन दिखाने के दांतों की तरह तरह की चीज़े बनती हैं। हाथी सौ डेढ़ सौ बरस तक जीता रहता है और फल फूल पेड़ की पत्तियां खाता है। सब से प्यारी चीज़

इसे ग्वत है। गर्मी के दिनों में यह अपनी सूंड़ में पानी भर के अपने ऊपर उछाल लेता है और इसी तरह अपनी पीठ और सारे बदन को धो डालता है। इस पर अम्मारी और हौदे कस कर लोग चढ़ते हैं। सैकड़ों बरस पहिले लोग इसे रथ में जोतते थे। सिखाने से यह बहुत से काम करने लगता है और पालने से सीधा हो जाता है। यह बड़ा बुद्धिमान भी होता है॥

तेंतालीसवां अभ्यास।
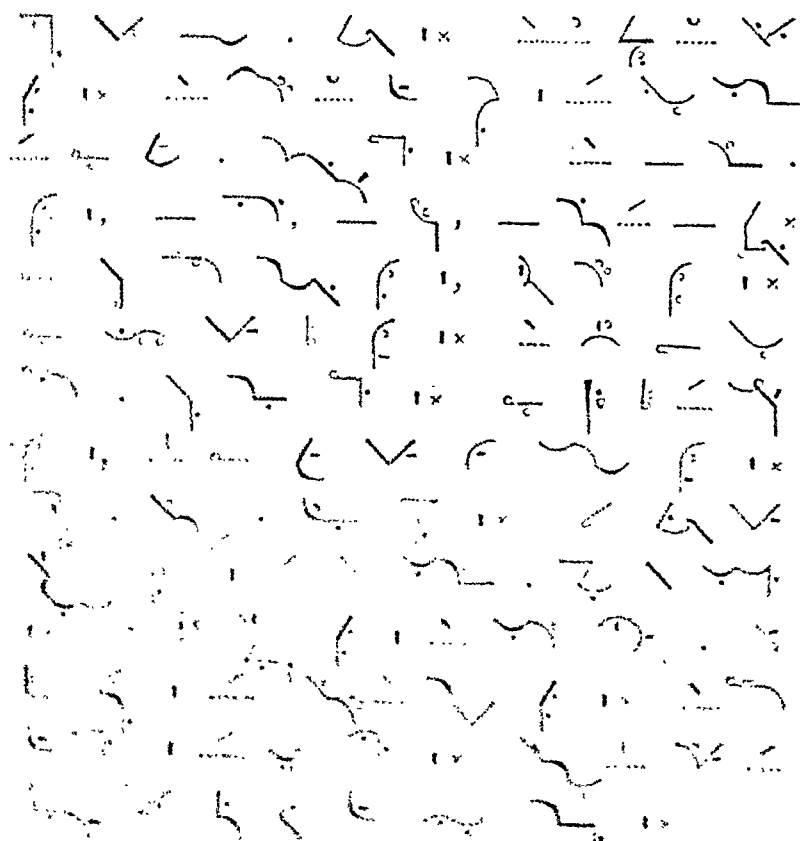
(व्याख्या) हे जीवात्मन्! जो परमात्मा तेरा अन्तर्यामी अमृतस्वरूप उपास्य है तेरे में व्यापक हो के भर रहा है, तेरे साथ है और तेरे से अलग है तथा मिल भी रहा है, जिस को तू नहीं जानता, क्योंकि जिस का तू शरीर है जैसे यह स्थूल शरीर जीव का है वैसे परमात्मा का तू भी शरीरवत् है, जो तेरे बीच में रह के तेरा नियन्ता है उस अन्तर्यामी को छोड़ के दूसरे पदार्थों की उपासना मत कर, जो अन्य देव अर्थात् ईश्वर से भिन्न श्रोत्रादि इन्द्रिय अथवा किसी देहधारी विद्वान् देव को ब्रह्म जाने अथवा उपासना करे वा ऐसा अभिमान करे कि मैं तो ईश्वर का उपासक नहीं, उस से मैं भिन्न हूं तथा यह मेरे से भिन्न है, उस से मेरा कुछ प्रयोजन नहीं, किंवा ईश्वर नहीं है, अथवा ऐसा कहता है कि मैं ही ब्रह्म हूं सो इन्द्रियों वा देहधारी विद्वानों का पशु है जैसा कि बैल वा गर्दभ वैसा वह मनुष्य है जो परमेश्वर की उपासना नहीं करता, इत्यादि प्रकरण विचार के विना चार अक्षर को पकड़ के चोरवत् कपोलकल्पित अर्थ का प्रमाण नहीं होता है, ग्रन्थविस्तर भय से अधिक नहीं लिखते हैं, यह भी यजुर्वेद का वचन नहीं है किन्तु शतपथ ब्राह्मण का यह पूर्वोक्त वचन है वैसे ही "तत्त्वमसि" यह भी सामवेद का वचन नहीं है किन्तु साम ब्राह्मणान्तर्गत छान्दोग्य उपनिषद् का है इसका भी पूर्वापर

चौआलीसवां अभ्यास।
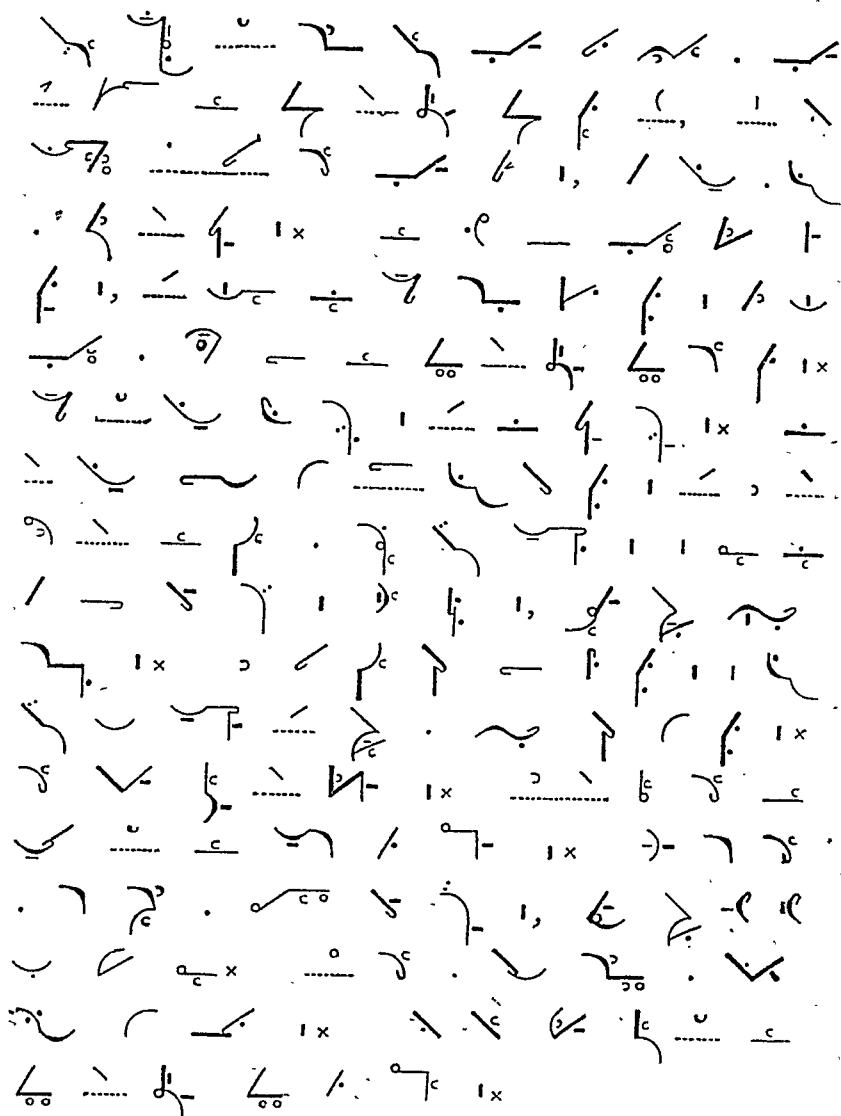
प्रकरण छोड़ के नवीन वेदान्तियों ने अनर्थ कर रक्खा है. इस में ऐसा प्रकरण है कि:—

"स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदं सर्वं तत् सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति"

उद्दालक अपने श्वतकेतु पुत्र को उपदेश देते हैं कि—सो पूर्वोक्त परमात्मा सब जगत् का आत्मा है, सो कैसा है कि—जो "अणिमा" अत्यन्त सूक्ष्म है कि प्रकृति, आकाश और जीवात्मा से भी अत्यन्त सूक्ष्म तथा वही सत्य है, हे श्वेतकेतो ! यही सब जगत् का अन्तर्यामी आधारभूत सर्वाधिष्ठान है । सो ब्रह्म सनातन, निर्विकार, सत्यस्वरूप, अविनश्वर है । (प्रश्न) जैसे ईश्वर सब जीवादि जगत् का आत्मा है वैसे ईश्वर का भी कोई अन्य आत्मा है वा नहीं ? (उत्तर) "स आत्मा" परमेश्वर का आत्मान्तर कोई नहीं, किन्तु उस का आत्मा वही है, हे श्वेतकेतो ! जो सर्वात्मा है सो तेरा भी अन्तर्यामी अधिष्ठान आत्मा वही है अर्थात्—

"तदन्तर्यामी तदधिष्ठानस्तदात्मकस्त्वमसीति फलितोर्थः"

तत्सहचरण वा तत्सहचार उपाधि इस वाक्य में जानना ।

यष्टिकां भोजय, अर्थात् यष्टिकया सह चरितं ब्राह्मणं भोजयति गम्यते,तथैव तद् ब्रह्म सहचरित-

* ओ३म् *

वेदान्तिध्वान्तनिवारणम् ॥

अर्थात्

आधुनिक वेदान्तियों के मन में वेदादि सत्य-
शास्त्रों के पठन पाठन छूटने से जो ध्वान्त
अर्थात् अन्धकार फैलगया है उसका निवारण

जिसमें

श्रौतमार्गानुकूल वादानुवादसहित
वेदान्त मत का निरूपण

शुद्ध होकर
वैदिक यन्त्रालय
अजमेर
में
मुद्रित हुआ
संवत् १९६५ आषाढ़ कृष्णा
छठीवार १०००
मूल्य)||| डाकव्यय)||

स्त्वमसीत्यवगन्तव्यम्। तथा, अहं ब्रह्मास्मीत्यत्राहं ब्रह्मसहचारितो वा ब्रह्मस्थोऽस्मीति विज्ञेयोऽर्थः। तात्स्थ्योपाधिना यथा मञ्चाः क्रोशन्तीत्यत्र मञ्चस्थाः क्रोशन्तीति विज्ञायते, एवं यत्र यत्रासम्भव आगच्छेत्तत्र तत्रोपाधिनाऽर्थो बोद्धव्यः। अत्र न्यायदर्शनस्य द्वितीयाध्यायस्थं चतुष्षष्टितमं सूत्रं प्रमाणमस्ति "सहचरणस्थानतादर्थ्यवृत्तमानधारणसामीप्ययोगसाधनाधिपत्येभ्यो ब्राह्मणमञ्चकटराजसक्तुचन्दनगङ्गाशाटकान्नपुरुषेष्वतद्भावेऽपि तदुपचारः" "एषु दशविधासम्भवेषु वाक्यार्थेषु दशोपाधयो भवन्तीति वेद्यम्"

यहां भी सर्वशक्तिमत्त्वअभ्रान्त्यादिदोषरहितत्वादिगुणवाले ब्रह्म का संभव जीव में कभी नहीं होसकता है, क्योंकि अल्पशक्तिमत्व, भ्रान्त्यादि दोषसहितत्वादि गुणवाला जीव है, इससे ब्रह्म जीव की एकता मानना केवल भ्रान्ति है, चौथा "अयमात्मा ब्रह्म" इस को अथर्ववेद का वाक्य बतलाते हैं। यह अथर्ववेद का तो वाक्य नहीं है किन्तु माण्डूक्योपनिषदादिकों का है, इस का तो स्पष्ट अर्थ है कि विचारशील पुरुष अपने अन्तर्यामी को प्रत्यक्ष ज्ञान से देख के कहता है कि यह जो

छन्दः शिखरिणी ॥

दया पूर्वोपेतं परमपरमाख्यातुमनघाः । गिराथा नंजानन्त्यमातिमताविध्वंसावि- धिना ॥ स वेदान्तश्रान्तानभिनवम- तभ्रान्तमनसस्समुद्धर्त्तुं श्रौतं प्रकट- यति सिद्धान्तमनिशम् ॥ १ ॥

मेरा अन्तर्यामी है यही ब्रह्म है अर्थात् मेरा भी यह आत्मा है अपने उपास्य का प्रत्यक्षानुभवविधायक जीव के समझने के लिये यह वाक्य है, तथा —

"योऽसावादित्ये पुरुषस्सोऽसावहम्"

यह यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का वाक्य है । जो आदित्य में अर्थात् प्राण में पुरुष है वह मैं जीवात्मा हूं, "आदित्यो वै प्राणः" शतपथब्राह्मणे । तथा—

"आदित्यो ह वै प्राणो रयिरेव चन्द्रमाः"

इति मुण्डकोपनिषदि ॥

इस प्रमाण से जो प्राण में पूर्ण, प्राण में सोता, प्राणका प्रेरक सो जीवात्मा पुरुष मैं हूं ।

"यद्वा परमेश्वरोऽभिवदति हे जीवाः । यः असौ आदित्ये बाह्ये सूर्ये किंवा अन्तर्गते प्राणे सः असौ अहमेवास्मीति मां वित्त"

हे जीवो ! मुझ को बाहर और भीतर तुम लोग जानो, कि सूर्यादि सब स्थूल जगत् तथा आकाश और जीवादि सूक्ष्म जगत् के बीच में मैं जो ईश्वर सो परिपूर्ण हूं, ऐसा तुम लोग मुझ को जानो, क्योंकि इस मन्त्र के आगे "अग्ने नयेत्यादि" मोक्षार्थ ईश्वर की प्रार्थना कथित है तथा "ओं खं ब्रह्म" ओं जिस का सर्वोत्तम नाम है, खं आकाश की नाईं व्यापक सर्वाधिष्ठान जो है सो सब से बड़ा सब जीवों का उपास्य ब्रह्म है ॥

ओ३म्

अथ वेदान्तिध्वान्तनिवारणम् ॥

नवीनतर वेदान्ती लोग कपोलकल्पित अर्थ अनर्थरूप करके जगत् की हानिमात्र कर देते हैं, तथा मनुष्यों को हठ अभिमानादि दोषों में प्रवृत्त कराके दुःखसागर में डुबा देते हैं, सो केवल अल्पज्ञानी लोग इन के उपदेशजाल में फँस के मत्स्यवत् मरण क्लेशयुक्त होके अधर्म्म, अनैश्वर्य्य और पराधीनतादि दुःखस्वरूप कारागृह में सदा बद्ध रहते हैं। एक बात इन की यह है कि जीव को ब्रह्म मानना दूसरी यह है कि स्वयं पाप करें और कहें कि हम अकर्ता और अभोक्ता हैं, तीसरी बात यह है कि जगत् को मिथ्या कल्पित मानते हैं कि मोक्ष में जीव का लय मानते हैं तथा न वास्तव मोक्ष और न बन्ध इत्यादि अनेक इन की मिथ्या बातें हैं परन्तु नमूने के लिये इन चार बातों का मिथ्यात्व संक्षेप से दिखलाते हैं:—

(१) जीव को ब्रह्म मानने में प्रथम इस वाक्य का प्रमाण देते हैं कि "प्रज्ञानमानन्दब्रह्म" इस को ऋग्वेद का वाक्य कहते हैं, परन्तु ऋग्वेद के आठों अष्टकों में यह वाक्य कहीं नहीं है किन्तु वेद का व्याख्यान जो ऐतरेय ब्राह्मण उस में यह वाक्य है, सो ऐसा पाठ है कि "प्रज्ञानं ब्रह्म" सो वाक्य में ब्रह्म का स्वरूप निरूपण किया है कि "प्रज्ञाएं

'सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीत'

यह छान्दोग्योपनिषद् का वचन है, इस का अर्थ भी तात्स्थ्योपाधि से करना ॥

"इदं सर्वं जगत् ब्रह्म" अर्थात ब्रह्मस्थं यद्वा "इदं यज्जगदाधिष्ठानं तत्सर्वं ब्रह्मैव" नात्र किञ्चिद्वस्त्वन्तरं मिलितमिति विज्ञेयम्, यथेदं सर्वं घृतमेव नेदं तैलादिभिर्मिश्रितमिति ॥

यह सब जगत् ब्रह्म नाम ब्रह्मस्थ ही है, अथवा यह प्रत्यक्षान्तर्गामी जो चेतन सो केवल एक रस ब्रह्म वस्तु है, इस में दूसरी कोई वस्तु मिली नहीं जैसे किसी ने कहा कि यह सब घृत है अर्थात् तैलादिक से मिश्रित नहीं है, वैसे उस ब्रह्म की उपासना शान्त हो के जीव अवश्य करैं और किसी की नहीं।

(२) दूसरी यह बात है कि इस शरीर में कर्त्ता और भोक्ता जीव ही है, क्योंकि अन्य सब बुद्ध्यादिक जड़ पदार्थ जीवाधीन हैं सो पाप और पुण्य का कर्त्ता और भोक्ता जीव से भिन्न कोई नहीं, क्योंकि बृहदारण्यकादि उपनिषद् तथा व्याससूत्र और वेदादिशास्त्रों में यही सिद्धान्त है।

"श्रोत्रेण शृणोति, चक्षुषा पश्यति, बुद्ध्या निश्चिनोति, मनसा सङ्कल्पयति"

इत्यादिक प्रतिपादन किये हैं, जैसे "असिना छिनत्ति शिरः" तलवार से काट किसी का शिर काटता है, इस में का-

यस्मिन् तत्प्रज्ञानं अर्थात् प्रकृष्टज्ञानस्वरूपम्" (व्याख्या) जिस में प्रकृष्ट सर्वोत्तम अनन्त ज्ञान है वह प्रज्ञान कहावे अर्थात् प्रकृष्टज्ञानस्वरूप प्रज्ञान विशेषण से ऐसा निश्चित हुआ कि जिस को कभी अविद्यान्धकार अज्ञान के लेशमात्र का भी सम्बन्ध नहीं होता, न हुआ और न होगा "ब्रह्म" जो सब से वृद्ध (बड़ा) और सब जगत् का बढ़ानेवाला, स्वभक्तों को अनन्त मोक्षसुख से अनन्तानन्द में सुख बढ़ानेवाला तथा व्यवहार में भी (बृहत्) बड़े सुख का देनेवाला, ऐसा परमात्मा का स्वभाव और स्वरूप है, इस वाक्य का नाम "महावाक्य" नवीन वेदान्तियों ने रक्खा है सो अप्रमाण है क्योंकि किसी ऋषिकृत ग्रन्थ में इन का "महावाक्य" नाम नहीं लिखा है "अहं ब्रह्मास्मि" इस वाक्य का वेदान्ती लोग ऐसा अर्थ करते हैं कि मैं ब्रह्म हूं अर्थात् भ्रान्ति से मैं जीव बना था, सो अब मैंने जान लिया कि मैं साक्षात् ब्रह्म हूं। यह अनर्थ इन का बिलकुल खोटा है क्योंकि पूर्वापर ग्रन्थ का सम्बन्ध देखे विना चोर की नाईं बीच में से एक टुकड़ा लेके अपना मतलबसिन्धु का अर्थ करके स्वार्थसिद्धि करते हैं। देखो इस वचन का पूर्वापर संबन्ध इस प्रकार का है:—

शतपथ ब्राह्मण काण्ड १४ प्रपाठक २ ब्राह्मण २ कण्डिका १८ "आत्मेत्येवोपासीत। अत्र ह्येते सर्वऽएकं भवन्ति" इत्युपक्रम्य—तदेतत् प्रेयः

टने का कर्त्ता मनुष्य ही है, काटने का साधन तलवार है तथा काटने का कर्म शिर है, इस में पाप और दण्ड मनुष्य (जो मारनेवाला है उस) को होता है, तलवार को नहीं, इसी प्रकार श्रोत्रादिकों से पाप पुण्य का कर्त्ता भोक्ता जीव ही है अन्य नहीं; यह गौतम मुनि तथा व्यासादिकों ने सिद्ध किया है कि:-

"इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गमिति"

(ये छः) इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान आत्मनिष्ठ हैं "तयोरन्यः पिप्पलं स्वद्वत्ति" इस में भी जीव सुख दुःख का भोक्ता और पाप पुण्य का कर्त्ता सिद्ध होता है, अनुभव से भी जीवात्मा ही कर्त्ता और भोक्ता है, इस में कुछ संदेह नहीं कि केवल इन्द्रियाराम हो के विषयभोगरूप स्वमतलब साधने के लिये यह बात बनाई है कि—जीव अकर्त्ता, अभोक्ता और पाप पुण्य से रहित है, यह बात नवीन वेदान्ती लोगों की मिथ्या ही है।

(३) तीसरे इन की यह बात है कि जगत् को मिथ्या कल्पित कहते और मानते हैं, सो इन का केवल अविद्यान्धकार का माहात्म्य है। ग्रन्थ अधिक न हो इसलिये जगत् सत्य होने में एकही प्रमाण पुष्कल है:—

सन्मूलाः सोम्येमाः प्रजाः सदायतनाः सत्प्रतिष्ठाः॥

पुत्रात् प्रेयो वित्तात्प्रेयोऽन्यस्मात् सर्वस्मादन्त-
रतरं यदयमात्मा स योऽन्यमात्मनः प्रियं ब्रुवा-
णं ब्रूयात् प्रियꣳरोत्स्यतीतीश्वरोह तथैव स्यादा-
त्मानमेव प्रियमुपासीत स य आत्मानमेव प्रिय-
मुपास्ते न हास्य प्रियं प्रमायुकं भवति ॥ १९ ॥
तदाहुः । यद् ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्यन्तो मनु-
ष्या मन्यन्ते किमु तद्ब्रह्मावेद्यस्मात्तत् सर्वमभव-
दिति ॥ २० ॥ ब्रह्म वाऽइदमग्रऽआसीत् तदात्मा-
नमेवावेदहं ब्रह्मास्मीति तस्मात्तत् सर्वमभवत्तद्यो
यो देवानां प्रत्यबुध्यत स एव तदभवत्तथर्षीणां
तथा मनुष्याणाम् ॥ २१ ॥ तद्धैतत् पश्यन्नृषिर्वाम-
देवः प्रतिपेदे । अहं मनुरभवꣳसूर्यश्चेति तदिदम-
प्येतर्हि य एवं वेदाऽहं ब्रह्मास्मीति स इदꣳसर्वं
भवति तस्य ह न देवाश्च नाभूत्या ईशतऽआत्मा
ह्येषाꣳ स भवत्यथ योऽन्यां देवतामुपास्तेऽन्यो-
ऽसावन्योऽहमस्मीति न स वेद यथा पशुरेवꣳ स
देवानां यथा ह वै बहवः पशवो मनुष्यं भुञ्ज्यु-
रेवमेकैकः पुरुषो देवान् भुनक्त्येकस्मिन्नेव पशा-
वादीयमानेऽप्रियं भवति किमु बहुषु तस्मादेषां
तन्न प्रियं यदेतन्मनुष्या विदुः ॥ २२ ॥

यह छान्दोग्य उपनिषद् का वचन है। (अर्थ) जिसका मूल सत्य है उसका वृक्ष मिथ्या कैसे होगा तथा जो परमात्मा का सामर्थ्य जगत् का कारण है सो नित्य है क्योंकि परमात्मा नित्य है तो उस का सामर्थ्य भी नित्य है, उसी से यह जगत् हुआ है सो यह मिथ्या किसी प्रकार से नहीं होता. जो ऐसा कहो कि "आदावन्ते च यन्नास्ति वर्त्तमानेऽपि तत् तथा" सो यह बात अयुक्त है, क्योंकि जो पूर्व नहीं है सो फिर नहीं आ सकता, जिस कूप में जल नहीं है उससे पात्र में जल नहीं आता, इसलिये ऐसा जानना चाहिये कि ईश्वर के सामर्थ्य में अथवा सामर्थ्यरूप जगत् पूर्व था, सो इस समय है और आगे भी रहेगा। कोई ऐसा कहे कि संयोगजन्य पदार्थ संयोग से पूर्व नहीं हो सकता वियोगान्त में नहीं रहता सो वर्त्तमान में भी नहीं सो जानना चाहिये। इसका यह उत्तर है कि विद्यमान सत् पदार्थों का ही संयोग होता है, जो पदार्थ नहीं हो उनका संयोग भी नहीं होता. इससे वियोग के अन्त में भी पृथक् २ वे पदार्थ सदैव रहते हैं कितना ही वियोग हो तो भी अन्त में अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थ रह ही जाता है, इसमें कुछ सन्देह नहीं। इतना कोई कह सकता है कि संयोग और वियोग तो अनित्य हुआ सो भी स्वीकार करने के योग्य नहीं। क्योंकि जैसे वर्त्तमान में संयुक्त पदार्थ हो के पृथिव्यादि जगत् बना है सो पदार्थों के मिलने के स्वभाव के बिना कभी नहीं मिल सकते, तथा वियोग होने के बिना वियुक्त नहीं हो सकते सो मिलना और पृथक् होना यह पदा-

"अतति सर्वत्र व्याप्नोतीत्यात्मा परमेश्वरः" इस प्रकरण में यह है कि सब जीव परमेश्वर की उपासना करैं और किसी की नहीं क्योंकि सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी जो परब्रह्म वह सबसे प्रियस्वरूप है उसी को जानना, पुत्र, वित्त, धन तथा सब जगत् के सत्य पदार्थों से वही ब्रह्म प्रियतर है, तथा अन्तरतर आत्मा का अन्तर्यामी परमात्मा है, जो कि अपने सबों का आत्मा है जो कोई इस आत्मा से अन्य को प्रिय कहता है उस के प्रति "ब्रूयात्" कहे कि परमात्मा से तू अन्य को प्रिय बतलाता है सो तू दुःखसागर में गिर के सदा रोवेगा और जो कोई परमात्मा को छोड़ के अन्य की उपासना वा प्रीति करेगा सो सदा रोवेगा जो पाषाणादि जड़ पदार्थों की उपासना करेगा सो सदैव रोवेगा।

"आत्मानमेव प्रियमुपासीत स यथात्मानमेव प्रियमुपासते न हास्य प्रियं प्रमायुकं भवति"

और जो सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, निराकार, अज इत्यादि विशेषण युक्त परमेश्वर की उपासना करता है वह इस लोक जन्म तथा परलोक परजन्म तथा मोक्ष में सर्वानन्द को प्राप्त होता है और उसी ईश्वर की कृपा से "ईश्वरो ह तथैव स्यात्" मनुष्यों के बीच में परमैश्वर्य को प्राप्त हो के समर्थ सत्तावान् होता है" अन्य नहीं, तथा "न हास्याप्रियं प्रमायुकं भवति" यह जो परब्रह्म का उपासक उसका आनन्द सुख "प्रमा-

का गुण ही है, जैसे मिट्टी में मिलने का गुण होने से घटादि पदार्थ बनते हैं बालुका से नहीं, सो मिट्टी में मिलने और अलग होने का गुण ही है सो गुण सहज स्वभाव से है वैसे ईश्वर का सामर्थ्य जिससे यह जगत् बना है उसमें संयोग और वियोगात्मक गुण सहज (स्वाभाविक) ही है, इस से निश्चित हुआ कि जगत् का कारण जो ईश्वर का सामर्थ्य सो नित्य है तो उस के वियोग आदि गुण भी नित्य हैं, इस से जो जगत् को मिथ्या कहते हैं उन का कहना और सिद्धान्त मिथ्याभूत है ऐसा निश्चित जानना ।

(४) चौथी इन की यह बात है कि जीव का लय ब्रह्म में मोक्षसमय में मानते हैं, जैसे समुद्र में बहुत बिन्दु का मिलना यह भी उनकी बात मिथ्या है इस के मिथ्या होने में प्रमाण हैं, परन्तु ग्रन्थविस्तार न हो इसलिये संक्षेप से लिखते हैं, कठवल्ली तथा बृहदारण्यकादि उपनिषदों में मोक्ष का निरूपण किया है कि:-

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह ।
बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम् ॥

(अर्थ) जब जीव का मोक्ष होता है तब पांच ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान मन के साथ अर्थात् विज्ञान के साथ स्थिर हो जाता है और बुद्धि जो निश्चयात्मक वृत्ति सो चेष्टा न करे, अर्थात् शुद्ध

युक्त" नष्ट कभी नहीं होता किन्तु उस को सदैव स्थिर सुख रहता है क्योंकि "अत्र होते सर्व एकं भवन्ति" जिस ब्रह्मज्ञान में सब परस्पर प्रीतिमान् हो के जैसा अपने को सुख वा दुःख, प्रिय और अप्रिय जान पड़ता है वैसा ही सब प्राणीमात्र का सुख और दुःख तुल्य समझ के न्यायकारित्वादिगुणयुक्त और सब मनुष्यमात्र के सुख में एकीभूत होके एकरूप सुखोन्नति करने में प्रयत्न सब करते हैं क्योंकि जैसा अपना आत्मा है वैसा सब के आत्माओं को वह जानता है "तदाहुः" इत्यादि जो मनुष्य ब्रह्मविद्यायुक्त हैं वे ऐसा कहते हैं कि परमेश्वर के सामर्थ्य से सब जगत् उत्पन्न हुआ और सब जगत् की उत्पत्ति करनेवाला वही है, ऐसा ब्रह्मविद्यावालों का निश्चय है, सब जगत् में "तद् ब्रह्मावेत्" व्याप्त हो के सब की रक्षा कर रहा है, "किंतु" और कोई अन्य जगत् का कारण नहीं, "ब्रह्म वा इदमित्यादि०" सृष्टि की आदि में एक सर्वशक्तिमान् ब्रह्म ही वर्त्तमान था सो अपने आत्मा को "अहं ब्रह्मास्मीति सदैवावेत्" स्वस्वरूप का विस्मरण उस को कभी नहीं होता, उस परमात्मा के सामर्थ्य से सब जगत् उत्पन्न हुआ, ऐसा विद्वानों के बीच में से जो ब्रह्म अविद्यानिद्रा से उठके जानता है सो ही ब्रह्मानन्द सुखयुक्त होता है, तथा ऋषि और मनुष्य इन के बीच में जो अज्ञाननिद्रा से उठ के ब्रह्मविद्यारूप प्रकाश को प्राप्त होता है, सो ब्रह्म के नित्य सुख को प्राप्त होता है, "तं

ज्ञानस्वरूप जीवात्मा परमात्मा में परमानन्दस्वरूपयुक्त हो के सदा आनन्द में रहता है, इसी को परमगति अर्थात् मोक्ष कहते हैं। सो अन्यत्र भी कहा है कि:—

परमज्योतिरुपसम्पद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते। इति श्रुतिर्बृहदारण्यकस्य॥

परं ज्योति जो परमात्मा उसको "उपसंपद्य" अर्थात् अत्यन्त समीपता को प्राप्त होके "स्वेन रूपेण" अर्थात् अविद्यादि दोषों से पृथक् होके शुद्ध युक्त, ज्ञानस्वरूप और स्वसामर्थ्यवाला जीव मुक्त हो जाता है। यही स्वरूपशारीरक सूत्रों के चतुर्थाध्याय के चतुर्थपाद में निरूपण किया है कि:—

अभावं बादरिराह ह्येवम्॥

मोक्ष समय में मन को छोड़ के अन्य इन्द्रिय वा शरीरादि के साथ नहीं रहते किन्तु मन तो रहता ही है औरों का अभाव होता है, यह निश्चय बादरि आचार्य का है। तथा:—

भावं जैमिनिर्विकल्पामननात्॥

जैमिनि आचार्य का यह मत मोक्षविषयक है कि जैसे मोक्ष में मन जीव के साथ रहता है वैसे इन्द्रियां तथा स्वशक्तिस्वरूप शरीर का सामर्थ्य भी मोक्ष में रहता है अर्थात् शुद्ध स्वाभाविक सामर्थ्ययुक्त जीव मोक्ष में भी रहता है। तथा बादरायण (व्यासजी) का मत ऐसा है कि:—

त्यादि०" इस ब्रह्म को वामदेव ऋषि देखता और प्राप्त हुआ मैं मनु और सूर्य्यनामक ऋषि देहधारी अथवा सूर्यलोकस्थ जन्मवाला हुआ था, ऐसा विज्ञान समाधिस्थ परमेश्वर के ध्यान में तत्पर जो वामदेव ऋषि उस को प्राप्त हुआ था, सो यह विज्ञान जिस को इस प्रकार से होगा सो भी इस प्रकार जानेगा कि "य एवं वेदाहं ब्रह्मास्मीति" मैं ब्रह्म हूं अर्थात् ब्रह्मस्थ हूं कि मेरे बाहर और भीतर ब्रह्म ही व्यापक (भर रहा) है, जो इस प्रकार ज्ञानवाला पुरुष होता है सो इस सब सख को प्राप्त होता है उस के सामने अनैश्वर्यवाले जो देव इन्द्रिय वा अन्य विद्वान् ऐश्वर्यवाले नहीं होते किन्तु ऐसा जो ब्रह्म का उपासक सो इन इन्द्रिय और अन्य विद्वानों का आत्मा अर्थात् प्रियस्वरूप होता है, जैसे आकाश से घर भिन्न नहीं होता तथा आकाश घर से भिन्न नहीं और आकाश तथा घर एकभी नहीं किन्तु पृथक् २ दोनों हैं, एवं जीवात्मा और परमात्मा व्याप्यव्यापकसम्बन्ध से भिन्न वा अभिन्न नहीं हो सकता, सो इसी बृहदारण्यक के छठे प्रपाठक में स्पष्ट लिखा है सो यह वचन है:—

"य आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोन्तरो यमात्मा न वेद यस्यात्मा शरीरं य आत्मानमन्तरो यमयति स त आत्मान्तर्याम्यमृतः"

द्वादशाहवदुभयविधं बादरायणोतः ॥

जैसे मृत शौच की निवृत्ति के पश्चात् द्वादशवां जो दिन सो सत्रयागरूप माना है और भिन्न भी माना जाता है, उस दिन में यज्ञ के भाव और अभाव दोनों हैं, तद्वत् मोक्ष में भी भाव और अभाव रहता है, अर्थात् स्थूल शरीर तथा अविद्यादि क्लेशों का अत्यन्त अभाव और ज्ञान तथा शुद्ध स्वशक्ति का भाव सदा मोक्ष में बना रहता है । सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप परमात्मा के साथ सब जन्म मरणादि दुःखों से छूट के सदा आनन्द में युक्त जीव रहता है, यह बादरायण जो व्यासजी उन का मत है । और गौतम ऋषि का भी ऐसा ही मत है । न्यायदर्शन अ० १ । आ० १ ॥

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः । २ । बाधनालक्षणं दुःखम् । २१ । तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः ॥ २२ ॥

मिथ्या ज्ञान ऐसा है कि जड़ में चेतनबुद्धि और चेतन में जड़बुद्धि, इत्यादि अनेक प्रकार का मिथ्या ज्ञान है उसकी निवृत्ति होने से अविद्यादि जीव के दोष निवृत्त हो जाते हैं, दोष की निवृत्ति होने से प्रवृत्ति जो कि विषयाशक्ति और अन्याय में आशक्त है वह निवृत्ति हो जाती है प्रवृत्ति के छूटने से जन्म छूट जाता है जन्म के छूटने से दुःख छूट जाता है, सब दुःखों के

छूटने से अपवर्ग जो मोक्ष वह यथावत् होता है। बाधना, विविध प्रकार की पीड़ा अर्थात् जो दुःख हैं उन की अत्यन्त निवृत्ति के होने से जीव को अपवर्ग जो मोक्ष ईश्वर के आधार में अत्यन्तानन्द वह सदा के लिये प्राप्त होता है, इसका नाम अपवर्ग अर्थात् मोक्ष है, इत्यादिक अनेक प्रमाण हैं कि मोक्ष में जीव का लय नहीं होता, किन्तु अत्यन्तानन्दरूप जीव रहता है एक अन्य भी प्रमाण देते हैं कि: —

"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन्। सोऽश्नुते सर्वान् कामान् ब्रह्मणा सह विपश्चितेति" तैत्तिरीयोपनिषद्वचनम्॥

जो जीव सत्य, ज्ञान और अनन्तस्वरूप ब्रह्म सर्वान्तर्यामी को स्वबुद्धि ज्ञान में निहित (स्थित) जानता वा प्राप्त होता है वह परम व्योम व्यापकस्वरूप जो परमात्मा उन में मोक्ष समय में स्थित होता है पश्चात् सर्वविद्यायुक्त, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् जो ब्रह्म उस के साथ सब कामों को प्राप्त होता है अर्थात् सब दुःखों से छूटके परमेश्वर के साथ सदानन्द में रहता है। जो लोग जीव का लय मानते हैं, उन के मत में अनिर्मोक्षप्रसङ्ग दोष आता है, तथा मोक्ष के साधन भी निष्फल हो जाते हैं, क्योंकि जैसे सृष्टि के पूर्व ब्रह्म मुक्त था, वही अविद्याजन्य अज्ञानोपाधि के साथ होने से बद्ध हो गया है। वैसे ही प्राप्त-

द्वादशाहवदुभयविधं बादरायणोतः ॥

जैसे मृत शौच की निवृत्ति के पश्चात् द्वादशवां जो दिन सो सत्रयागरूप माना है और भिन्न भी माना जाता है, उस दिन में यज्ञ के भाव और अभाव दोनों हैं, तद्वत् मोक्ष में भी भाव और अभाव रहता है, अर्थात् स्थूल शरीर तथा अविद्यादि क्लेशों का अत्यन्त अभाव और ज्ञान तथा शुद्ध स्वशक्ति का भाव सदा मोक्ष में बना रहता है । सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप परमात्मा के साथ सब जन्म मरणादि दुःखों से छूट के सदा आनन्द में युक्त जीव रहता है, यह बादरायण जो व्यासजी उन का मत है । और गौतम ऋषि का भी ऐसा ही मत है । न्यायदर्शन अ० १ । आ० १ ॥

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरापायादपवर्गः । २ । बाधनालक्षणं दुःखम् । २१ । तदत्यन्तविमोक्षोऽपवर्गः ॥ २२ ॥

मिथ्या ज्ञान ऐसा है कि जड़ में चेतनबुद्धि और चेतन में जड़बुद्धि, इत्यादि अनेक प्रकार का मिथ्या ज्ञान है उसकी निवृत्ति होने से अविद्यादि जीव के दोष निवृत्त हो जाते हैं, दोष की निवृत्ति होने से प्रवृत्ति जो कि विषयाशक्ति और अन्याय में आशक्त है वह निवृत्ति हो जाती है प्रवृत्ति के छूटने से जन्म छूट जाता है जन्म के छूटने से दुःख छूट जाता है, सब दुःखों के

आर्य्यसमाज के नियम।

(१)—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदिमूल परमेश्वर है ॥

(२)—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है ॥

(३)—वेद सत्यविद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्य्यों का परम धर्म है ॥

(४)—सत्य ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ॥

(५)—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें ॥

(६)—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ॥

(७)—सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्त्तना चाहिये ॥

(८)—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ॥

(९)—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ॥

(१०)—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ॥

छूटने से अपवर्ग जो मोक्ष वह यथावत् होता है । बाधना, विविध प्रकार की पीड़ा अर्थात् जो दुःख हैं उन की अत्यन्त निवृत्ति के होने से जीव को अपवर्ग जो मोक्ष ईश्वर के आधार में अत्यन्तानन्द वह सदा के लिये प्राप्त होता है, इसका नाम अपवर्ग अर्थात् मोक्ष है, इत्यादिक अनेक प्रमाण हैं कि मोक्ष में जीव का लय नहीं होता, किन्तु अत्यन्तानन्दरूप जीव रहता है एक अन्य भी प्रमाण देते हैं कि: —

"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन् । सोऽश्नुते सर्वान् कामान् ब्रह्मणा सह विपश्चितेति" तैत्तिरीयोपनिषद्वचनम् ॥

जो जीव सत्य, ज्ञान और अनन्तस्वरूप ब्रह्म सर्वान्तर्यामी की स्वबुद्धि ज्ञान में निहित (स्थित) जानता वा प्राप्त होता है वह परम व्योम व्यापकस्वरूप जो परमात्मा उन में मोक्ष समय में स्थिर होता है पश्चात् सर्वविद्यायुक्त, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् जो ब्रह्म उस के साथ सब कामों को प्राप्त होता है अर्थात् सब दुःखों से छूटके परमेश्वर के साथ सदानन्द में रहता है जो लोग जीव का लय मानते हैं, उन के मत में अनिर्मोक्षप्रसङ्ग दोष आता है, तथा मोक्ष के साधन भी निष्फल हो जाते हैं, क्योंकि जैसे सृष्टि के पूर्व ब्रह्म मुक्त था, वही अविद्याभ्रम अज्ञानोपाधि के साथ होने से बद्ध हो गया है । वैसे ही प्राप्त-

ओ३म्

शिक्षापत्रीध्वान्तनिवारणम्

अर्थात्

स्वामि नारायणमतदोषदर्शनात्मकम्

लोकोपकाराय

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्रीमद्दयानन्दसरस्वती स्वामिभिर्निर्मितम्

अजमेरीय वैदिकयन्त्रालये मुद्रितम्

आर्य्यसंवत् १९७२९४९००७

द्वितीयावृत्तिः	विक्रमी संवत	मूल्य -)॥
१०००	१९६३	डाकव्यय)

मोक्ष चेतन को फिर भी अविद्योपाधि का सङ्ग हो जायगा इस से मोक्ष की नित्यता नहीं रही तथा जिस मोक्ष के लिये विवेकादि साधन किये जाते हैं उस मोक्ष को प्राप्त होनेवाले जीव का लय ही होना है फिर सब साधन निष्फल हो जायंगे क्योंकि मुक्तिसुख का आनन्द भोगनेवाले जीव का नाम निशान भी नहीं रहता तथा जीव ब्रह्म की एकता माननेवालों के मत में ब्रह्म ही भ्रान्त अज्ञानी हो जाता है क्योंकि जब सृष्टि की उत्पत्ति नहीं हुई थी तब ज्ञानस्वरूप शुद्ध ब्रह्म था वही ब्रह्म अविद्यादि दोषयुक्त होके दोषी हो गया, सो यह वेद उपनिषद् तथा वेदान्त शास्त्रों से अत्यन्त विरुद्ध मत है।

"शुद्धमपापविद्धं कविरित्यादि" ॥

यजुर्वेद संहितादि के वचन हैं कि ब्रह्म सदा शुद्ध, पापरहित और सर्वज्ञादि विशेषणयुक्त है, उस में अज्ञानादि दोष कभी नहीं आ सकते क्योंकि देश काल वस्तु का परिच्छेद ईश्वर में नहीं, भ्रान्त्यादि दोष अल्पज्ञ जीव में होते हैं नान्यत्र (प्रश्न)

"तत्सृष्ट्वा तदेवानु प्राविशत्, अनेनात्मना जीवेनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणि"

ये तैत्तिरीयोपनिषदादि के वचन हैं। वही ब्रह्म जगत को उत्पन्न करके फिर प्रविष्ट हुआ, इस में जीवात्मारूप अन्तःकरण में प्रविष्ट होके नामरूप का व्याकरण करूं, इस से यह

सिद्ध होता है कि वही ब्रह्म जीवरूप बना है। (उत्तर) यह आप लोगों का अनर्थकरण है क्योंकि परिपूर्ण, एकरस, सब में जो भरा है, वह प्रवेश वा निकलना नहीं कर सकता किन्तु जीव बुद्धि से जबतक अज्ञानी रहता है और उसी बुद्धि से जीवको जब ज्ञान होता है तब उसी में परमात्मा प्राप्त होता है अन्यत्र नहीं। इससे जीव को ऐसा मालूम पड़ता है कि ब्रह्म मेरे में प्रविष्ट हुआ था, वा जब २ जिस २ जीव को ईश्वर का ज्ञान होता है तब २ उस उस को अपने आत्मा में ही होता है, इस से यह भी निश्चित होता है कि प्रवेश का करनेवाला तथा जिस में प्रवेश करता है उन दोनों का अलगही होना निश्चित है, तथा एक प्रवेश का करनेवाला और दूसरा अनुप्रवेश करने-वाला होता है क्योंकिः—

"शरीरं प्रविष्टो जीवः जीवमनुप्रविष्ट ईश्वरोऽस्तीति गम्यते"

इस प्रकार अर्थ करने से ही यथार्थ अभिप्राय इन वचनों का विदित होता है कि किंवा सहायार्थ में तृतीया विभक्ति है।

"अनेन जीवात्मना शरीरं प्रविष्टेन सह तं जीवमनुप्रविश्याहमीश्वरः नामरूपे व्याकरवाणीत्यन्वयः"

अत्र प्रमाणम् "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते"

* ओ३म् *

सहजानन्दादिमतस्थान् प्रतिप्रश्नाः खण्डनञ्च ॥

प्रश्न—कोऽयंसहजानन्दोनाम ? ॥

उत्तर—नारायणावतारस्स्वामिनारायणाख्याचार्य इति ब्रूमः ॥

प्र०—कश्चनारायणः ? ॥

उ०—वैकुण्ठगोलोकवासीचतुर्भुजोद्विभुजोलक्ष्मीपतिरीश्वर इत्युच्यते

प्र०—स इदानीमस्ति न वा ? ॥

उ०—वर्त्ततएवतस्येश्वराख्यस्यनित्यत्वात् । नैवं शक्यम् । स-पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धमित्या-दिश्रुतिविरोधात् । ईश्वरस्यानन्तान्तर्य्यामिसर्वव्यापकस्य जन्म-मरणदेहधारणादेरसम्भवात् । सावयवदेहधारिणस्संयोगजन्यादि-मतोनित्येश्वरत्वयोरसम्भवाच्च । यो जन्ममरणशरीरधारणादि-व्यवहारवान् स ईश्वरएव न भवति तर्हीदानीन्तनस्यसहजानन्द-स्य तु का कथा । तस्य सहजानन्दस्याचार्यत्वमेवासङ्गतम् । कुतो मृतस्याध्यापनेसामर्थ्याभावात् ॥ सगुरुमेवाभिगच्छेत्स-मित्पाणिः श्रोत्रियम्ब्रह्मनिष्ठम् । उपनीयतुयश्शिष्यं वेद

एक शरीर में जीवात्मा और परमात्मा का विधान और सङ्ग प्रतिपादन है, इस से जीव और ईश्वर का एक मानना केवल जाङ्गली पुरुषों की कथा है ऋषि मुनि विद्वानों की यह कथा नहीं ईश्वर ने अपने सामर्थ्य से जगत् को बनाया है, इस में प्रमाणः—

त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम् ॥ १ ॥ ऋ० सं० अ० १। अ० ४। व० १३। मं० १२ ॥

हे परमेश्वर! आपने "स्वभूत्या" स्वसामर्थ्य तथा "ओजस" अनन्त पराक्रम से भूमि, जल, स्वर्ग तथा दिव अर्थात् भूमि से लेके सूर्यपर्यन्त सब जगत् को बनाया है, रक्षण और धारण तथा प्रलय आपही करते हो।

"न यस्य द्यावापृथिवी अनुव्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः। नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक् ॥ ऋ० सं० १। अ० ४। व० १४। मंत्र १४ ॥

हे परमेश्वर! एक असहाय विश्व सब जगत् जो कि आपका अनुसङ्गी आप के रचन और धारण से विद्यमान हो रहा है सो आपसे अलग ही है आप का स्वरूपभूत नहीं, क्योंकि:--

ध्यापयेद्द्विजः॥ सरहस्यं सकल्पञ्च तमाचार्यम्प्रचक्षत इति ब्राह्मणमनुसाक्ष्यवर्तमानाभिप्रायस्य विद्यमानत्वात्तद्रचितस्य शिक्षाग्रन्थस्य दर्शनेन सहजानन्दे शिष्टशिक्षाविद्याविरहत्वेपाखण्डाचारा विज्ञायन्ते । तस्याः शिक्षापत्र्याः सहजानन्दरचितायाआदिमोयंश्लोकः—वामे यस्य स्थिताराधा श्रीश्चयस्यास्तिवक्षसि । वृन्दावनविहारान्तं श्रीकृष्णं हृदिचिन्तये ॥ १ ॥ राधावामेदक्षिणेपश्चिमे पुरतोधउपरिवाक्कास्थितेतिप्रत्यक्षानुमानाप्तशब्दैः कस्यापि निश्चयेनास्त्यतएवसहजानन्दस्य मिथ्यैवकल्पनास्तीतिवेद्यम् । वक्षस्येव श्रीर्वर्त्ततइत्युच्यतेचेत्तर्हिमुखाद्यङ्गेषु दरिद्रास्तीतिस्वीक्रियताम् । कृष्णस्तुद्वारिकासन्निधौमरणंप्राप्तवानित्युक्तं महाभारते । इदानीं कृष्णस्यजीवोनजानेक्वास्ति वृन्दावनेविहरन्कृष्णःकेनापि दृश्यते ।'किन्तु बहवःपाखण्डिनःपाषाणादिमूर्त्तयश्चतत्रदृश्यन्तेनैवकृष्णः पुनः परमेश्वरंनिराकारंजन्ममरणादिदोषरहितं विहाय कृष्णंहृदिचिन्तय इत्युक्तिर्व्यर्थैवेति ॥ १ ॥ मुकुन्दानन्दमुख्याश्च नैष्ठिकाब्रह्मचारिणः । गृहस्थाश्चमयाराम भट्टाद्यायेमदाश्रयाः ॥ ४ ॥ मुकुन्दानन्दादीनांवेदेश्वरयोर्निष्ठाध्ययनाभावान्नैष्ठिकब्रह्मचारित्वमेवासङ्गतम् । एवमेवमग्रस्थाःश्लोकाःप्रायशोऽशुद्धास्सन्त्यत उपेक्ष्यन्ते ॥ ४ ॥ दृष्ट्वाशिवालयादीनि देवागाराणिवर्त्मनि । प्रणम्य तानि तद्देवदर्शनंकार्यमादरात् ॥ १३ ॥ पाषाणादिमूर्त्त्यागाराणान्देवालयसंज्ञावचनात्तद्देवदर्शनं कार्यमादरादितिप्रलापात्सहजानन्देपदार्थविद्याया अभावएव दृश्यते ॥ १३ ॥ स्ववर्णाश्रमधर्मो यः सहातव्यो न केनचित् । परधर्मोनचाचर्यो न च पाखण्ड

"अन्यद्विश्वं स्वस्माद्भिन्नं त्वं चकृषे कृतवानसि"

इस सब जगत् को आपने स्वरूप से अत्यत् भिन्न वस्तुभूत रचा है आप जगत्रूप नहीं बने, तथा-

"अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् । तमक्रतु पश्यति वीतशोको धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः"

"नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहूनां यो विदधाति कामान् । तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् ॥

जो सूक्ष्म से सूक्ष्म, बड़े से बड़ा परमात्मा इस जीव के ज्ञान अर्थात् जीव के बीच में निहित (स्थित) है, परन्तु उस सर्वात्मा को अभिमानशून्य, शोकादिदोष रहित, परमात्मा का कृपापात्र, जीव ज्ञान से देखता है, और उस आत्मा अन्तर्यामी परमात्मा की महिमा सर्वशक्तिमत्व और व्यापकत्वादि गुण को भी वही देखता है अन्य नहीं, इसमें भी जीव ईश्वर का भेद निरूपित है और जो परमात्मा प्रकृति और जीवादि के बीच में नित्य है, तथा चेतन जो जीव उन के बीच में चेतन है, बहुत असङ्ख्यात जीवादि पदार्थों के बीच में जो एक है, तथा जो पृथिव्यादि स्वर्गपर्यन्त पदार्थों का रचन किया

कल्पितः ॥१४॥ वेदोक्तः स्ववर्णाश्रमधर्मस्सहजानन्देन किमर्थस्त्य-
क्तः । कुतः । वेदविरुद्धानांस्वकपोलकल्पितानां पाषाणादिमूर्त्तिपूज-
नकण्ठीतिलकधारणादिपाखण्डानाम्प्रचारकरणात्सहजानन्देवदतो-
व्याघातदोषस्समागतो वेदितव्यः ॥ १४ ॥ कृष्णभक्तेःस्वध-
र्माद्वापतनंयस्यवाक्यतः । स्यात्तन्मुखान्नवैश्रव्याः कथावार्त्ताश्च
वाप्रभोः ॥ १८ ॥ कृष्णभक्तिरेवस्वधर्मोस्तीतिकथनंव्यर्थमेव ।
कुतः वेदेवर्णाश्रमधर्मप्रतिपादनप्रकरणेकृष्णभक्तिःस्वधर्मइतिप्रति-
पादनस्याभावात् । अतः किंसमागतंसहजानन्दस्यतत्सम्प्रदायस्था-
नाञ्चमुखात्कदाचित्केनचिदपि कथानैवश्रोतव्येति सिद्धान्तः
सकृष्णःप्रभुरेवनतस्यजन्ममरणादिस्वभाववत्त्वात् ॥ १५ ॥ ज्ञान
वार्त्ताश्रुतिर्नार्यामुखात्कार्य्यानपूरुषैः । नविवादःस्त्रिया कार्यो नराज्ञा-
नचतज्जनैः ॥ ३४ ॥ गार्ग्यादिस्त्रीमुखाद्याज्ञवल्क्यादिमहर्षिभिः
कथायाःश्रुतत्वात्सहजानन्दकल्पनात्वग्राह्या ॥ ३४ ॥ कृष्णदीक्षा-
गुरोःप्राप्ते तुलसीमालिकेगले । धार्येनित्यञ्चोर्ध्वपुण्ड्रोललाटादौ
द्विजातिभिः ॥ ४१ ॥ कृष्णदीक्षातुलसीमालाधारणोर्ध्वपुण्ड्रधार्य-
मित्युक्तिःसहजानन्दस्यव्यर्थैव । कुतः वेदयुक्तिभ्यां विरोधात्स्वल्प-
कण्ठीतिलकधारणे पुण्यम्भवतिचेत्तर्हि कण्ठीभारधारणेसर्वमुखशरी-
रलेपनेचमहत्पुण्यम्भविष्यतीत्येवं क्रियताम् ॥ ४१ ॥ इत्यादिश्लो-
काः सहजानन्दस्यमिथ्यैवचवेदितव्याः । त्रिपुण्ड्ररुद्राक्षधृतिर्येषां स्या-
त्स्वकुलागता । तैस्तुविप्रादिभिः क्वापिनत्याज्यासामदाश्रितैः ॥४६॥
ऐकात्म्यमेवविज्ञेयं नारायणमहेशयोः । उभयोर्ब्रह्मरूपेण वेदेषु प्रति-
पादनात् ॥ ४७ ॥ एवञ्चेत्सहजानन्दस्यकुलस्थैः कदाचिन्त्रि-

ज्ञान से सब कामों का विधान प्राप्त करता है उस परमात्मा को जो जीव अपने आत्मा में ध्यान से देखते हैं उन जीवों को ही निरन्तर शान्तिसुख प्राप्त होता है अन्य को नहीं, इस से भी आत्मस्थ शब्द प्रत्यक्ष होने से ईश्वर और जीव का व्यापक व्याप्य, तथा अन्तर्यामी आन्तर्याम्य सम्बन्ध होने से जीव और ब्रह्म एक कभी नहीं होते, व्याससूत्र—"नेतरोऽनुपपत्तेः" इतर जीव से जगत् रचना की चेष्टा नहीं हो सकती "भेदव्यपदेशाच्च" ब्रह्म और जीव दोनों भिन्न ही हैं "मुक्तोपसृज्य व्यपदेशात्" मुक्त पुरुष ब्रह्म के समीप को प्राप्त होके आनन्दी होते हैं "प्राणभृच्च" प्राणधारी जीव जगत् का कारण नहीं "विशेषणभेदव्यपदेशाभ्यां नेतरौ" विशेषण दिव्य और सर्वज्ञादि "भेदव्यपदेश" जीव और प्रकृत्यादि से परमात्मा परे है इस से जीव और प्रकृति जगत् के कारण नहीं हैं, जो जीव और ब्रह्म पृथक् न होते तो जगत् के कारण होने में निषेध न करते और जो जीव ब्रह्म एक होते तो निषेध का संभव नहीं हो सकता, इत्यादि व्यास के शारीरकसूत्रों से भी स्पष्ट सिद्ध होता है कि जीव और ब्रह्म एक नहीं किन्तु अलग अलग हैं तथा नवीन वेदान्ती लोगों ने पञ्चीकरण की कल्पना निकाली है, सो भी अयुक्त है, त्रिवृत्करण छान्दोग्योपनिषद् में लिखा है, क्योंकि आकाशका पञ्चीकरण विभाग वा संयोग करना असम्भव है, नवीन वेदान्ती लोगों के प्रचार से मनुष्य के

ध्यापयेद्द्विजः॥ सरहस्यं सकल्पञ्च तमाचार्यम्प्रचक्षत इति ब्राह्मणमनुसाक्ष्यवर्तमानाभिप्रायस्य विद्यमानत्वात्तद्रचितस्य शिक्षाग्रन्थस्य दर्शनेन सहजानन्देशिष्टशिक्षाविद्याविरहत्वेपाखण्डाचारा विज्ञायन्ते । तस्याः शिक्षापत्र्याः सहजानन्दरचितायाआदिमोयंश्लोकः—वामे यस्य स्थिताराधा श्रीश्चयस्यास्तिवक्षसि । वृन्दावनविहारान्तं श्रीकृष्णं हृदिचिन्तये ॥ १ ॥ राधावामेदक्षिणेपश्चिमे पुरतोधउपरिवाक्वस्थितेतिप्रत्यक्षानुमानाप्तशब्दैः कस्यापि निश्चयेनास्त्यतएवसहजानन्दस्य मिथ्यैवकल्पनास्तीतिवेद्यम् । वक्षस्येव श्रीर्वर्त्ततइत्युच्यतेचेत्तर्हिमुखाद्यङ्गेषु दरिद्रास्तीतिस्वीक्रियताम् । कृष्णस्तुद्वारिकासन्निधौमरणंप्राप्तवानित्युक्तं महाभारते । इदानीं कृष्णस्यजीवोनजानेक्वास्ति वृन्दावनेविहरन्कृष्णःकेनापि दृश्यते ।किन्तु बहवःपाखण्डिनःपाषाणादिमूर्त्तयश्चतत्रदृश्यन्तेनैवकृष्णः पुनः परमेश्वरंनिराकारंजन्ममरणादिदोषरहितं विहाय कृष्णंहृदिचिन्तय इत्युक्तिर्व्यर्थैवेति ॥ १ ॥ मुकुन्दानन्दमुख्याश्च नैष्ठिकाब्रह्मचारिणः । गृहस्थाश्चमयाराम भट्टाद्यायेमदाश्रयाः ॥ ४ ॥ मुकुन्दानन्दादीनांवेदेश्वरयोर्निष्ठाध्ययनाभावान्नैष्ठिकब्रह्मचारित्वमेवासङ्गतम् । एवमेवमग्रस्थाःश्लोकाःप्रायशोऽशुद्धास्सन्त्यत उपेक्ष्यन्ते ॥ ४ ॥ दृष्ट्वाशिवालयादीनि देवागाराणिवर्त्मनि । प्रणम्य तानि तद्देवदर्शनंकार्यमादरात् ॥ १३ ॥ पाषाणादिमूर्त्त्यागाराणान्देवालयसंज्ञावचनात्तद्देवदर्शनं कार्यमादरादितिप्रलापात्सहजानन्देपदार्थविद्याया अभावएव दृश्यते ॥ १३ ॥ स्ववर्णाश्रमधर्मो यः सहातव्यो न केनचित् । परधर्मोनचाचर्यो न च पाखण्ड

सुखादि की अत्यन्त हानि होती है, क्योंकि इन लोगों में दो बड़े दोष हैं. एक जगत् को मिथ्या मानना और दूसरा जीव ब्रह्म को एक मानना, जगत् मिथ्या मानने में ऐसा कहते हैं कि यह जगत् स्वप्न के तुल्य है, सो यह उन का कहना मिथ्या है जिस की उपलब्धि होती है और जिस का कारण सत्य है. उस को मिथ्या कहनेवाले का कहना मिथ्या है. स्वप्न भी दृष्ट और श्रुत संस्कार से होता है दृष्ट और श्रुत संस्कार प्रत्यक्षानुभव के विना स्वप्न ही नहीं होता, सर्वज्ञ और अवस्थादिरहित होने से परमात्मा को तो स्वप्न ही नहीं होता जो जीव ब्रह्म हो तो जैसी ब्रह्म ने यह असंख्यात सृष्टि की है वैसे एक मक्खी वा मच्छर को भी जीव क्यों नहीं कर सकता? इस से जगत् को मिथ्या और ब्रह्म की एकता मानना ही मिथ्या है जगत् को मिथ्या मानने में जगत् की उन्नति परस्पर प्रीति और विद्यादि गुणों की प्राप्ति करने में पुरुषार्थ और श्रद्धा अत्यन्त नष्ट होने से जगत् के जितने उत्तम कार्य हैं वे सब नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं, जीव और ब्रह्म को एक मानने से परमार्थ सब नष्ट होजाता है क्योंकि परमेश्वर की आज्ञा का पालन, स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने की प्रीति बिलकुल छूटने से केवल मिथ्याभिमान, स्वार्थसाधनतत्परता, अन्याय का करना, पाप में प्रवृत्ति, इन्द्रियों से विषयों के भोग में अत्यन्त पामरता और पतितादिक दोषयुक्त हो के अ जन्म धारण करने के जो कर्तव्य धर्म अर्थ काम

कल्पित: ॥१४॥ वेदोक्त: स्ववर्णाश्रमधर्मस्सहजानन्देन किमर्थस्त्यक्त: । कुत: । वेदविरुद्धानांस्वकपोलकल्पितानां पाषाणादिमूर्त्तिपूजनकण्ठीतिलकधारणादिपाखण्डानाम्प्रचारकरणात्सहजानन्देवदतोव्याघातदोषस्समागतो वेदितव्य: ॥ १४ ॥ कृष्णभक्ते:स्वधर्माद्द्यापतनंयस्यवाक्यत: । स्यात्तन्मुखान्नवैश्रव्या: कथावार्त्ताश्च वाप्रभो: ॥ १९ ॥ कृष्णभक्तिरेवस्वधर्मोस्तीतिकथनंव्यर्थमेव । कुत: वेदेवर्णाश्रमधर्मप्रतिपादनप्रकरणेकृष्णभक्ति:स्वधर्मइतिप्रतिपादनस्याभावात् । अत: किंसमागतंसहजानन्दस्यतत्सम्प्रदायस्थानाञ्चमुखात्कदाचित्केनचिदपि कथानैवश्रोतव्येति सिद्धान्त: सकृष्ण:प्रभुरेवनतस्यजन्ममरणादिस्वभाववत्त्वात् ॥ १५ ॥ ज्ञान वार्त्ताश्रुतिर्नार्यामुखात्कार्यानपूरुषै: । नविवाद:स्त्रिया कार्यो नराज्ञानचतज्जनै: ॥ ३४ ॥ गार्ग्यादिस्त्रीमुखाद्याज्ञवल्क्यादिमहर्षिभि: कथाया:श्रुतत्वात्सहजानन्दकल्पनात्वग्राह्या ॥ ३४ ॥ कृष्णदीक्षागुरो:प्राप्ते तुलसीमालिकेगले । धार्येनित्यञ्चोर्ध्वपुण्ड्रोललाटादौ द्विजातिभि: ॥ ४१ ॥ कृष्णदीक्षातुलसीमालाधारणोर्ध्वपुण्ड्रधार्यमित्युक्ति:सहजानन्दस्यव्यर्थैव । कुत: वेदयुक्तिभ्यां विरोधात्स्वल्पकण्ठीतिलकधारणे पुण्यम्भवतिचेत्तर्हि कण्ठीभारधारणेसर्वमुखशरीरलेपनेचमहत्पुण्यम्भविष्यतीत्येवं क्रियताम् ॥ ४१ ॥ इत्यादिश्लोका: सहजानन्दस्यमिथ्यैववेदितव्या: । त्रिपुण्ड्ररुद्राक्षधृतिर्येषां स्यात्स्वकुलागता । तैस्तुविप्रादिभि: क्वापिनत्याज्यासामदाश्रितै: ॥४६॥ ऐकात्म्यमेवविज्ञेयं नारायणमहेशयो: । उभयोर्ब्रह्मरूपेण वेदेषु प्रतिपादनात् ॥ ४७ ॥ एवञ्चेत्सहजानन्दस्यकुलस्थै: कद

चारों फल नहीं होने से मूर्तिपूजनादि व्यवहारों के करने से उस जीव का जन्म निष्फल हो जाता है इस से मनुष्य को उचित है कि सद्विद्यादिक उत्तम गुणों का जगत् में प्रचार करना, व्यवहार परमार्थ की शुद्धि और उन्नति करना तथा वेदविद्यादि सनातन ग्रन्थों का पठन पाठन और नाना भाषाओं में वेदादि सत्यशास्त्रों का सत्यार्थप्रकाश करना, एक निराकार परमात्मा की उपासनादि का विधान करना, कलाकौशलादि से स्वदेशादि मनुष्यों का सुखविधान, परस्पर प्रीति का करना, हठ, दुराग्रह, दुष्टों के संगादि को छोड़ना, उत्तम २ पुरुष तथा स्त्री लोगों की सभाओं से सब मनुष्यों का हिताहित विचारना और सत्य व्यवहारों की उन्नति करना इत्यादि मनुष्यों को अवश्य कर्तव्य है। इन को सब विरोध छोड़ के सिद्ध करना यहां सब सज्जनों से हमारा विज्ञापन है, इस को सज्जन लोग अवश्य स्वीकार करेंगे ऐसी मुझ को पूर्ण आशा है सो इस की सिद्धि के लिये सर्वशक्तिमान्, सब जगत् के पिता, माता, राजा, बन्धु जो परमात्मा उस से मैं अत्यन्त नम्र हो के प्रार्थना करता हूं कि सब मनुष्यों पर कृपा करके असन्मार्ग से हटा के सन्मार्ग में चलावें यही हमारा परम गुरु है ॥

समाप्तम् ॥

पुण्ड्ररुद्राक्षधारणंकृतमेवासीत्पुनस्तेन किमर्थंत्यक्तंत्याजितञ्च मदाश्रितैरितिबहुशो लिखतितद्व्यर्थमेव कुतः तस्याविदुषोजन्मम-णादिदोषवतो जीवस्याश्रयोनिष्फलोतः ॥ ४६ ॥ नारायणमहे-शयोरैक्यमसङ्गतन्तयोर्ब्रह्मरूपेणवेदेप्रातिपादनाभावेतः सहजानन्द-स्य कथनं व्यर्थमेव ॥ ४७ ॥ प्रणम्य राधाकृष्णस्य लेख्याचांतत आदरात् । शक्त्या जपित्वा तन्मंत्रं कर्त्तव्यं व्यावहारिकम् ॥५४॥ राधाकृष्णौसहजानन्देनान्यैश्च प्रत्यक्षतया नैवदृष्टौपुनश्चतयोर्ले-ख्यांमूर्तिंकर्तुंसामर्थ्यन्नैवभवेदतस्तत्पूजाकर्त्तव्योक्तिः सहजानन्द-स्यान्यथैव वेद्या ॥ ५४ ॥ शैलीवाधातुजामूर्त्तिः शालिग्रामोर्च्य एवतैः । द्रव्यैर्यथाप्तैः कृष्णस्य जप्योऽथाष्टाक्षरोमनुः ॥ ५६ ॥ अस्माच्छ्लोकाद्विज्ञायते सहजानन्दस्यापिजडबुद्धिरासीदिति कुतः वेदयुक्तिविरुद्धस्य पाषाणादिमूर्त्तिपूजनस्य विधानात् । कृष्णमन्त्र-जपेनवेदोक्तविरुद्धेन नास्तिकत्वसिद्धेश्च ॥ ५७ ॥ हरेर्वि-धाय नैवेद्यं भोज्यं प्रासादिकन्ततः । कृष्णसेवापरैः प्रीत्या भवि-तव्यञ्च तैः सदा ॥ ५८ ॥ हरेरप्रत्यक्षत्वात्पाषाणादिजडमूर्त्ते-र्भोजनकरणाभावाच्चनैवेद्यकरणं व्यर्थमेव । इदन्तु खलुच्छलमेवा-स्ति कुतः अङ्गुष्ठदर्शनेन घन्टानादं कृत्वा स्वभोजनाभिप्रायस्य विद्यमानत्वात् ॥ ५९ ॥ आचार्येणैवदत्तं यद्यच्चतेन प्रतिष्ठितम् ॥ कृष्णस्वरूपंतत्सेव्यं वन्द्यमेवेतरत्तुयत् ॥ ६२ ॥ पाषाणादिमूर्त्तिस्व-रूपंयोददातितत्प्रतिष्ठापयतिचतत्कृष्णस्वरूपंनेवनाकिन्तुतपाषाणा-दिस्वरूपमेव । भगवन्मन्दिरंसर्वैःसायंगन्तव्यमन्वहम् ॥नामसंकी-र्त्तनंकार्यं तत्रोच्चैराधिकापतेः ॥६३॥ तच्चकदाचित्केनचिदपि ना

सेव्यश्चैव वन्द्यम् । किन्तु यस्सर्वशक्तिमानजोन्यायकारीदयालुस्स-
र्वान्तर्यामीसर्वव्यापीनिराकारोभगवान्परमात्मैव सर्वैस्सेव्योवन्द्यश्चा-
तोन्योनैव वन्द्यस्सेव्यश्चेति निश्चयः॥ ६२॥ अतएव भगवत्पाषाणा-
दिमूर्त्तिमन्दिरं भगवन्मन्दिरं गन्त्यमानस्यतच्चसायंसर्वैरन्वहं गन्तव्य-
मनीश्वरस्यमरण जन्मवतोराधिकापतेर्मृतस्यकृष्णस्योच्चैर्नामसंकी-
र्त्तनं कार्यमितिमिथ्योपदेशं प्रब्रुकृतस्सहजानन्दस्य वेदविद्या किञ्चि-
न्मात्रापितस्यनासीदसदुपदेशाच्चसङ्गतिरपितस्यनाभूदित्यनुमीय-
ते अस्य मिथ्योपदेशस्ययेस्वीकारञ्चक्रुः कुर्वन्तिकरिष्यन्ति च तेषा-
मपिसद्गतिर्नभूत्ानभवतिनभविष्यतिच किन्तु वेदसद्विद्यांतत्रोपदिष्टं
न्यायम्पक्षपातरहितंवैरबुद्धित्यागादिलक्षणंधर्मञ्च यथावद्येस्वीकरि-
ष्यन्ति सर्वशक्तिमन्न्यायकारिदयालुत्वादिलक्षणस्य निराकारपर-
मेश्वरस्यस्तुतिप्रार्थनोपासनाश्च यथावद्येच करिष्यन्ति तेषामेव
सद्गतिरभूद्भवतिभविष्यति चेतिसर्वैर्वेदितव्यम् । एवमेव अग्रस्थाः
श्लोकाः प्रायोशुद्धास्सन्तीत्यतउपेक्ष्यन्ते ॥ ६३ ॥ एकादशीनां-
सर्वासां कर्त्तव्यंव्रतमादरात् । कृष्णजन्मदिनानाञ्च शिवरात्रेश्चसो-
त्सवम् ॥ ७९ ॥ एकादश्यादीनिव्रतानिवेदे क्वापिनाविहितानि ।
किन्तु ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादीन्येवव्रतानि कर्तुंविहितानि । अतए-
वैकादश्यादीनांव्रतानामाचरणंव्यर्थमेवेति परामर्शः ॥ ७० ॥
सर्ववैष्णवराजश्रीवल्लभाचार्यनन्दनः । श्रीविट्ठलेशः कृतवान्यंव्रतो-
त्सवनिर्णयम् ॥ ८१ ॥ कार्यास्तमनुसृत्यैव सर्वएवव्रतोत्सवाः ॥
सेवारीतिश्चकृष्णस्य ग्राह्यातदुदितैवहि ॥ ८२ ॥ कर्त्तव्या
ऽऽमुख्यतीर्थयात्रायथाविधि । सर्वैरपियथाशक्ति भाव्यं

हो उसको ईश्वर कभी कह ही नहीं सकते फिर आज कल के सहजानन्द से तो क्या कहना है ? प्रथम तो मुरदा के वास्ते आचार्य का नाम बिलकुल नहीं घटता क्योंकि सहजानन्द मर गया और इसी से वह अभ्यास कराने को असमर्थ है, ब्राह्मण भाग में कहा है कि:—

"अपना गुरू जो कि वेद पढ़ा हुआ और केवल ईश्वर की ही भक्ति करता हो उसके पास शिष्य को अपने हाथ में समिध् नामक लकड़ियों को लेकर जाना चाहिये" और वही मनु भी साक्षी देता है कि:—

"जो ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य गुरू—अपने शिष्य को यज्ञोपवीत आदि कर्मक्रिया कराने के बाद वेद को अर्थ और कल्पसहित पढ़ावे तो ही उसको आचार्य कहना चाहिये"

सहजानन्द की बनाई हुई शिक्षापत्री, जिससे सिद्ध होता है कि सहजानन्द ने उस पुस्तक में बहुत कुछ पाखण्डवर्णन किया है, सहजानन्द की शिक्षापत्री के प्रथम श्लोक का अर्थ निम्नलिखित है:—

"श्रीकृष्ण जिनकी बाईं ओर राधाजी खड़ी हैं और जिनकी छाती पर लक्ष्मीजी बैठी हैं और जो वृन्दावन में क्रीड़ा करते हैं उनका मैं हृदय में ध्यान धरता हूं" ॥ १ ॥

राधा वाम और दक्षिण, पश्चिम, आसपास और ऊपर नीचे कहां खड़ी हैं सो प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द किसी को भी निश्चय होता नहीं, इसलिये सहजा

॥ ८३ ॥ विष्णुः शिवोगणपतिः पार्वती च दिवाकरः । एतः पूज्यतया मान्या देवताः पञ्चमागकैः ॥ ८४ ॥ भूताद्युपद्रवेक्वापिवर्तमेनारायणात्मकम् । जप्यञ्च हनुमन्मन्त्रो जप्योनक्षुद्रदैवतः ॥ ८५ ॥ सर्ववैष्णवराजश्रीवल्लभाचार्यनन्दनोविट्ठलेशः परधनहरणंधर्मनाशनं व्रतं परस्त्रीगमनादिव्यभिचारोत्सवमपि च कृतवाँस्तत्कार्यत्वेनातिदिशतः सहजानन्दस्यापि दोषापत्तिरेव गन्तव्येति ॥ ८१ ॥ द्वारिकायास्तीर्थयात्रामुपदिशतः सहजानन्दस्य भ्रान्त्यापत्तिरेवाविज्ञायते कुतः जडे पाषाणजलादौ तीर्थोपदेशाभावात्तद्यात्राकरणोपदेशोदुःखफलकएवास्ति ॥ किञ्च ॥ अहिंसन्सर्वभूतान्यन्यत्र तीर्थेभ्यइति छान्दोग्योपनिषदि । सतीर्थस्सब्रह्मचारीचेत्यादिप्रमाणार्थव्यवहारस्य विद्यमानत्वाद्वेदेश्वरविज्ञानानामेव तीर्थसंज्ञामन्तव्येत्युपदेशः । यैरविद्याजन्ममरणहर्षशोकादिदुःखानि तरन्ति तानि तीर्थानीति निरुक्तेश्च । शिवविष्णुगणपतिपार्वत्यादीनांदेहधारिणां मृतानाम् वेदेषु पूजानभिधानाद्रवेर्जडत्वाच्च पूजानिष्फलापरमेश्वरएकएवपूज्यस्तत्रपञ्चत्वाभावादेताः पूज्यतयामान्याइतसहजानन्दस्योपदेशोसङ्गतएवास्तीतिबोध्यम् ॥ ८४ ॥ भूताद्युपद्रवानिवारणार्थं नारायणकवचपाठं हनुमन्मन्त्रजपञ्चोपदिशति सहजानन्देभ्रान्तिरेव सिध्यति । अतस्तदुपदेशप्रमाणं व्यर्थमेव ॥ ८५ ॥ वेदाश्च व्याससूत्राणि श्रीमद्भागवताभिधम् । पुराणं भारतेतुश्रीविष्णोर्नामसहस्रकम् ॥ ९३ ॥ तथा श्रीभगवद्गीता नीतिश्च विदुरोदिता । श्रीवासुदेवमाहात्म्यं स्कान्दवैष्णवखण्डगम् ॥ ९४ ॥ धर्मशास्त्रान्त-

कल्पना करी सो व्यर्थ है, जब कि छाती के ऊपर लक्ष्मी बैठी हैं तो कृष्ण के मुख में दरिद्रा बैठी है ऐसा मानना पड़ेगा, महाभारत में कहा है कि "कृष्ण द्वारिका की पड़ोस में मर गये" अब कौन जाने कि कृष्ण का जीव इस समय कहां है कृष्ण तो वृन्द्रावन में क्रीड़ा करते हुए किसी को नहीं दीख पड़ते किन्तु वृन्द्रावन में बहुपाखण्डरूप पाषाणादि की मूर्त्तियां दीखती हैं, निराकार, जन्गमरण रहित ईश्वर को छोड़ के कृष्ण का मैं हृदय में ध्यान धरता हूं ऐसा कहना मिथ्या है ॥

"मुकुन्दानन्द आदि नैष्ठिक ब्रह्मचारी और भट्ट मयाराम आदि गृहस्थ मेरे आश्रित हैं" ॥ ४ ॥

मुकुन्दानन्द आदिकों ने वेद और ईश्वर पर आस्था रक्खी नहीं इससे उनका नैष्ठिक ब्रह्मचारी नाम घटता ही नहीं है, इसीप्रकार से इनके बहुत से आगे के श्लोक भी भ्रष्ट और अशुद्ध हैं ॥

"रास्ता चलते हुए शिवालय आदि जो देवमन्दिर आवें उनको नमना और प्रेम से उनका दर्शन करना चाहिये" ॥ १३ ॥

पाषाण आदि मूर्त्ति के घर को देवालय नाम दिया इस से और उनका दर्शन करना इसप्रकार अनर्थ वचन कहने से मालूम पड़ता है कि सहजानन्द पदार्थविद्या बिलकुल नहीं जानता था ॥

गीता च याज्ञवल्क्यऋषेःस्मृतिः । एतान्यऽष्टममेष्टानि सच्छास्त्राणि भवन्तिहि ॥ ९५ ॥ स्वहितेच्छुभिरेतानिमच्छिष्यैःसकलैरपि । श्रोतव्यान्यथपाठ्यानि कथनीयानि च द्विजैः ॥ ९६ ॥ तत्राचारव्यवहृति निष्कृतानाञ्च निर्णये । ग्राह्यामिताक्षरोपेतायाज्ञवल्क्यस्य तु स्मृतिः ॥ ९७ ॥ श्रीमद्भागवतस्यैषुस्कन्धौ दशमपञ्चमौ । सर्वाधिकतया ज्ञेयौ कृष्णमाहात्म्यबुद्धये ॥ ९८ ॥ दशमःपञ्चमःस्कन्धोयाज्ञवल्क्यस्यच स्मृतिः ॥ भक्तिशास्त्रंयोगशास्त्रंधर्मशास्त्रंक्रमेण मे ॥ ९९ ॥ शारीरकाणांभगवद्गीतायाश्चावगम्यताम् । रामानुजाचार्यकृतंभाष्यमाध्यात्मिकम्मम ॥ १०० ॥ एतेषु यानिवाक्यानि श्रीकृष्णस्य वृषस्य च । अत्युत्कर्षपराणिस्युस्तथा भक्तिविरागयोः ॥ १०१ ॥ मंतव्यानिप्रधानानि तान्येवेतरवाक्यतः । धर्मेणसहिताकृष्णभक्तिःकार्येति द्रहः ॥ १०२ ॥ वेदाश्चेत्यादयः श्लोकाः प्रायो शुद्धाःसन्ति । श्रीमद्भागवतादिपुराणानांभारते विष्णोः सहस्रनाम्नाम्भगवद्गीतायाश्च स्वीकारादन्यपान्तत्रस्थानां श्रेष्ठानामपि त्यागाद्वासुदेवमाहात्म्यस्यैव ग्रहणादन्यस्याग्रहणान्मिताक्षराटीकान्विताया याज्ञवल्क्यस्मृतेरेवग्रहणात्पूर्वमीमांसादिशास्त्राणाम्मनुस्मृतेश्चाग्रहणादविद्वत्तैव दृश्यते सहजानन्दे सर्वेभ्यश्चैवस्कन्धेभ्योतीवाशुद्धस्य मिथ्याभूतधर्मकथाप्रतिपादकस्य दशमस्कन्धस्य सर्वाधिकतयास्वीकाराद्विषयासक्तोवेदनिन्दकोपिसहजानन्दोस्तीति विज्ञायते ॥ ९८ ॥ दशमस्कन्धेभक्तिशास्त्रस्य लेशोपि नास्ति किन्तु व्यभिचाराद्यधर्मप्रतिपादनन्तत्रा...ये प्रसिद्धम् । पञ्चमस्कन्धे योगशास्त्रप्रतिपादनन्नास्ति किन्तु

"अपने वर्ण आश्रम का जो धर्म उसका कोई पुरुष त्याग न करे, उसी प्रकार पाखण्डकल्पित परधर्म का आचरण भी नहीं करना चाहिये" ॥ १४ ॥

प्रथम सहजानन्द ने वेदोक्त अपने वर्णाश्रम का त्याग किसलिये किया, जो कहो कि त्याग नहीं किया तो वेदविरुद्ध मूर्तिपूजन, कण्ठी, तिलक धारणादि पाखण्डों का आचरण क्यों किया कराया ? यह तो ऊपर से सिद्ध होता है कि सहजानन्द ने अपने पैर में अपने आप ही कुठार मारा है, यहांतक कि अपने कथन को अपने आप ही धो डाला है ॥

"जिसके कहने से कृष्णभक्ति में भंग पड़े उस पुरुष के मुख से कभी भगवान् की कथा वार्ता सुननी नहीं चाहिये" ॥ १५ ॥

केवल कृष्ण की ही भक्ति करने में अपना धर्म रहता है इसप्रकार सहजानन्द का कहना व्यर्थ है क्योंकि वेद में जहां वर्णाश्रम प्रतिपादन प्रकरण चला है वहां पर कृष्ण की भक्ति करनी यही स्वधर्म है ऐसा नहीं कहा ॥

यह ऊपर से समझना चाहिये कि सहजानन्द और उन के सम्प्रदाय वालों के मुख से कभी किसी को कथावार्ता नहीं सुननी चाहिये कृष्ण को ([illegible] को) प्रभु मान [illegible] नहीं बन सकता क्योंकि इनके जन्म मरण आदि [illegible]

"स्त्री से श्रुति [illegible] ज्ञानवाली [illegible] चाहिये इसीप्रकार स्त्री, राजा और [illegible] विवाद नहीं करना चाहिये" ॥ १६ ॥

आसप्रतिपादनन्तुतत्रास्त्येव । श्रौतसूत्रमीमांसादिधर्मशास्त्रस्य तिर-स्कारात्पिष्टपेषणवद्दूषिताया याज्ञवल्क्यस्मृतेः स्वीकारात्सहजान-न्दस्य वेदोक्तानां कर्मोपासनाज्ञानकाण्डानां बोधएवनास्तीति विज्ञा-यते॥९९॥रामानुजकृतस्य शारीरकसूत्रभाष्यस्यात्यशुद्धस्यस्वीकारा-दविवेकस्सहजान्देस्स्येवेति विज्ञायते ॥१००॥ श्रीकृष्णेनवेदस्यैव खल्वत्युत्कर्षोमतःनचस्यवाक्यानाम् । अतएव सहजानन्देनात्युत्कर्ष-पराणितद्वाक्यानि स्युरित्युक्तत्वाद्भ्रान्तएवसमन्तव्यः ॥ १०१ ॥ वेदवाक्यान्येवसर्वोत्कृष्टानिसन्तीति ब्रह्मादीनामिदानीन्तनान्तानां-च विदुषां सिद्धान्ते वियमाने वेदेभ्योपि कृष्णवाक्यान्येवप्रधाना-न्येवं प्रब्रुवन्सहजानन्दोलज्जामपि न प्राप्तवानिति ॥ १०२ ॥ हृदयेजीववज्जीवे योन्तर्यामितयास्थितः । ज्ञेयः स्वतन्त्रईशोसौ सर्वकर्मफलप्रदः ॥१०७॥ सश्रीकृष्णःपरब्रह्मभगवान्पुरुषोत्तमः । उपास्यऽइष्टदेवो नः सर्वाविर्भावकारणम् ॥ १०८ ॥ सराधया युतोज्ञेयोराधाकृष्णइति प्रभुः । रुक्मिण्यारमयोपेतोलक्ष्मीनारायणः सहि ॥ १०९ ॥ ज्ञेयोऽर्जुनेन युक्तोसौ नरनारायणाभिधः । बल-भद्रादियोगेन तत्तन्नामोच्यते स च ॥११०॥जीववन्नकदाचिदीशो-भवतिसर्वज्ञसर्वशक्त्यनन्तनिर्विकारत्वादिस्वभावत्वात् ॥ १०७ ॥ जन्ममरणहर्षशोकाल्पशक्त्यादिमत्त्वात्कृष्णःपरब्रह्मभगवान्पुरुषो-त्तमःकदाचिन्नैव संभवति । पुनः सर्वशक्तिमन्तंन्यायकारिणं दयालुं सर्वान्तर्यामिणंसच्चिदानन्दस्वरूपंनिर्दोषंनिराकारमजंविभुंवेदयुक्ति-सिद्धं परमात्मानं विहाय जन्ममरणादिव्यवहारवन्तञ्जीवं कृष्णमु-पास्येष्टदेवत्वेन यः सहजानन्दः कथयति सवेदपदार्थविद्याविहीन

याज्ञवल्क्यादि महान् ऋषियों ने गार्गी आदि स्त्रियों के साथ धर्म विषय पर विचार किया था इससे सहजानन्द की कल्पना मान्य करने योग्य नहीं ॥

"कृष्णदीक्षा की प्राप्ति के लिये तुलसी की बनी हुई माला पहरनी और ललाट आदि भागों पर ऊर्ध्वत्रिपुण्ड्र करना चाहिये" ॥ ४१ ॥

कृष्णदीक्षा तुलसीमाला धारण और ऊर्ध्वत्रिपुण्ड्र आदि जो कहा सो सहजानन्द का कहना मिथ्या है, क्योंकि ऐसा करना वेदविरुद्ध और युक्ति रहित है, जो थोड़ासा तिलक धारण करने से पुण्य होता है तो कण्ठी का भार बांधने से और समस्त मुख तथा शरीर लीपदेने से अत्यन्त पुण्य होता है ऐसा मानना पड़ेगा और जो ऐसा मानता हो तो यह काम जल्दी करो, सहजानन्द के ऐसे २ कितने ही श्लोक भ्रष्ट हैं ॥

"वंश परम्परा से जो ब्राह्मण रुद्राक्ष धारण करता होय तो उसको मेरा आश्रित होने पर उसका त्याग नहीं करना चाहिये, नारायण और केशव को एकात्मता (अभिन्नता) ही है क्योंकि वेद में इन दोनों को ब्रह्मरूप गिना है" ॥ ४७ ॥

त्रिपुण्ड्र रुद्राक्ष का धारण करना. ऐसा जो सहजानन्द ने माना सो प्रथम सहजानन्द ने अपनी ही रुद्राक्ष किसलिये त्यागी और अपने सम्प्रदाय वालों की किसलिये छुड़ाई "मेरे आश्रितों को" ऐसा वचन सहजानन्द ने वार २ लिखा है सो मिथ्या है

एव विज्ञेयः ॥१०८॥ राधात्वनयाख्यगोपस्य स्त्र्यासीन्नकृष्णस्य ।
कृष्णस्य रुक्मिण्येवस्त्रीपुनस्तस्यलक्ष्मीनारायणसंज्ञैवायोग्येतिवेदित-
व्यम् ॥ १०९ ॥ तत्तन्नामोच्यते सचेति सहजानन्दस्योक्तिरन्य-
थैव । कुतः सर्वज्ञज्ञानमन्तरासहजानन्दस्येदं कथनमयुक्तञ्चातो-
बोध्यम् ॥ ११० ॥ तस्यैव सर्वथाभक्तिः कर्त्तव्या मनुजैर्भुवि ।
निःश्रेयसकरं किञ्चित्ततोऽन्यन्नेति दृश्यताम् ॥ ११२ ॥ कृष्णस्या-
पिकल्याणञ्जातन्नवेतिविदुषांसन्देहः । सचपरमेश्वरस्यैवभक्तिं कृत-
वानुपदिष्टवांश्चपुनस्तस्यैवसर्वैर्मनुष्यैर्भक्तिः कार्या ततोन्यत्कल्याण-
करंकिञ्चिन्नास्त्येवेतिवदन्सहजानन्दोविद्याहीनएवासीत् ॥११२॥
गुणिनां गुणवत्ताया ज्ञेयंह्येतत्परं फलम् । कृष्णे भक्तिश्चतत्सं-
गोऽन्यथा यांति विदोप्यधः ॥ ११४ ॥ गुणिनां गुणवत्तायेत्येवं-
छन्दोविरुद्धाअशुद्धाः श्लोकास्सन्ति बहवः शिक्षापत्र्यामतोविज्ञाय-
तेसहजानन्दस्य छन्दोविज्ञानमपियथावन्नासीदिति ॥ कृष्णेमूर्त्ता
भक्तिरेवाशक्यानिष्फलावेदविरुद्धाचास्ति । विद्वांसस्तुसदैवसद्-
गतिं प्राप्नुवन्तिविद्यायाःप्रकाशस्वरूपत्वात् । किञ्चाविद्वांस एव-
सहजानन्दसदृशाअसद्गतिं गता इति विज्ञायते कुतः अविद्या-
याअधर्माचारणान्धकारवत्त्वात् ॥११४॥ निजात्मानं ब्रह्मरूपंदेहत्र-
यविलक्षणम् । विभाव्यतेनकर्त्तव्या भक्तिःकृष्णस्य सर्वदा ॥१५॥
निजात्माजीवब्रह्मस्वरूपश्चेद्ब्रह्मणातुल्यत्वंतस्मिन्कुतो न दृश्यते ।
तुल्यत्वञ्चचेत्तर्हि ब्रह्मणा सकलञ्जगद्रचितजीवेननवीनञ्जगत्कि-
ञ्चिन्मात्रमपि कुतोनरच्यते । जीवब्रह्मणोरैक्यञ्चेत्तर्हिब्रह्मैवाविद्याज-
न्ममरणहर्षशोकशीतोष्णसुखदुःख ज्वरपीडाबन्धादिदोषयुक्तञ्जा-

क्योंकि जिसको जन्म मरणादि दोष प्राप्त हुए ऐसे अवि-द्वान् जीव का आश्रय निष्फल है, नारायण और शिव दोनों एक ही हैं ऐसा सहजानन्द ने ऊपर कहा है सो मिथ्या है क्योंकि वेद में शिव और नारायण को ब्रह्मरूप माना नहीं ॥

"इसप्रकार करने के बाद राधाकृष्ण की छवि अथवा मूर्ति का प्रेम से दर्शन करके यथाशक्ति उनका मन्त्र जप करना उस के पीछे संसार का व्यवहार चलाना चाहिये" ॥ ५४ ॥

राधाकृष्ण को सहजानन्द ने या दूसरे किसी ने प्रत्यक्ष देखा नहीं फिर उनकी छवि अथवा मूर्त्ति कैसे हो ? यह ऊपर से सिद्ध होता है कि सहजानन्द जो कुछ कहता है वह बिल-कुल असत्य है ॥

"पाषाण अथवा धातु आदि की बनाई हुई मूर्त्ति की यथाशक्ति फल फूल आदि पदार्थों से पूजा करनी और पीछे कृष्ण का अष्टाक्षर मन्त्र जपना" ॥ ५६ ॥

इस श्लोक से सिद्ध होता है कि सहजानन्द की बुद्धि जड़ थी क्योंकि वेदविरुद्ध पाषाणादि मूर्त्तिपूजन का इसने प्रति-पादन किया है, वेदविरुद्ध कृष्ण मन्त्र जपने से सहजानन्द को नास्तिक नाम दिया जा सकता है ॥

"हरि को नैवेद्य दिये पीछे बाकी बची प्रसादी आप खा-नी चाहिये और कृष्ण सेवा में जिस प्रकार वन सके उसी प्रकार तत्पर रहना" ॥ ५८ ॥

तमेवेति स्वीक्रियताम् । जीवाद्ब्रह्मभिन्नञ्चेत्प्रतिज्ञाहानिः कृष्णोऽपिब्रह्मभक्त एवंसर्वैर्जीवैरपिब्रह्मभक्तश्चैव भवितव्यन्नैवान्यस्यकस्यचित्कृष्णादेर्जीवस्यचेति । एवं कृष्णस्य भक्तिः सर्वदा कार्येति सहजानन्देमहतीदोषापत्तिरिति विज्ञातव्यम् ॥ ११५ ॥ मतंविशिष्टाद्वैतंमे गोलोकोधामचेप्सितम् । तत्र ब्रह्मात्मना कृष्णसेवामुक्तिश्चगम्यताम् ॥ १२१ ॥ चक्राङ्कितवत्सहजानन्दस्य मतमस्तीति विज्ञातव्यम् । विशिष्टाद्वैतशब्दस्यैवमर्थः क्रियते अविद्याविशिष्टो जीवोमायया विशिष्टईश्वरः । विशिष्टोनाममिलितः । केचिदेकां मायामीश्वरस्यैव स्वीकुर्वन्ति । एवञ्चतुर्णां त्रयाणां वापदार्थानां वर्तमानत्वादद्वैतमेव दुर्लभम् । द्वितीयेनाविना विशिष्टएव न भवति । विशिष्टश्च विशिष्टश्चविशिष्टौ मायाऽविद्याभ्यांयुक्तौजीवेशौतयोरद्वैतं विशिष्टाद्वैतम् । द्वयोवद्वैतंकदाचिन्नसम्भवति । किन्तु खल्वद्वैतं केवलमेकं ब्रह्मैवास्ति । तद्यथा सजातीयंविजातीयंचद्वितीयंब्रह्मैवनास्त्येवं स्वगतभेदोऽपि ब्रह्मणिनास्त्येव संयोगवियोगाभावात् । अत एवएकमेकरसमद्वितीयं ब्रह्मैवास्तीतिवेदयुक्तिसंमतोऽद्वैतशब्दार्थोवेदितव्यः । एवंसति रामानुजसहजानन्दयोर्मतमशुद्धमेव वेदितव्यम् । गवाम्पशूनांलोकोधाम ममचेति स्वीकारात्सहजानन्दे पशुप्रियत्वमेवसमागच्छतिस्वजातिपरत्वप्रवाहस्य विद्यमानत्वात् । गोलोकएवनिवासस्त्वात्कृष्णसेवाबन्धनत्वाच्च सैवमुक्तिरिति सहजानन्दादिप्रलापोमिथ्यैवेति विज्ञायताम् ॥ १२१ ॥ मयाप्रतिष्ठपितानां मंदिरेषुमहत्सुच । लक्ष्मीनारायणादीनां सेवाकार्या यथाविधि ॥ १३० ॥ सहजानन्देनान्यैर्वा प्रतिष्ठापिताविद्याधर्मविरुद्धेषु मं-

हरि प्रत्यक्ष दीखता नहीं और मूर्त्तियों में भोजन करने की शक्ति नहीं इस कारण से मूर्त्ति को नैवेद्य धरना व्यर्थ है; यह बिलकुल छल कपट है क्योंकि जब ऐसा होता है तभी अपने अंगूठे के दर्शन और टन् टन् पुं पुं करके भोजन करने में थोड़ा श्रम होता है ॥

"अपने आचार्य ने जो कृष्णरूप दिया हो और जिसमें प्राणप्रतिष्ठा करदी होय उस ही की सिर्फ सेवा करनी, और की सेवा नहीं करनी, हर रोज शाम को भगवत् मन्दिर में जाना और वहां राधापति कृष्ण का ऊंची आवाज़ से कीर्त्तन करना" ॥ ६२-६३ ॥

पाषाण आदि मूर्त्तिस्वरूप, जिसकी प्रतिष्ठा होती है वह कृष्णस्वरूप नहीं हो सकता क्योंकि यह तो केवल पत्थर ही है ऐसा पत्थर किसी को भी कभी सेवनीय नहीं, इसीप्रकार उस को नमना भी नहीं, जो सर्वशक्तिमान्, अवतार रहित, न्याय-कारी, दयालु, सर्वान्तर्य्यामी, सर्वव्यापक, निराकार, श्रेष्ठ और परमात्मा है उसकी सब मनुष्यों को पूजा करनी और उसी को नमना चाहिये, शाम को सब मनुष्यों को भगवद् मन्दिर में जाकर पाषाणादि मूर्त्तियों की और जिसका जन्ममरण हुआ ऐसे राधापति कृष्ण नामक मुर्दा की पूजा करनी और उसका ऊंची आवाज़ से कीर्त्तन करना ऐसा जो ऊपर कहा सो सब मिथ्या उपदेश है यह ऊपर से जान पड़ता है कि सहजानन्द

ष्वाधनगतव्ययेषु महत्सु मन्दिरेषु पाषाणादिमूर्त्तयोलक्ष्मीनारायणादयः। कदाचिन्नैव भवन्ति वेदानभिहितानाम्पाषाणादिमूर्त्तीनाञ्जडत्वाल्लक्ष्मीनारायणादीनान्तदानीञ्चेतनत्वापाषाणादिमूर्त्तीनां यथाविधिखण्डनमेव कर्त्तव्यन्नैवच पूजनमिति ॥ १३० ॥ अर्थैतयोस्तुभार्याभ्यामाज्ञयापत्युरात्मनः। कृष्णमंत्रोपदेशश्च कर्त्तव्यः स्त्रीभ्यएव हि ॥ १३२ ॥ सहजानन्देन विदितमुपदेशमन्तरास्त्रीभ्योपि धनलाभएवनभविष्यत्यत एवंकपटम्प्रसारितम्। तदपिपरमात्ममन्त्रोपदेशं विहाय मृतस्यकृष्णस्य मन्त्रोपदेशञ्चोक्तवानतः सहजानन्दोधनलोभ्यज्ञानीचेति विज्ञायते ॥ १३२ ॥ निजवृत्त्युद्यमप्राप्तधनधान्यादितश्च तैः। अर्प्योदशांशः कृष्णाय विंशांशस्त्विहदुर्बलैः ॥ १४७ ॥ परधनहरणार्थं निजसुखार्थञ्च सहजानन्दस्य प्रसिद्धंकापट्यमेव दृश्यते ॥ विनापरिश्रमेण दशांशंविंशांशधनङ्गृहीत्वा पुष्कलंसंसारस्थंविषयभोगंवयंकुर्म इत्यभिप्रायस्तस्यास्तीति निश्चयः। पुनरन्यथा वदतिकृष्णाय समर्प्यमिति। कृष्णस्तु मृतः सदशांशंविंशांशञ्चधनंग्रहीतुंनैवागच्छति कदाचिन्नैतादृशंतस्यदारिद्र्यमासीत्। तस्मात्सहजानन्दस्य महतीधूर्त्तता वेदितव्या यथागोकुलस्थानां वल्लभप्रभृतीनाञ्च। ईदृशानां धूर्त्तानां सम्प्रदायप्रभृत्यार्यावर्त्तदेशस्य महतीहानिर्जाताऽतःसर्वैः सज्जनैरिदानींदृढप्रयत्नेन सद्यइमे सर्वे सम्प्रदाया निवर्तनीया अन्यथास्वदेशस्य भद्रन्नैव भविष्यतीति निश्चेतव्यम् ॥१४७॥ एकादशीमुखानाञ्च व्रतानांनिजशक्तितः। उद्यापनं यथाशास्त्रं कर्तव्यं चिंतितार्थदम् ॥ १४८ ॥ कर्त्तव्यं कारणीयंवा श्रावणेमासि सर्वथ

कुत्ते की तरह भौंका है, वह वेदविद्या बिलकुल नहीं जानता था, असत्य उपदेश से सहजानन्द की सद्गति भी नहीं हुई होगी ऐसा अनुमान किया जासकता है इस मिथ्या उपदेश को जो स्वीकार करता और जो दूसरों को कराता है उसकी सद्गति न तो हुई और न होती है और न होगी भी, जो मनुष्य वेदादि सद्विद्या, पक्षपात रहित न्याय और बैरबुद्धि त्यागादि स्वरूप धर्म का बोध करता है उसको और जो मनुष्य यथावत् ऐसे बोध को स्वीकार करता और न्यायकारी, दयालु, निराकार परमेश्वर की प्रार्थना, उपासना तथा स्तुति बराबर करेगा केवल उसी को सद्गति प्राप्त होगी। इसीप्रकार आगे के श्लोक अशुद्ध हैं ॥

"एकादशी आदि सम्पूर्ण व्रतों को रखना और कृष्ण के जन्म दिवस और शिवरात्रि को बड़ा उत्सव करना चाहिये" ॥७९॥

एकादशी आदि व्रत वेद में कहीं लिखे नहीं किन्तु वेद में तो ब्रह्मचर्य्य, सत्यभाषण आदि व्रत करना लिखा है अतः सिद्ध हुआ कि एकादशी आदि व्रतों को रखना व्यर्थ है ॥

"सम्पूर्ण वैष्णवों के अधिपति जो वल्लभाचार्य उनके पुत्र विट्ठल ने जो २ उत्सव निर्माण किये हैं उन सब उत्सवों को विट्ठल के अनुसार करना चाहिये, जिस प्रकार से विट्ठल ने कृष्ण की सेवा करी है उसी प्रकार ग्रहण करनी, द्वारिका आदि मुख्य यात्रायें शक्तिपूर्वक यथाविधि करनी और कंगाल मनुष्यों पर दया रखनी, मेरे आश्रितों को विष्णु, शिव, गणपति, पार्वती

मेव प्राप्स्यन्तीति निश्चयः ॥ २०६ ॥ नेत्थं य आचरिष्यन्ति तेत्वस्मत्संप्रदायतः । बहिर्भूता इति ज्ञेयं स्त्रीपुंसैः सांप्रदायिकैः ॥ २०७॥ पाषाणादिमूर्त्तिपूजनङ्कण्ठीतिलकादिपाखण्डचिन्हधारणङ्कदाचित्केनचिदपि नैवकर्त्तव्यमितीत्थं वर्त्तन्ते ते धर्मार्थकाममोक्षाणां सिद्धिं प्राप्नुवन्त्येव। ये वेदादिसत्यशास्त्रोक्तं सनातनं सत्यम्पक्षपातरहितं न्याय्यं धर्मं हित्वा शिक्षादिकपोलकल्पितान्पक्षपातपिष्टपेषणदोषवद्दूषितान्सहजानन्दादिरचितान्वेदपठनमार्गविरोधिनोग्रन्थान्येस्वीचक्रुः कुर्वन्ति करिष्यन्ति च तानेव नास्तिकत्वदोषयुक्तान्सत्यधर्मबहिर्भूताञ्छिष्टाविजानीयुरिति सिद्धम् ॥२०७॥ शिक्षापत्र्याः प्रतिदिनं पाठोस्यामदुपाश्रितैः । कर्त्तव्योनक्षरज्ञैस्तु श्रवणं कार्य्यमादरात् ॥ २०९ ॥ वक्रभावेतु पूजैवकार्यास्याः प्रतिवासरम् । मद्रूपमिति मद्वाणी मान्येयंपरमादरात्॥ २०८ ॥ युक्तायसम्पदादैव्या दातव्येयन्तुपत्रिका । असुर्यासम्पदाढ्याय पुंसे देया न कर्हिचित्॥ २१० ॥ वेदानां पठनं श्रवणञ्च विहाय शिक्षापत्र्यादीनां सहजानन्दादिकपोलकल्पितानां ग्रन्थानां पठनश्रवणेव्यर्थैव वेदितव्यम् ॥२०८॥ ईदृशस्यजडस्य व्यर्थपुस्तकस्य पूजाकरणोपदेशोऽयुक्तएव। वाणीजीवस्य रूपमेव न भवति कदाचित्पुनः परमादरान्मान्यातुनकिन्तु परमप्रयत्नात्खण्डनीयाऽशुद्धत्वादिति। एतत्कथनं सहजानन्दस्याज्ञानिनोबालान्भ्रामयित्वा कपटेन धनादिकन्तेभ्योहर्त्तव्यमित्यभिप्रायः॥ २०८ ॥ योदैव्या सम्पदायुक्तोजनास्त्विमांशिक्षापत्रीं कदाचिन्नैवग्रहीष्यति तस्मिन्विद्याप्रकाशस्याविद्यमानत्वात् । यस्त्वविद्याद्यसुरसम्पद्युक्तएतां स्वीकरोति

स्मिन्सम्प्रदायशब्दवाच्यस्य सम्प्रदायाग्रहान्धकारस्य विद्यमानत्वात् । सम्यक्प्रकृष्टतयादग्धज्ञाना भवन्ति यस्मिन् सोयं सम्प्रदाहः । इदानीन्तनास्सम्प्रदाया वेदविरुद्धास्सर्वेसम्प्रदाहशब्दवाच्या एव वेदितव्या इति परामर्शः ॥२१०॥ मरणसमये स्वशिष्याणां हस्तं गृहीत्वा विमानस्योपरि स्थापयित्वा वैकुण्ठं नयति सहजानन्दः परमसुखञ्च ददातीति मिथ्याप्रलापः सहजानन्दशिष्यादिमुखाच्छ्रूयते ससत्योवामिथ्या । मिथ्यैवेति निश्चयः ॥ कथं योमृतः स आगन्तुम्पूर्वदेहकार्यकर्त्तुञ्चनैव समर्थोभवति । यदि समर्थः स्यात्तर्हि तत्सम्प्रदायस्थैश्छलादिव्यवहारेण धनादिपदार्थाः पुष्कलास्स्वाधीनाः कृतास्तद्भोगं कर्तुमप्यवश्यमागच्छेद्भोगार्थञ्च नचैवागच्छति किमतो विज्ञायते छिन्ननासिक सम्प्रदायवदज्ञानि जनमोहार्थं तादृशं कथनंतेकुर्वन्तिनैतत्सज्जनैर्मन्तव्यमिति । स्वशिष्यालोहादिभिश्चक्रादीनाञ्चिन्हानि रचयित्वाग्नौ प्रतप्यबाहू मूलेच सजीवान्देहान्दग्धयन्ति सहजानन्दसम्प्रदायादिस्था अहोमहत्पापमिति वेद्यम् केचित्तु वक्रवृत्तिवत्साधवोजातास्तेस्त्रीदर्शनादिकं नकुर्वन्ति धातुस्पर्शञ्च । तदाचार्योगृहस्थोस्ति च सप्रलोभनाद्यनेकमन्दिरादिमिथ्याव्यवहारैर्धनादिकं हरति ते च साधवोहारयन्ति द्वौविवाहावप्येक कृततवानीदृगन्यथाव्यवहारो यस्मिन्सम्प्रदाये वर्त्तते तस्मिन् सम्प्रदाये कल्याणस्य प्रत्याशाकेनापिनैव कर्त्तव्येति सज्जनैर्वेदितव्यम् । इति सहजानन्दसम्प्रदायस्य दोषदर्शनंदिङ्मात्रमिहवर्णितमधिकञ्चस्वबुद्ध्योहनीयमिति । सर्वात्मासच्चिदानन्दोऽजोनन्तस्सर्वशक्तिमान् । भूयात्तमां सहायो नोन्यायकारीशुचिः प्रभुः ॥ १ ॥ भूमिरामाङ्कचन्द्रेऽब्दे सहस्यस्याऽसिते दले । एकादश्यागर्कवारे ग्रन्थोयम्पूर्त्तिमागमत् ॥ २ ॥

"वेद, व्याससूत्र, भागवत, भारत में कहाहुआ विष्णुसहस्रनाम, भगवद्गीता, विदुरनीति, स्कन्धपुराण और वैष्णवखण्ड में कहा हुआ वासुदेव माहात्म्य और याज्ञवल्क्यस्मृति आदि आठ सत्शास्त्रों का मुझे इष्ट है, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जो अपने कल्याण के इच्छुक और मेरे शिष्य हैं उनको इन शास्त्रों को सुनना और पाठ करना और कराना चाहिये इन आठ शास्त्रों में आचार, व्यवहार और प्रायश्चित्त के निर्णय के लिये याज्ञवल्क्य स्मृति की मिताक्षरा नामक टीका का भी मैं ग्रहण करता हूं, भागवत् के पांचवें और दशमस्कन्ध में कृष्णलीला लिखी है इससे वेदो स्कन्ध अवश्य जानना, भागवत् के दशमस्कन्ध में भक्तिशास्त्र, पांचवे में योगशास्त्र और याज्ञवल्क्यस्मृति में हमारा धर्मशास्त्र वर्णन किया है, शारीरक और भगवद्गीता का भाष्य जो रामानुज आचार्य ने बनाया है वह हमारा अध्यात्मशास्त्र है, इन शास्त्रों के जिन २ वाक्यों में कृष्ण, धर्म, भक्ति और वैराग्य का वर्णन किया होय उन वाक्यों को दूसरे वाक्यों की अपेक्षा श्रेष्ठ मानना और कृष्णभक्ति धर्म के साथ ही रखनी चाहिये" ॥ ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२ ॥

ऊपर के सब श्लोक अशुद्ध हैं, भागवत् आदि पुराण और भारत में विष्णुसहस्रनाम, भगवद्गीता आदि का ही केवल स्वीकार, दूसरे ग्रन्थों का त्याग, याज्ञवल्क्यस्मृति की मिताक्षरा

ओ३म्

स्वामिनारायण मतखण्डन गुजराती का भाषानुवाद ॥

सहजानन्दादि मतों के प्रति प्रश्न और उन मतों का खण्डन ॥

प्रश्न—सहजानन्द नामक पुरुष कौन है ?

उत्तर—सहजानन्द नारायण का अवतार और स्वामिनारायण नामक पन्थ का आचार्य्य है ।

प्रश्न—नारायण कौन है ?

उत्तर—गोलोक और वैकुण्ठ में रहनेवाला चतुर्भुज द्विभुज और लक्ष्मीपति ईश्वर है ।

प्रश्न—वह अब भी (अभी) है कि नहीं ?

उत्तर—ईश्वर नित्य है इससे वह अब भी है,

ऐसा होना अशक्य है, क्योंकि वेद में कहा है कि:—

"ईश्वर सर्वव्यापक, वीर्य्यरूप, शरीर, छिद्र और नाड़ी से रहित शुद्ध और पाप रहित है"

सर्वान्तर्यामी और सर्वव्यापक ईश्वर का जन्म मरण और देहधारण है ही नहीं, जिसका जन्म मरण और शरीर धारण

टीका का ग्रहण, पूर्वमीमांसा तथा मनुस्मृति का त्याग करने से और वासुदेव के माहात्म्य गिनन से सिद्ध होता है कि सहजानन्द अविद्वान् था, सहजानन्द भागवत् के भ्रष्ट, मिथ्या भूत प्रेत अधर्म्म कथा प्रतिपादक दशमस्कन्ध को सर्वशास्त्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ मानता है अतएव जान पड़ता है कि सहजानन्द वेदनिन्दक (नास्तिक) था, दशमस्कन्ध में भक्ति लेशमात्र नहीं है, किन्तु व्यभिचार आदि अधर्म का प्रतिपादन प्रसिद्ध है, पांचवें स्कन्ध में योगशास्त्र का प्रतिपादन तो किया नहीं किन्तु योगाभास (छलभेद) का प्रतिपादन किया है, श्रौतसूत्र और मीमांसा आदि धर्मशास्त्रों का तिरस्कार करने से और दले हुए पदार्थ को फिर से दलने के समान याज्ञवल्क्य स्मृति का स्वीकार करने से ऐसा मालूम पड़ता है कि सहजानन्द वेद का कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड विषय में कुछ नहीं जानता था, शारीरिक सूत्र का रामानुज से किया हुआ अति अशुद्ध भाष्य का प्रमाण मानने से सहजानन्द अविवेकी था यह सिद्ध होता है, श्रीकृष्णने खुद ही वेदवाक्यों को सर्वोत्कृष्ट माना है फिर सहजानन्द ने ऊपर जो दशमस्कन्ध आदि को श्रेष्ठ गिना है सो सहजानन्द को भ्रम हुआ होगा ऐसा जान पड़ता है, वेदवाक्य सर्वोत्तम हैं यह ब्रह्मादि विद्वानों का सिद्धान्त है, परन्तु सहजानन्द भौंकता है कि कृष्ण के वाक्य वेद की अपेक्षा श्रेष्ठ हैं यह सहजानन्द का शरमा के डूब मरना जैसा है ॥

"जिस प्रकार हृदय में जीव रहता है उसी प्रकार ईश्वर अन्तर्यामीपने से जीव में रहता है, वह स्वतन्त्र और सब को उन २ के कर्मों का फलदाता है, वह पूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म श्रीकृष्ण भगवान् उपासना करने योग्य इष्टदेव सर्वपदार्थों के आविर्भाव का कारण (प्रसिद्धकर्ता) है, जब वह राधा के साथ हो तब वह राधाकृष्ण, रुक्मिणी के साथ हो तब लक्ष्मीनारायण, अर्जुन के साथ होय तब नरनारायण और जब बलभद्रादिकों से युक्त होय तब उसको वही नाम देना चाहिये" ॥ १०७, १०८, १०९, ११० ॥

जीववान् कभी ईश्वर बनता नहीं, क्योंकि सर्वशक्ति, सर्वज्ञता, निर्विकार आदि गुणयुक्त स्वभाव ईश्वर का ही है, जन्म, मरण, हर्ष, शोक आदि गुणयुक्त कृष्ण को परब्रह्म भगवान् पूर्ण पुरुषोत्तम आदि नाम देना बिलकुल नहीं सम्भव है, एक सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्दस्वरूप, निर्द्वेषी, निराकार अवताररहित और वेदयुक्ति सिद्ध परमात्मा को छोड़ के जन्ममरण युक्त कृष्ण की उपासना करनी यह जो सहजानन्द ने कहा है इससे मालूम पड़ता है कि सहजानन्द को पदार्थज्ञान बिलकुल नहीं था, राधा तो अनय नामक ग्वाले की स्त्री थी, कृष्ण का उससे कोई सम्बन्ध नहीं था कृष्ण की स्त्री का नाम रुक्मणी था इससे उसको लक्ष्मीनारायण नाम देना अयोग्य है। इसप्रकार कथन कर सहज़ानन्द ने अपनी मूर्खता बतलाई है क्योंकि सर्वज्ञता के विना सहजानन्द का कथन युक्ति रहित दिखाई पड़ता है ॥

"उन्हीं की ही (सिर्फ कृष्ण की ही) सब मनुष्यों को भक्ति करनी चाहिये इनकी भक्ति करते हुए दूसरे सुख का साधन कुछ भी नहीं है" ॥ ११३ ॥

कृष्ण का खुद का ही कल्याण हुआ कि नहीं इस विषय में विद्वानों को संशय उत्पन्न होता है, कृष्ण ने स्वयं ही एक ईश्वर की भक्ति की है और वैसा ही करने का उपदेश किया है। फिर सहजानन्द ने जो ऊपर कहा है कि सब मनुष्यों को केवल कृष्ण की ही भक्ति करनी चाहिये, इनकी भक्ति करते हुए सुख का दूसरा साधन कुछ भी नहीं है। यह कहकर उसने अपनी अविद्या बताई है ॥

"गुणवान् पुरुषों को विद्यादि गुणों का उत्तम फल तो यही है कि कृष्ण की भक्ति और सत्सङ्ग करना, उस को छोड़ के जो कोई दूसरा कुछ करेगा वह विद्वान् होकर भी अधोगति अर्थात् नरक पावेगा" ॥ ११४ ॥

इस श्लोक में छन्दोभङ्ग दोष होने से मालूम पड़ता है कि सहजानन्द को छन्दोज्ञान विषय में कुछ भी समझ नहीं थी, कृष्ण मर गया इसलिये अब उसकी भक्ति करनी अयोग्य और निष्फल है, विद्वान् लोग अपनी विद्या के प्रकाश से सर्वदा सद्गति पाते हैं, किन्तु अविद्या, अधर्माचरण और अज्ञान से सहजानन्द जैसे अविद्वान् पुरुषों को असद्गति प्राप्त होती है ऐसा दीख पड़ता है ॥

"तीन प्रकार के शरीरों से जो विलक्षण जीव उस में ब्रह्मरूप की भावना करके श्रीकृष्ण की ही भक्ति सर्वदा करनी" ॥ ११५ ॥

जो जीव ब्रह्मरूप होय तो ब्रह्म की तुल्यता जीव में क्यों नहीं दीखती ? जो जीव ब्रह्मतुल्य होय तो जिस प्रकार ब्रह्म ने यह सब जगत् रचा इसीप्रकार जीव थोड़ासा ही नवीन जगत् क्योंकर नहीं रचलेता ? जो जीव ब्रह्म एक होय तो अविद्या जन्ममरण, हर्ष, शोक, ठंढीताप, सुख, दुःख, ताव, पीड़ा और बन्ध आदि दोष ब्रह्म में मानने पड़ेंगे, जो जीव से ब्रह्म भिन्न होय तो सहजानन्द का कहना व्यर्थ हुआ, कृष्ण स्वयं ही ब्रह्मभक्त थे इसलिये सब जीवों को एक ब्रह्म की भक्ति करनी और कृष्णादि जीवों की भक्ति करनी ही नहीं चाहिये, एक कृष्ण की ही भक्ति करनी यह जो सहजानन्द ने ऊपर कहा उस से सिद्ध होता है कि इसप्रकार कहने में इसने महान् पाप किया है ॥

"मेरा मत विशिष्टाद्वैत और मेरा प्रिय स्थान गोलोक है वहां ब्रह्मरूप कृष्ण की सेवा करनी यह मेरी मुक्ति जाननी" ॥ १२१ ॥

सहजानन्द का मत चक्रांकित के समान है ऐसा दीख पड़ता है विशिष्टाद्वैत शब्द का अर्थ सब मनुष्य इसप्रकार करते हैं कि:—

अविद्यायुक्त जीव और माया युक्त ईश्वर है, कुछ मनुष्य ईश्वर की माया एक मानते हैं, इस प्रकार तीन चार पदार्थों

से अद्वैत सिद्ध नहीं होता, दूसरे पदार्थ के विना विशिष्ट शब्द बन ही नहीं सक्ता, दो पदार्थ अद्वैत नहीं होसक्ते, किन्तु ब्रह्म तो अवश्य अद्वैत है, सजातीय विजातीय दूसरा ब्रह्म है ही नहीं इसलिये यह भेद ब्रह्म में संयोग के विना सिद्ध नहीं हो सक्ता । वेद और युक्तिसिद्ध एक रस मात्र एक ही ब्रह्म है इस पर से अद्वैत शब्द का अर्थ जानना, अतः दीख पड़ता है कि रामानुज और सहजानन्द के मत भ्रष्ट हैं ॥

गधा आदि पशुओं का लोक मेरा स्थान है इस प्रकार जो सहजानन्द ने कहा सो अपनी जाति के नियम से सहजानन्द खुद ही गधा बनता है, गोलोक में निवास करने से और एक कृष्ण सेवा से ही मुक्ति प्राप्त होती है ऐसा जो सहजानन्द ने बका है सो मिथ्या है ॥

"मैंने बड़े २ मन्दिरों में लक्ष्मीनारायणादिमूर्त्तियों की प्राणप्रातिष्ठा करी है उन की यथाविधि सेवा करनी" ॥१३०॥

सहजानन्द अथवा और कोई भी बिलकुल विद्या धर्मविरुद्ध और द्रव्यनाशक बड़े मन्दिरों में रहने वाली पाषाणादिमूर्त्तियों को लक्ष्मीनारायण का नाम नहीं दे सक्ता क्योंकि वेद में मूर्त्तिविषय में कुछ कहा नहीं इसलिये और मूर्त्ति स्वतः जड़ है इस कारण से तथा लक्ष्मीनारायण आदि सचेतन थे इस हेतु से मूर्त्ति का यथाविधि खण्डन करना चाहिये न कि पूजन करना ॥

"दो अमुक पुरुषों की स्त्रियों को अपने २ पति की आज्ञा लेकर केवल स्त्रियों को ही कृष्णमात्र का उपदेश करना चाहिये" ॥ १३३ ॥

सहजानन्द का माना हुआ उपदेश सिवाय स्त्रियों के धनप्राप्ति कभी होय नहीं अतः स्पष्ट रीति दीख पड़ता है कि सहजानन्द ने एक दम छल कपट फैला दिया है, परब्रह्म का मन्त्र छोड़कर कृष्ण का अर्थात् मुरदा मन्त्र का उपदेश करने से सहजानन्द लोभी और अज्ञानी ठहरता है ॥

"अपने कमाये हुए धन धान्य का दशमाभाग कृष्ण के अर्पण करें और जो मनुष्य दुर्बल होयं वे बीसवां भाग कृष्ण को देवें" ॥ १४७ ॥

पर धन हरने में और अपने को सुख देने में सहजानन्द का छल भेद खुल्लमखुल्ले दीखता है इसप्रकार करने में सहजानन्द का अभिप्राय यह था कि यत् किञ्चित् मेहनत कार्य के बिना ही दसवां, बीसवां भाग लेकर अपने संसार का विषय सुख खूब भोगेंगे, ऊपर कहा है कि कृष्ण को अपर्ण करना तो कृष्ण खुद तो दशवां अथवा बीसवां भाग लेने को आही नहीं सक्ता और कृष्ण कुछ ऐसा दरिद्री नहीं था अतः सिद्ध होता है कि सहजानन्द ने गोकुल के वल्लभसम्प्रदायवालों की तरह खूब धूर्त्तता चलाई है। ऐसे २ धूर्त सम्प्रदायों के फैल जाने से अपने आर्य्यावर्त्त देश को बहुत हानि उठानी पड़ी इसलिये सब सज्जनों को श्रम उठाकर इन सम्प्रदायों को जड़

मूल से उखाड़ डालना चाहिये जो कभी उखाड़ डालने में न आवे तो अपने देश का कल्याण कभी होने का ही नहीं ॥

"एकादशी आदि व्रतों का अथाशक्ति और शास्त्र प्रमाण से उद्यापन करना, उद्यापन मन की इच्छा को पूर्ण करता है, श्रावण मास में बिल्व आदि के पत्रों से महादेव की पूजा करें करावें" ॥ १४८, १४९ ॥

इस से भी सहजानन्द की धूर्त्तता दीखती है जो कभी एकादशी आदि व्रतों को नहीं करें तो शिष्यों से उद्यापन विना धनलाभ नहीं होय, श्रावण महीने में महादेव पूजन अर्थात् पाषाण आदि मूर्त्तिपूजा विना अपने को शिष्यों से धन, प्रतिष्ठा मिलेगी नहीं ऐसे २ विचारों से सहजानन्द ने अपना कपट दिखाया है ॥

"देवकी मूर्त्ति के सिवाय लिखी हुई अथवा लकड़ी आदि की स्त्रियों की मूर्त्तियों का कभी स्पर्श न करें और उन की तरफ बुद्धिपूर्वक दृष्टि से देखें भी नहीं" ॥ १७७ ॥

प्रथम तो सहजानन्द ने अपने मन्दिर में राधा की मूर्त्ति की स्थापना क्यों करी ? और जिन की बाईं तरफ राधा है इत्यादि वाक्यों का सहजानन्द ने किसलिये मनुष्यों को उपदेश किया ? सहजानन्द के शिष्य बुद्धिपूर्वक राधा का दर्शन किसलिये करते हैं इसप्रकार के प्रमत्त गीत और बकवाद से सहजानन्द पर अनेक प्रकार के दोष लगते हैं ॥

"सब इन्द्रियें को जीत लेना उनमें से विशेष करके रस इन्द्रिय को जीतनी किसी को द्रव्य का संग्रह करना नहीं, उसीप्रकार किसी को करने भी नहीं देना, किसी की स्थापना करनी नहीं, धैर्य का त्याग करना नहीं और अपनी रहने की जगह में परस्त्री को आने देना नहीं चाहिये" १८९ ॥

सिर्फ साधु ही जितेन्द्रिय होवे ऐसा जो तुम उपदेश देते हो तो तुम क्या असाधु हो तुम्हारे विचार से क्या गृहस्थ जितेन्द्रिय न होवें ? ऊपर कहा कि किसी को स्थापन न करें तो क्या विद्या, धर्म, ईश्वर, प्रार्थना, स्तुति और उपासना का स्थापन नहीं करना चाहिये ? वेद, धर्म, युक्तिविरुद्ध सम्प्रदायों का स्थापन किसलिये करना चाहिये और सहजानन्द ने इसप्रकार के सम्प्रदायों का किसलिये स्थापन किया ? सब मनुष्यों को इसप्रकार के पाखण्डों का खण्डन और सत्यधर्म का मण्डन अवश्य करना चाहिये ॥

"इसप्रकार सब मनुष्यों का धर्म संक्षेप से लिखा है और इन धर्म्मों का विस्तारपूर्वक वर्णन सम्प्रदाय के ग्रन्थों में से समझ लेना मैंने सब सत्यशास्त्रों का सार निकाल के मनुष्य को इष्ट फल की देने वाली यह शिक्षापत्री लिखी है" ॥२०३-२०४॥

धर्म का तो लेश मात्र प्रतिपादन किया नहीं किन्तु अपनी कपोल कल्पना से अपनी भ्रान्ति का प्रकाश किया दीखता है, वेदादि शास्त्रों में जो यथावत् धर्म्म लिखा है उस का ज्ञान सहजानन्द को बिलकुल नहीं था, लिखे हुए धर्म का फिर से लिखना व्यर्थ है क्योंकि ऐसा करने से दले हुए को दलने के समान है. मनुष्यमात्र का सनातन साम्प्रदायक ग्रन्थ वह वेद ही है और शिक्षापत्री आदि ग्रन्थ सब मिथ्या हैं "विस्तर"

शब्द व्याकरण नियम से अशुद्ध है "विस्तर की जगह विस्तार" शब्द लिखना चाहिये; कथन, श्रवण आदि अर्थों में ही विस्तार प्रयोग होता है सहजानन्द को सत्यशास्त्र का बोध तो था ही नहीं तथा इस ने कुछ अध्ययन भी नहीं किया था क्योंकि इस ने वेद और युक्ति विरुद्ध पाषाण आदि मूर्त्तिपूजन कण्ठी तिलक धारण आदि भ्रष्ट कर्मों का प्रतिपादन किया है, शिक्षापत्री में सार की जगह असार वर्णन किया है, शिक्षापत्री लोभ विषय में तो इष्ट फलदायक है परन्तु शिक्षापत्री का पाठ करने से सर्वदा सुख प्राप्ति होती है यह अनुभव रहित बात है; सहजानन्द के ऐसे २ बचनों से सहजानन्द लोभी ठहरता है, लोभ के विना सम्प्रदाय की वृद्धि होती नहीं और वृद्धि न होय तो प्रतिष्ठा और धन प्राप्ति भी न होय और जो उस की प्राप्ति न होय तो इष्ट विषय सुख नहीं मिले अतः समझना कि सहजानन्द की बुद्धि कपटरूप थी ॥

" जो पुरुष अथवा स्त्री इस शिक्षापत्री में कहे धर्मपूर्वक वर्ताव करेंगे उन को अवश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त होंगे" ॥

जो मनुष्य पाषाण आदि मूर्त्तिपूजन आदि पाखण्डों का आचरण करेगा उस को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष तो प्राप्त नहीं होगा बल्कि अधर्म, अनर्थ, दुष्टइच्छा, बन्ध, नरक आदि दोष अवश्य प्राप्त होंगे ॥

"शिक्षापत्री के अनुकूल जो मनुष्य आचरण नहीं करें वे अपने सम्प्रदाय से बाहर हैं इसप्रकार मेरे साम्प्रदायक स्त्री पुरुषों को समझना चाहिये ॥

पाषाण आदि मूर्त्तिपूजन, कण्ठी तिलक आदि पाखण्डरूप

चिन्ह कभी कोई न करें और जो पुरुष इन चिन्हों को नहीं करें सिर्फ उन्हीं पुरुषों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होगी ॥

वेदादि सत्यशास्त्रोक्त सनातन, सत्य, पक्षपातरहित, न्याय-धर्म का त्याग करके सहजानन्द आदिकों के बनाये हुए शिक्षा की पत्री आदि भ्रष्ट और वेद, युक्तिविरुद्ध ग्रन्थों का जिन मनुष्यों ने स्वीकार किया, करते हैं और करेंगे श्रेष्ठ पुरुष उन सब को सद्धर्म्मरहित और नास्तिक नाम देवें ॥

"मेरे आश्रित पुरुष शिक्षापत्री का हररोज़ पाठ करें और जो विद्याहीन हों वे प्रीति से उस का श्रवण करें और जो श्रवण करना भी न बने तो इस शिक्षापत्री की अत्यन्त प्रीति से पूजा करें और इस को मेरी वाणी तथा मेरा रूप जानें इस पत्री को दैवी मार्गी पुरुष को देवें किन्तु किसी असुर को न देवें" ॥

वेद का पढ़ना सुनना छोड़ कर सहजानन्द आदि के बनाये हुए शिक्षापत्री आदि कपोलकल्पित पुस्तकों को पढ़ने और सुनने से अधिक पाप लगता है ॥

इस जड़, व्यर्थ पुस्तक की पूजा करने का उपदेश देने में अयोग्यता मालूम पड़ती है, वाणी कभी जीवरूप बनती नहीं; परम प्रीति से शिक्षापत्री का सत्कार करें ऐसा जो सहजानन्द ने कहा सो सत्कार करने के बदले परम प्रयत्न से इस अशुद्ध पत्रिका का खण्डन करें, इसप्रकार कथन में सहजानन्द का मूल मतलब अज्ञानी और बालकों को भ्रमा कर उन से धनादि पदार्थों का छीन लेना है, जो दैवी मार्गी होगा वह तो शिक्षा-पत्री को हाथ में पकड़ेगा भी नहीं, जो मनुष्य विद्यारहित असुर सम्प्रदाय का स्वीकार करता है उन मनुष्यों के सम्प्रदाय को

सम्प्रदाह नाम देना चाहिये क्योंकि सम्प्रदाय अन्धकाररूप है, जिस में विद्या और विज्ञान का सत्यानाश हो जाय उस का नाम सम्प्रदाह पड़ता है, वर्त्तमान में जितने विरुद्ध सम्प्रदाय हैं उन सब को सम्प्रदाह नाम देना चाहिये ॥

प्रश्न—मरण समय में सहजानन्द अपने शिष्यों का हाथ पकड़ विमान पर चढ़ा के वैकुण्ठ ले जाता है और परम सुख देता है इत्यादि गपोड़ा सहजानन्द के शिष्यों के द्वारा सुना जाता है वह सत्य है कि मिथ्या ?

उत्तर—बिलकुल मिथ्या दीखता है, क्योंकि जो पुरुष मर गया वह फिर से आकर प्रथम शरीर धारण कर ही नहीं सक्ता, जो कभी वैसा करने में समर्थ होय तो सम्प्रदाय वालों ने छल कपट से जो पुष्कल द्रव्य इकट्ठा किया है उस को भोगने के लिये भी अवश्य आना चाहिये, अतः समझना चाहिये कि सहजानन्द आदि धूर्त्त अज्ञानी मनुष्यों को मोह में डालने के अर्थ ऐसे २ कथन करते हैं ॥

अपने शिष्यों के हाथ पर लोह का खण्ड दाग कर चक्र आदि चिन्हों के करने से सहजानन्द के सम्प्रदाय वालों को अत्यन्त पाप लगेगा जो बगुलाभगत हैं वे स्त्री दर्शन और धातुस्पर्श नहीं करते, गृहस्थ आचार्य लोभ के हेतु से मन्दिर बांध कपट से द्रव्य आदि पदार्थों को छीन लेते हैं दो २ विवाह करना आदि धर्म जिस सम्प्रदाय में होते हों उस में कल्याण की आशा किसी सज्जन पुरुष को कभी नहीं रखनी चाहिये ॥

समाप्त ॥